

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186705

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—557—13-7-71—3,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY.

Call No.

H294.554
S11-

Accession No.

P.G.
H2939

Author

Title

शब्द संग्रह प्रभाग 1960.

This book should be returned on or before the date last marked below.

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द-संग्रह

प्रथम भाग

— प्रकाशक —

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग (आगरा)

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. U.

राधास्वामी संवत् १४०

सन् १९६० ई०

(*All Rights Reserved*)

P. G.

First Edition 1938

1000

Second Edition 1960

1000

**PRINTED BY BABU RAM JADOUN, M.A.
AT THE DAYALBAGH PRESS, DAYALBAGH, AGRA**

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द - संग्रह

सूचीपत्र

१—मंगलाचरण व विनती	...	१ पृष्ठ से	७ पृष्ठ तक
२—चितावनी	...	८ "	३१ "
३—राधास्वामी दयाल का संदेश और राधास्वामी मत का भेद व महिमा	...	३२ "	८० "
४—नाम का निर्णय व राधास्वामी नाम की महिमा	...	८० "	८६ "
५—सतगुरु व सतगुरुभक्ति की महिमा	...	८६ "	२२६ "
६—राधास्वामी दयाल के सतगुरु-स्वरूप की खोज व बिरह का वर्णन	...	२२७ "	२३४ "
७—परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी दयाल व उनके सतगुरु-स्वरूप की महिमा और उनके दर्शन व सतसंग की प्राप्ति के आनंद व बिलास का वर्णन	...	२३५ "	२६६ "

शब्द-संग्रह

००००००००

सूचीपत्र

(अकारादि क्रम से)

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		करो जुगत प्यारी घर के चलन	२३
अरी हे पड़ोसिन प्यारी, कोई	२३०	करो री कोइ सतसँग आज बनाय	८
अरी हे सहेली प्यारी, गुरु की	१६०	काल ने जगत अजब भरमाया	१०४
" " " " गुरु सँग	१८८	कोइ करो गुरु का सतसँग	१५३
" " " " जुड़ मिल	१८७	कोइ दिन का है जग में रहना	३०
" " " " प्रेम की	१८६	कोइ सुनो हिये में गुरु संदेश	१५४
" " " " यह जग	१६१	कोई भागे सुरत तज यह संसार	२६
अरे मन रँग जा सतगुरु प्रीत	१३५	कोमल चित्त दया मन धारो	१३६
आ		कौन करे आरत सतगुरु की	२६१
आज गरज गरज घन गरजे	२३३	क्या सोवे जग में नींद भरी उठ	१६
आज गावो गुरु गुन उमँग	२७६	ख	
आज गुरु आये जग तारन अहा	२८०	खोज री पिया को निज घट में	१७
आज घड़ी अति पावन भावन	२६०	खोजी जन सरस मन सुन सुन	२६४
आज चलो बिदेसन अपने देस	२५	खोजी सुनो सत्त की बात	१४४
आज तजो सुरत निज मन का	१५०	ग	
आज पकड़ो गुरु के चरन	१५७	गगन में बाजत आज बधाई	२६६
आज बधावा राधास्वामी गाऊँ	२५३	गुरु कहें पुकार पुकार समझ	१२५
आज मेघा रिमझिभ बरसे हिये	२३२	गुरु की कर हर दम पूजा	१२६
आज मेरे धूम भई है भारी	२५४	गुरु के दरस पर मैं बलिहारी	२५६
आज सखि काज करो कुछ	१३८	गुरु क्यों न सँभार तेरा नर तन	१४१
आज सतगुरु की सरन भाग	२७६	गुरु चरन धूर कर अंजन	१४४
आज हुआ मन मगन मोर सुन	२६२	गुरु चरन पकड़ हड़ भाई	१२८
आवो गुरु दरबार री मेरी प्यारी	१५६	गुरु धरा सीस पर हाथ मन	२०२
क		गुरु ध्यान धरो तुम मन में	१२७
करूँ बेनती दोउ कर जोरी	४	गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार	२८३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
गुरु प्यारे का कर दीदारा घट	१७४	चल देखिए सतसंग में जहाँ	१६६
गुरु प्यारे का धार भरोसा करें	१७२	चलो आज गुरु दरबारा जहाँ	१६७
गुरु प्यारे का संग कर जग से	१६३	चलो घर प्यारे, क्यों जग में	३०
गुरु प्यारे का संग बड़भागी	१७०	चलो री सखी मिल आरत	३२
गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री	१६२	चलो सतगुरु घाट सखी री	२००
गुरु प्यारे की कर परतीती होय	१७१	चहुँ दिस धूम मची सतगुरु	७०
गुरु प्यारे की जुगत कमाओ	१७३	चेतो मेरे प्यारे, तेरे भले की	१०८
गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत	१५८	ज	
गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात	१५८	जक्त भाव भय लज्जा छोड़ो	११८
गुरु प्यारे की प्रीति प्यारी हिरदे	१५७	जगत में भूल भरम भारी	५६
गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ	२८३	जग में घोर अंधेरा भारी	१०
गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस	१६६	जब देखा तेज मैंने जो मालिक	८८
गुरु प्यारे की मौज रहो तुम	१६६	जाग री उठ खेल सुहागिन	२५६
गुरु प्यारे की सरन सँभारो धर	१७८	जाग री मेरी प्यारी सुरतिया	१५५
गुरु प्यारे की सेवा धारो तज	१७७	जीव चिताय रहे राधास्वामी	२५७
गुरु प्यारे के चरणों की हो जा	१६०	द	
गुरु प्यारे के संग आनंद भारी	१७१	दया के सिंध सतगुरु जीवन	२६४
गुरु प्यारे के संग चलो हे मन	१६६	दया गुरु क्या करूँ बरनन	२८२
गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान	१६४	दरस गुरु भाग से मिलिया	२८१
गुरु प्यारे सिखावें भक्ती रीत	१६५	दरस पाय मन बिगस रहा	२६१
गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय	१६७	दर्द दुखी जियरा नित तरसे तन	२२८
गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़	१६१	दुलहनी करो पिया का संग	१८
गुरु प्यारे से प्यारी लगन लगाय	१६२	देखो री कोइ सुरत रंगीली	१४६
गुरु प्यारे से प्रीति लगाना मन	१७५	देखो सब जग जात बहा	१३
गुरु प्यारे से मिलना उमंग उमंग	१६०	देव री सखी मोहि उमंग बधाई	२५१
गुरु प्यारे से होली खेलो आय	१६६	ध	
गुरु मता अनोखा दरसा	३७	धार नर देह किया क्या आय	२६
गुरु सरन आज मैं पाई	११३	धोखा मत खाना जन आय	१२०
गुरु का ध्यान कर प्यारे	१११	न	
गुरु की मौज रहो तुम धार	१३६	नाम निर्णय करूँ भाई दुधा बिधि	८०
गुरु गुरु मैं हिरदे धरती	८६	नाम रस चखा गुरु संग सार	८४
च		निज घर अपने चाल री मेरी	२८
चल देखिए गुरु द्वारे जहाँ प्रेम	२०१	निज रूप का जो तू प्रेमी है कर	१४८

शब्द	पृष्ठ
प	
परम गुरु राधास्वामी प्यारे जगत ७२	
परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी ३	
परम पुरुष प्यारे राधास्वामी धर ७१	
परम पुरुष राधास्वामी गुरु भारी २७५	
पिया बिन कैसे जिऊँ मैं प्यारी २२७	
प्यारी ज़रा कर बिचार यहाँ १६५	
प्रेमी जइयो रे सतसंग में लीजो २१२	
प्रेमी जन बिकल मन गुरु दरशन २६३	
प्रेमी जागो रे तुम अब ही मोह २१५	
प्रेमी भागो रे जगत से या सँग २१३	
प्रेमी मानो रे बचन को रहियो २१४	
प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से २१२	
प्रेमी रहियो रे हुशियार माया २१५	
प्रेमी सुनो प्रेम की बात १४१	
ब	
बार बार कर जोर कर, सविनय ७	
बार बार करूँ बीनती राधास्वामी ५	
बिन सतगुरु की भक्ति जन्म २२५	
बिन सतगुरु दीदार तड़प रही २२६	
बिरहन सुत तजत भोग गुरु २६२	
भ	
भक्त का पंथ निराला है २२४	
भक्ति महातम सुन मेरे भाई ११६	
म	
मन तू कर ले हिये धर प्यार ८६	
मन तू सुन ले चित दे आज ८७	
मन रे चल गुरु के पास घर का २२३	
मनुआँ क्यों सोचे नहिँ जग में १६३	
मित्र तेरा कोई नहीं सँगियन में ११	
मिली नरदेह यह तुम को १४	
मेरी प्यारी सहेली हो क्यों जनम २२२	
मेरे धूम भई अति भारी दरस २५८	

शब्द	पृष्ठ
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों २१६	
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु २१६	
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु सत-२२१	
मेरे प्यारे बहन और भाई जग २२०	
मेरे प्यारे बहन और भाई या २१८	
मेरे हिये में बजत बधाई २८७	
मैं पाया दरस गुरु का २६६	
मोहि मिला सुहाग गुरु का २६५	
य	
यह जग बीता जाय री २२	
यह तन दुर्लभ तुमने पाया ६७	
यहाँ तुम समझ सोच कर चलना १६	
र	
राधास्वामी आय प्रगट हुए जब २३५	
राधास्वामी दीनदयाला मेरे सद २८६	
राधास्वामी धरा नर रूप जगत २६२	
राधास्वामी नाम जो गावे सोई १	
राधास्वामी परम पुरुष दातारे २७७	
राधास्वामी मत मैं धारा नीका ६६	
राधास्वामी लिया अपनाय सखी २४१	
राधास्वामी संग लगाई २६०	
राधास्वामी सत मत जिसने धारा ५३	
स	
संत किया सतसंग जगत में २६४	
संत बचन हिरदे में धरना २०४	
संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ४८	
सखी री क्या भाग सराहे री २७२	
सखी री क्या महिमा गाऊँ री २७४	
सखी री मेरे दिन प्रति आनंद २६६	
सखी री मेरे प्यारे का कर २६८	
सखी री मेरे भाग बड़े मुझे २६७	
सखी री मेरे मन बिच अचरज २१	
सखी री मेरे राधास्वामी परम २७१	

शब्द	पृष्ठ
सतगुरु आय दिया जग हेला	२०
सतगुरु कहें करो तुम सोई	१३३
सतगुरु का नाम पुकारो	१३१
सतगुरु खोजो री प्यारी जगत	१२१
सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे	१४७
सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई	१८५
सतगुरु प्यारे ने जगाया अचरज	१८३
सतगुरु प्यारे ने दया कर मोहि	१७६
सतगुरु प्यारे ने बसाई उजड़ी	१८६
सतगुरु प्यारे ने मेहर से दिया	२८५
सतगुरु प्यारे ने मेहर से मेरा	१८०
सतगुरु प्यारे ने लगाई बिरह	१८२
सतगुरु प्यारे ने सिखाई भक्ती	१८४

शब्द	पृष्ठ
सतगुरु प्यारे ने सुनाई जुगत	२८६
समगुरु सरन गहो मेरे प्यारे	१४५
सतसंग महिमा सुन कर आया	६३
सरन गुरु धार री धर दृढ़ पर०	१६२
सुख समूह अंतर घट छाया	४०
सुनो चित्त दे प्रेम प्रीति से मारग	७३
सुरत तू कौन कुमति उरझानी	६
सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी	२७
सुरत सिरोमन हेला लाई	४३
सुरतिथा कहत सुनाय सुनाय	२४
सुरतिया बाँह गही सतगुरु की	२७८
सुरतिया समझ गई अब	६७
सोता मन कस जागे भाई	१२३

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द-संग्रह

भाग—१

१—शब्द १

॥ दोहा ॥

राधास्वामी नाम, जो गावे^१ सोई तरे ।
कलकलेश^२ सब नाश, सुख पावे सब दुख हरे ॥ १ ॥
ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई ।
जो जाने सो पार, बहुरि न जग में जन्मई ॥ २ ॥
राधास्वामी गाय कर, जनम सुफल करले ।
यही नाम निज नाम^३ है, मन अपने धरले ॥ ३ ॥
बैठक स्वामी अद्भुती^४, राधा^५ निरखनिहार^६ ।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ॥ ४ ॥
गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम ।
बिना मेहर नहिं पावई, जहाँ कोई बिसराम ॥ ५ ॥

॥ मंगलाचरण ॥

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे ।

जिन परताप जीव बहु जागे ॥ १ ॥

१—प्रेम सहित उच्चारण करे । २—काल के क्लेश । ३—मालिक का असली नाम या सार शब्द । ४—अचरजी । ५—आदि सुरत । ६—निरखने वाली ।

बारम्बार करूँ परनाम ।
 सतगुरु पदम^१ धाम सतनाम ॥ २ ॥
 आदि अनादि जुगादि अनाम ।
 संत स्वरूप छोड़ निज धाम ॥ ३ ॥
 आये भौजल नाव लगाई ।
 हम से जीवन लिया चढ़ाई ॥ ४ ॥
 शब्द दृढ़ाया सुरत बताई ।
 कर्म भर्म से लिया बचाई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

कोट कोट^२ करूँ बंदना, अरब खरब दंडौत ।
 राधास्वामी मिल गये, खुला भक्ति का सोत^३ ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति सुनाई सब से न्यारी ।
 बेद कतेब^४ न ताहि बिचारी ॥ ७ ॥
 सत्तपुरुष चौथे पद बासा ।
 संतन का वहाँ सदा बिलासा ॥ ८ ॥
 सो घर दरसाया गुरु पूरे ।
 बीन बजे जहाँ अचरज तूरे^५ ॥ ९ ॥
 आगे अलख पुरुष दरबारा ।
 देखा जाय सुरत से सारा ॥ १० ॥

१—पद्म यानी निर्मल चेतन देश (पिंड के स्थानों को चक्र, ब्रह्मांड के स्थानों को कमल और निर्मल चेतन देश के स्थानों को पद्म कहते हैं) ।

२—करोड़ों । ३—स्रोत यानी भंडार । ४—कुरआन, अंजील आदि । ५—शब्द ।

तिस पर अगम लोक इक न्यारा ।
 संत सुरत कोइ करत बिहारा ॥११॥
 तहाँ से दरसे अटल^१ अटारी ।
 अद्भुत राधास्वामी महल सँवारी ॥१२॥
 सुरत हुई अति कर मगनानी ।
 पुरुष अनामी जाय समानी ॥१३॥

२—शब्द २

॥ मंगलाचरण ॥

परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी नाम ।
 तिनके चरन पदम पर कोट कोट परनाम ॥ १ ॥
 जग जीवन को अति दुखी देख दया उमगाय ।
 संत रूप औतार धर जग में प्रगटे आय ॥ २ ॥
 कुल मालिक दातार कृपासिंध गुरु रूप धर ।
 सुरत शब्द मत गाय भेद दिया निज अधर घर ॥ ३ ॥
 बड़भागी वे जीव चरन सरन जिन दृढ़ करी ।
 कर्म भर्म को छोड़ प्रीति प्रतीति हिरदे धरी ॥ ४ ॥
 उमँग सहित गुरु सेव सतसँग कर तिरपत^२ भए ।
 तन मन भेंट चढ़ाय प्रेमदान गुरु से लिए ॥ ५ ॥
 गुरुमूरत हिरदे बसी देखैं नित्त बिलास ।
 जगत बासना जार कर पावें चरन निवास ॥ ६ ॥

प्रेम सहित नित गावई राधास्वामी नाम ।
 सुरत डोर चरनन लगी बिसर गए सब काम ॥ ७ ॥
 गुरु आरत कर मगन होय छिन छिन प्रीति बढ़ाय ।
 मन को मोड़ा जगत से सूरत शब्द लगाय ॥ ८ ॥
 राधास्वामी दयाल दया करी सबको लिया अपनाय ।
 शब्द जहाज चढ़ाय कर दीना पार लगाय ॥ ९ ॥
 भौजल गहिर गँभीर है खेवट^१ सतगुरु पूर ।
 राधास्वामी चरनन ध्यान धर पहुँचे निज घर सूर । १० ।
 बार बार बिनती करूँ बँदगी करूँ अनन्त ।
 छिन छिन जाउँ बलिहारियाँ राधास्वामी पूरे संत । ११ ।

१—शब्द ३

॥ बिनती ॥

करूँ बेनती दोउ कर जोरी ।
 अर्ज सुनो राधास्वामी मोरी ॥ १ ॥
 सत्तपुरुष तुम सतगुरु दाता ।
 सब जीवन के पितु और माता ॥ २ ॥
 दया धार अपना कर लीजे ।
 काल जाल से न्यारा कीजे ॥ ३ ॥
 सतजुग त्रेता द्वापर बीता ।
 काहू न जानी शब्द की रीता^२ ॥ ४ ॥

कलजुग में स्वामी दया बिचारी ।
 परघट करके शब्द पुकारी ॥ ५ ॥
 जीव काज स्वामी जग में आये ।
 भौसागर से पार लगाये ॥ ६ ॥
 तीन^१ छोड़ चौथा पद^२ दीन्हा ।
 सत्तनाम सतगुरु गति चीन्हा ॥ ७ ॥
 जगमग जोति होत उजियारा ।
 गगन सोत^३ पर चन्द्र निहारा ॥ ८ ॥
 सेत सिंघासन छत्र बिराजै ।
 अनहद शब्द गैब^४ धुन गाजै ॥ ९ ॥
 क्षर^५ अक्षर^६ निहअक्षर^७ पारा ।
 बिनती करै जहाँ दास तुम्हारा ॥ १० ॥
 लोक अलोक पाऊँ सुख धामा ।
 चरन सरन दीजे बिसरामा ॥ ११ ॥

२—शब्द ४

॥ बिनती ॥

बार बार करूँ बीनती राधास्वामी आगे ।
 दया करो दाता मेरे चित चरनन लागे ॥ १ ॥
 जन्म जन्म रही भूल में नहिं पाया भेदा ।
 काल करम के जाल में रही भोगत खेदा ॥ २ ॥

१—तीन लोक । २—सत्तलोक । ३—गगन का स्रोत यानी दसवाँ द्वार ।
 ४—गुप्त । ५—त्रिकुटी । ६—सुन्न । ७—महासुन्न ।

जगत जीव भरमत फिरैं नित चारों खानी^१ ।
 ज्ञानी जोगी पिल रहे सब मन की घानी ॥ ३ ॥
 भाग जगा मेरा आदि का मिले सतगुरु आई ।
 राधास्वामी धाम का मोहि भेद जनाई ॥ ४ ॥
 ऊँच से ऊँचा देश है वह अधर ठिकानी ।
 बिना संत पावे नहीं सुत शब्द निशानी ॥ ५ ॥
 राधास्वामी नाम की मोहि महिमा सुनाई ।
 बिरह अनुराग जगाय के घर पहुँचूँ भाई ॥ ६ ॥
 साध संग कर सार रस मैंने पिया अधाई ।
 प्रेम लगा गुरु चरन में मन शान्ति न आई ॥ ७ ॥
 तड़प उठे बेकल रहूँ कस पिया घर जाई ।
 दर्शन रस नित नित लहूँ गहे मन थिरताई^२ ॥ ८ ॥
 सुरत चढ़े आकाश में करे शब्द बिलासा ।
 धाम धाम निरखत चले पावे निज घर बासा ॥ ९ ॥
 यह आसा मेरे मन बसे रहे चित्त उदासा ।
 बिनय सुनो किरपा करो दीजे चरन निवासा ॥ १० ॥
 तुम बिन कोई समरथ नहीं जासे माँगूँ दाना ।
 प्रेम धार बरषा करो खोलो अमृत खाना ॥ ११ ॥
 दीन दयाल दया करो मेरे समरथ स्वामी ।
 शुकर करूँ गावत रहूँ नित राधास्वामी ॥ १२ ॥

१—पृथ्वी पर जीव अंडे, फिल्ली, पसीने व मिट्टी से उत्पन्न होते हैं ।
 इन्हीं चारों पदार्थों को चार खान यानी उत्पत्ति-स्थान कहते हैं । २—स्थिरता ।

३—शब्द ५

॥ बिनती ॥

॥ दोहा ॥

बार बार कर जोर कर, सविनय करूँ पुकार ।
साधसंग मोहि देव नित, परम गुरू दातार ॥ १ ॥
कृपासिंधु समरथ पुरुष, आदि अनादि अपार ।
राधास्वामी परम पितु, मैं तुम सदा अधार ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

बार बार बलि जाउँ, तन मन वारूँ चरन पर ।
क्या मुख ले मैं गाउँ, मेहर करी जस कृपा कर । ३ ।
धन्य धन्य गुरुदेव, दयासिन्धु पूरन धनी ।
नित करूँ तुम सेव, अचल भक्ति मोहि देव प्रभु । ४ ।
दीन अधीन अनाथ, हाथ गहा तुम आन कर ।
अब राखो नित साथ, दीनदयाल कृपानिधि ॥ ५ ॥
काम क्रोध मद लोभ, सब बिधि अवगुनहार मैं ।
प्रभुराखो मेरि लाज, तुम द्वारे अब मैं पड़ा ॥ ६ ॥
राधास्वामी गुरु समरथ, तुम बिन और न दूसरा ।
अब करो दया परतत्न^१, तुम दर एती^२ बिलंब^३ क्यों । ७ ॥

॥ दोहा ॥

दया करो मेरे साइयाँ, देव प्रेम की दात ।
दुख सुख कछु व्यापे नहीं, छूटे सब उत्पात ॥ ८ ॥

॥ चितावनी ॥

१—शब्द ६

करो री कोइ सतसँग आज बनाय ॥ टेक ॥

नर देही तुम दुर्लभ पाई ।

अस औसर फिर मिले न आय ॥ १ ॥

तिरिया^१ सुत धन धाम बड़ाई ।

यह सुख फिर दुख मूल दिखाय ॥ २ ॥

या से बचो गहो गुरु सरना ।

सतसँग में तुम बैठो जाय ॥ ३ ॥

यह सब खेल रैन का सुपना ।

मैं तुमको अब दिया जगाय ॥ ४ ॥

भूठी काया भूठी माया ।

भूठा मन जो रहा लुभाय ॥ ५ ॥

सतसँग सच्चा सतगुरु सच्चा ।

नाम सचाई क्या कहूँ गाय ॥ ६ ॥

मान बचन मेरा तू सजनी ।

जन्म मरन तेरा छुट जाय ॥ ७ ॥

नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो^२ ।

राधास्वामी कहत बुझाय ॥ ८ ॥

१—शब्द ७

सुरत तू कौन कुमति उरभानी^१ ॥ टेक ॥

मन के साथ फिरे भरमानी ।

गुरु की सुने न बानी ॥ १ ॥

कनक^२ कामिनी लागी प्यारी ।

रैन दिवस इन सँग लिपटानी ॥ २ ॥

मोह-जाल यह काल बिछाया ।

दाना डाला जीव फँसानी ॥ ३ ॥

तू अनजान पड़ी लालच में ।

बहुत होय तेरी हानी ॥ ४ ॥

मैं समझाय कहूँ अब तोसे ।

गुरु बिन कौन बचानी ॥ ५ ॥

गुरु से प्रीति करो जग जारो ।

तन मन दशा भुलानी ॥ ६ ॥

नाम रसायन^३ गुरु से पावो ।

छूटे सब हैरानी ॥ ७ ॥

फिर तू चढ़े गगन के नाके^४ ।

तन से होय अलगानी ॥ ८ ॥

जम की घात बचा ले प्यारी ।

राधास्वामी कहत बखानी ॥ ९ ॥

१—फँसी । २—सोना अर्थात् धन सम्पत्ति । ३—बहु दवा जिसके सेवन से सारे शारीरिक रोग, दुर्बलता व बुढ़ापा इत्यादि दूर हो जाते हैं । ४—द्वार पर ।

१-शब्द ८

जग में घोर अँधेरा भारी ।
 तन में तम का भंडारा ॥ १ ॥
 स्वप्न जाग्रत दोनों देखी ।
 भूल भुलइयाँ धर मारा ॥ २ ॥
 जीव अजान भया परदेसी ।
 देस बिसर गया निज सारा ॥ ३ ॥
 फिरे भटकता खान खान में ।
 जोनि जोनि बिच भख मारा ॥ ४ ॥
 दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे ।
 सुने कौन अब बहु हारा ॥ ५ ॥
 करे पुकार कारगर^१ नहीं ।
 पड़े नर्क में जम धारा ॥ ६ ॥
 भटक भटक नरदेही पाई ।
 इन्द्री मन मिल यहाँ मारा ॥ ७ ॥
 सतगुरु संत कहें बहुतेरा ।
 राह बतावें दस द्वारा ॥ ८ ॥
 बचन न माने कहन न पकड़े ।
 फिर फिर भरमे नौ वारा^२ ॥ ९ ॥
 फोकट^३ धर्म पकड़ कर जूझे ।
 बूझे न शब्द जुगत पारा ॥ १० ॥

पानी मथे हाथ कुछ नहीं ।
 चीर^१ मथन आलस भारा ॥११॥
 जीव अभाग कहूँ मैं क्या क्या ।
 बाहर भरमे भौजारा ॥१२॥
 अन्तरमुख जो शब्द कमाई ।
 ता में मन को नहिं गारा^२ ॥१३॥
 वेद शास्त्र स्मृति और पुराना ।
 पढ़ पढ़ सब पंडित हारा ॥१४॥
 बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त ।
 कोइ न उतरे भौ पारा ॥१५॥
 यही बात भाषी मैं चुनकर ।
 अब तो मानो गुरु प्यारा ॥१६॥
 राधास्वामी कहा बुझाई ।
 सुरत चढ़ाओ नभ द्वारा ॥१७॥

१-शब्द ६

मित्र तेरा कोई नहीं सँगियन में ।
 पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में ॥ १ ॥
 चेत कर प्रीति करो सतसँग में ।
 गुरु फिर रँग दें नाम अरँग^३ में ॥ २ ॥

धन सम्पत्ति तेरे काम न आवे ।
 छोड़ चलो यह छिन में ॥ ३ ॥
 आगे रैन अंधेरी भारी ।
 काज करो कुछ दिन में ॥ ४ ॥
 यह देही फिर हाथ न आवे ।
 फिरो चौरासी बन में ॥ ५ ॥
 गुरु सेवा कर गुरु रिभाओ ।
 आओ तुम इस ढँग में ॥ ६ ॥
 गुरु बिन तेरा और न कोई ।
 धार बचन यह मन में ॥ ७ ॥
 जक्क-जाल में फँसो न भाई ।
 निसदिन रहो भजन में ॥ ८ ॥
 साध गुरु का कहना मानो ।
 रहो उदास^१ जगत में ॥ ९ ॥
 छल बल छोड़ो और चतुराई ।
 क्यों तुम पड़ो कुगति^२ में ॥ १० ॥
 सुमिरन करो गुरु को सेवो ।
 चल रहो आज गगन में ॥ ११ ॥
 कल की खबर काल फिर लेगा ।
 वहाँ तुम जलो अग्नि में ॥ १२ ॥

अब ही समझ देर मत करियो ।

ना जानूँ क्या होय इस पन^१ में ॥१३॥

यों समझाय कहें राधास्वामी ।

मानो एक बचन में ॥१४॥

१—शब्द १०

देखो सब जग जात बहा ॥ टेक ॥

देख देख मैं गति^२ या जग की ।

बार बार यों बर्ण^३ कहा ॥ १ ॥

चारों जुग चौरासी भोगी ।

अति दुख पाया नर्क रहा ॥ २ ॥

जन्म जन्म दुख पावत बीते ।

इक छिन कहीं न चैन लहा^४ ॥ ३ ॥

पाप पुन्य बस बिपता^५ भोगी ।

नहिं सतगुरु का चरन गहा ॥ ४ ॥

अब यह देह मिली किरपा से ।

करो भक्ति जो कर्म दहा^६ ॥ ५ ॥

अब की चूक^७ माफ़ नहिं होगी ।

नाना विधि के कष्ट सहा ॥ ६ ॥

गफलत छोड़ भुलाओ जग को ।

नाम अमल^८ अब घोट^९ पिया ॥ ७ ॥

१—अवस्था । २—हालत । ३—पाया । ४—मुसीबत । ५—जलें । ६—भूल ।
७—नशा, अभ्यास । ८—रगड़ कर ।

मन से डरो करो गुरु सेवा ।
राधास्वामी भेद दिया ॥ ८ ॥

१-शब्द ११

मिली नरदेह यह तुमको ।
बनाओ काज कुछ अपना ॥ १ ॥
पचो^१ मत आय इस जग में ।
जानियो रैन का सुपना ॥ २ ॥
देह और ग्रेह^२ सब भूठा ।
भर्म में काहे को खपना ॥ ३ ॥
जीव सब लोभ में भूले ।
काल से कोइ नहीं बचना ॥ ४ ॥
तृष्णा^३ अग्नि जग जारा ।
पड़ा सब जीव को तपना ॥ ५ ॥
नहीं कोइ राह बचने की ।
जलें सब नर्क की अग्निना ॥ ६ ॥
जलेंगे आग में निसदिन ।
बहुरि भोगें जनम मरना ॥ ७ ॥
भटकते वे फिरें खानी ।
नहीं कुछ ठीक^४ उन लगना ॥ ८ ॥

कहूँ क्या दुख वह भोगें ।
 कहन में आ नहीं सकना ॥ ६ ॥
 दया कर संत और सतगुरु ।
 बतावें नाम का जपना ॥ १० ॥
 न माने जुक्ति यह उनकी ।
 सुरत और शब्द का गहना^१ ॥ ११ ॥
 बिना सतगुरु बिना करनी^२ ।
 छुटे नहिं खान का फिरना ॥ १२ ॥
 कहाँ लग मैं कहूँ उनको ।
 कोई नहिं मानता कहना ॥ १३ ॥
 हुए मनमुख फिरें दुख में ।
 बचन गुरु का नहीं माना ॥ १४ ॥
 पुजावें आप को जग में ।
 गुरु की सेव नहिं करना ॥ १५ ॥
 फ़िकर नहिं जीव का अपने ।
 पड़ेगा नर्क में फुँकना^३ ॥ १६ ॥
 समझ कर धार लो मन में ।
 कहें राधास्वामी निज बचना ॥ १७ ॥

१—शब्द १२

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना ॥ टेक ॥

यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी ।

मन के साथ न पड़ना ॥ १ ॥

भोजल धार बहे अति गहरी ।

बिन गुरु कैसे पार उतरना ॥ २ ॥

गुरु से प्रीति करो तुम ऐसी ।

जस कामी कामिन संग धरना ॥ ३ ॥

संग करो चटक^१ चित राखो ।

मन से गुरु के चरन पकड़ना ॥ ४ ॥

छल बल कपट छोड़कर बरतो ।

गुरु के बचन समझना ॥ ५ ॥

डरते रहो काल के भय से ।

खबर नहीं कब मरना ॥ ६ ॥

स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे^२ ।

पल पल नाम सुमिरना ॥ ७ ॥

यहाँ की गफलत बहुत सतावे ।

फिर आगे कुछ नहीं बन पड़ना ॥ ८ ॥

जो कुछ बने सो अभी बनाओ ।

फिर का कुछ न भरोसा धरना ॥ ९ ॥

जग सुख की कुछ चाह न राखो ।
 दुख में इसके दुखी न रहना ॥१०॥
 दुख की घड़ी गनीमत^१ जानो ।
 नाम गुरु का छिन छिन भजना ॥११॥
 सुख में शाफल^२ रहत सदा नर ।
 मन तरंग में दम दम बहना ॥१२॥
 ताते चेत करो सतसंगत ।
 दुख सुख नदियाँ पार उतरना ॥१३॥
 अपना रूप लखो घट भीतर ।
 फिर आगे को सूरत भरना^३ ॥१४॥
 राधास्वामी कहें बुझाई ।
 शब्द गुरु से जाकर मिलना ॥१५॥

१—शब्द १३

खोज री पिया को निज घट में ॥ टेक ॥
 जो तुम पिया से मिलना चाहो ।
 तो भटको मत जग में ॥ १ ॥
 तीरथ बर्त कर्म आचारा^४ ।
 यह अटकावें मग^५ में ॥ २ ॥
 जब लग सतगुरु मिलें न पूरे ।
 पड़े रहोगे अध^६ में ॥ ३ ॥

१—संतोष की बात । २—भूला हुआ । ३—प्रविष्ट करना । ४—व्यवहार ।
 ५—मार्ग, रास्ता । ६—पाप ।

नाम सुधारस^१ कभी न पाओ ।
 भरमो जोनी खग^२ में ॥ ४ ॥
 पंडित क्राजी भेष शेख सब ।
 अटक रहे डग डग में^३ ॥ ५ ॥
 इनके संग पिया नहिं मिलना ।
 पिया मिलै कोइ साध समग^४ में ॥ ६ ॥
 यह तो भूले बिषय बास^५ में ।
 भर्म धसे इनकी रग रग में ॥ ७ ॥
 बिना संत कोइ भेद न पावे ।
 वे तोहि कहें अलग में^६ ॥ ८ ॥
 जब लग संत मिलें नहिं तुझको ।
 खाय ठगौरी^७ तू इन ठग में ॥ ९ ॥
 राधास्वामी सरन गहो तो ।
 रलो^८ जोति जगमग में ॥ १० ॥

१—शब्द १४

दुलहनी करो पिया का संग ॥ टेक ॥
 दुलहा तेरा गगन बसेरा^१ ।
 तू बसे नइहर^२ अंग ॥ १ ॥

१—अमृतरस । २—पत्नी की योनि यानी काक की योनि । ३—पग पग पर । ४—संग । ५—विषय-वासना । ६—एकान्त में । ७—धोखा । ८—मिलो । ९—बसने वाला । १०—माँ-बाप का घर (पिंड देश) ।

गुरु के साथ चलो उस नगरी ।
 चढ़े प्रेम का रंग ॥ २ ॥
 यह जोवन तेरा उतर जायगा ।
 फिर तू होगी तंग ॥ ३ ॥
 ताते अभी सँभारो मग^१ को ।
 धारो ढंग उमंग ॥ ४ ॥
 नाम रँगीला दुलहा तेरा ।
 उड़ो गगन जस चंग^२ ॥ ५ ॥
 सूरत डोर बाँध दे गुरु से ।
 त्यागो सभी उचंग ॥ ६ ॥
 पिया के द्वार तेरे नौबत^३ भड़ती ।
 बिच बिच बजे मुँहचंग^४ ॥ ७ ॥
 राधास्वामी पता बताया ।
 चढ़ चल पकड़ तरंग ॥ ८ ॥

२—शब्द १५

क्या सोवे जग में नींद भरी ।
 उठ जागो जल्दी भोर^१ भई ॥ १ ॥
 पंथी^२ सब उठ के राह लई ।
 तू मंजिल अपनी बिसर गई ॥ २ ॥

१—मार्ग । २—पतंग । ३—नक़्करी व नक्क़ारा । ४—एक किस्म का बाजा । ५—प्रातःकाल । ६—मुसाफ़िर ।

सतगुरु का खोज करो प्यारी ।
 सँग उनके बाट^१ चलो न्यारी^२ ॥ ३ ॥
 भौसागर है गहिरा भारी ।
 गुरु बिन को जाय सके पारी ॥ ४ ॥
 भक्ती की रीति सुनो प्यारी ।
 गुरु चरनन प्रीति करो सारी ॥ ५ ॥
 तज संशय भ्रम करम जारी ।
 तब सुरत अधर घर पग धारी ॥ ६ ॥
 चढ़ गगन सिखर^३ तन मन वारी ।
 धुन बीन सुनी सत पद न्यारी ॥ ७ ॥
 फिर अलख अगम जा परसा^४ री ।
 राधास्वामी चरन पर बलिहारी ॥ ८ ॥

२—शब्द १६

सतगुरु आय दिया जग हेला^१ ।
 जागो रे मेरे प्यारे जागो ॥ १ ॥
 काल शिकारी मग में ठढ़ा ।
 भागो रे मेरे प्यारे भागो ॥ २ ॥
 गुरु सरूप तेरे घट में बसता ।
 भाँको रे मेरे प्यारे भाँको ॥ ३ ॥

१—मार्ग । २—अद्भुत । ३—गगन की चोटी, सुन्न । ४—स्पर्श किया
 अर्थात् पहुँची । ५—दिया हेला—जोर से पुकार कर कहा ।

मान मनी^१ तज गुरु चरनन में ।
 लागो रे मेरे प्यारे लागो ॥ ४ ॥
 जगत भाव भोगन की आसा ।
 त्यागो रे मेरे प्यारे त्यागो ॥ ५ ॥
 नैन कँवल गुरु डगर^२ पिया की ।
 ताको रे मेरे प्यारे ताको ॥ ६ ॥
 दृढ़ परतीत भरोस पिया का ।
 राखो रे मेरे प्यारे राखो ॥ ७ ॥
 राधास्वामी राधास्वामी छिन छिन हिये से ।
 भाखो रे मेरे प्यारे भाखो ॥ ८ ॥

२—शब्द १७

सखी री मेरे मन बिच अचरज होय ।
 अचरज अचरज अचरज होय ॥ १ ॥
 साँचा मारग सुरत शब्द का ।
 सो नहिं माने कोय ॥ २ ॥
 समरथ सतगुरु दीनदयाला ।
 राधास्वामी प्रगटे सोय ॥ ३ ॥
 प्रीति प्रतीति चरन नहिं धारें ।
 भरम रहे सब लोय^३ ॥ ४ ॥

जनम मरन चौरासी फेरा ।
 भुगत रहे सब कोय ॥ ५ ॥
 करम भरम सँग हुए बावरे^१ ।
 जनम अकारथ^२ खोय ॥ ६ ॥
 राधास्वामी चरन धार हिये अंतर ।
 तब तेरा कारज होय ॥ ७ ॥

२—शब्द १८

यह जग बीता जाय री ।
 सोचो समझो सयानी ॥ १ ॥
 दिना चार का खेल यह ।
 क्या मान गुमानी ॥ २ ॥
 बड़े बड़े यहाँ हो गये ।
 नहिं नाम निशानी ॥ ३ ॥
 यह माया सँग ना चले ।
 क्या भूल भुलानी ॥ ४ ॥
 जल्दी से अब चेत कर ।
 गुरु खोज सुजानी ॥ ५ ॥
 जगत भोग की आस तज ।
 सतसंग समानी ॥ ६ ॥

शब्द भेद ले प्रीति से ।
 धुन माँहि लगानी ॥ ७ ॥
 बिना शब्द उद्धार नहिं ।
 यह निश्चय जानी ॥ ८ ॥
 चरन सरन गुरु दृढ़ करो ।
 तो लगे ठिकानी ॥ ९ ॥
 राधास्वामी नाम भज ।
 तेरी होय न हानी ॥ १० ॥

२-शब्द १६

करो जुगत प्यारी घर के चलन की ॥ टेक ॥
 जगत भाव तज शब्द सँभालो ।
 यह मारग है स्वामी मिलन की ॥ १ ॥
 जोड़ दृष्टि और मोड़ सुरत को ।
 यही जुगत मन माया दलन की ॥ २ ॥
 जो तन मन धन कामिन राते^१ ।
 सो लई^२ मति चौरासी चलन की ॥ ३ ॥
 कहाँ तक भटको भूल भर्म में ।
 जतन करो भौसागर तरन की ॥ ४ ॥
 चरन तको और बचन सँभालो ।
 धार धारना स्वामी सरन की ॥ ५ ॥

प्रेम जगाऊँ उमँग बढ़ाऊँ ।
 आरति धारूँ जिय प्यारे सजन की ॥ ६ ॥
 नित गुन गाऊँ भाग सराहूँ ।
 मैं हुई दासी राधास्वामी चरन की ॥ ७ ॥

२-शब्द २०

सुरतिया कहत सुनाय सुनाय ।
 चरन गुरु गहो सँभार सँभार ॥ १ ॥
 क्यों माया सँग भूले भाई ।
 क्यों निज घर को दिया बिसार ॥ २ ॥
 यह शफलत फिर बहुत सतावे ।
 जल्दी करो होव हुशियार ॥ ३ ॥
 खोजो सतगुरु अधर ठिकानी ।
 उनके चरन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
 प्रीति भाव से करो सतसंगत ।
 बचन सुनो हिये उमँग सँभार ॥ ५ ॥
 भेद पाय तुम धरो धियाना ।
 निरखो घट में एक गुलज़ार ॥ ६ ॥
 शब्द गुरु सँग आरत करना ।
 घट में अद्भुत दरस निहार ॥ ७ ॥
 गुरु का बल ले चढ़ो अधर में ।
 सुन और महासुन्न के पार ॥ ८ ॥

मुरली बीन बजावत चाली ।
 पहुँची अलख अगम दरबार ॥ ६ ॥
 राधास्वामी दरस निहारत ।
 चरन सरन गह बैठी हार ॥ १० ॥
 ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाई ।
 राधास्वामी कीन्ही दया अपार ॥ ११ ॥
 प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन ।
 सहज लिया मोहि अधम उबार ॥ १२ ॥

२—शब्द २१

आज चलो बिदेसन^१ अपने देस
 (पिया के देस) ॥ टेक ॥
 या जग में पूरा सुख नाहीं ।
 फिर फिर भोगो करम कलेश ॥ १ ॥
 चलो चलो नित काल पुकारे ।
 एक दिन तजना यह परदेस ॥ २ ॥
 धन संपत्ति कुछ संग न जावे ।
 छिन में छूटें यहाँ के ऐश^२ ॥ ३ ॥
 याते सोचो समझो प्यारी ।
 अब ही सँभालो^३ अपनी बैस^४ ॥ ४ ॥

१—परदेश में रहने वाली अर्थात् सुरत । २—भोग बिलास । ३—नष्ट या
 बरबाद होने से बचाओ । ४—उम्र, आयु ।

सतगुरु खोज बाँध जुग^१ उनसे ।
 मन से त्यागो माया लेस^२ ॥ ५ ॥
 प्रीति प्रतीति धार हिये अंतर ।
 सुरत शब्द गह पहुँचो शेष^३ ॥ ६ ॥
 वहाँ से सतपुर चलो अधर चढ़ ।
 सुरत धरे जहाँ हंसा भेस ॥ ७ ॥
 राधास्वामी धाम गई अब निज घर ।
 पाया परमानंद हमेश^४ ॥ ८ ॥
 अमर हुई दुख सुख सब छूटे ।
 नित्त बिलास करे और ऐश ॥ ९ ॥

२—शब्द २२

कोई भागे सुरत तज यह संसार ॥ टेक ॥
 या जग में पूरन सुख नाहीं ।
 खोज करो तुम निज घर बार ॥ १ ॥
 निज घर है ब्रह्मांड के पार ।
 तीन लोक में काल पसार ॥ २ ॥
 माया संग दुखी रहें सब जिव ।
 कोई न जावे भौ के पार ॥ ३ ॥
 सच्चा सुख है संत के देसा ।
 याते चलो संत की लार^५ ॥ ४ ॥

१—जोड़ा । २—संसर्ग, संबंध । ३—अनन्त पुरुष । ४—हमेशा के लिए ।
 ५—साथ, पीछे ।

सतगुरु कर उन सेवा करना ।

प्रीति प्रतीति चरन में धार ॥ ५ ॥

वे दयाल तोहि भेद बतावें ।

सुरत शब्द का मारग सार ॥ ६ ॥

प्रीति सहित जब करो कमाई ।

तब जावो भौसागर पार ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन सरन दृढ़ कर ले ।

पावो उनकी मेहर अपार ॥ ८ ॥

२—शब्द २३

सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी^१ ॥ टेक ॥

यह तो देस तुम्हारा नहीं ।

भोगन संग यहाँ भटकी ॥ १ ॥

मन इंद्री का संग तियागो ।

सुरत करो अब सुन तट^२ की ॥ २ ॥

गुरु दयाल से ले उपदेशा ।

धुन सँग सुरत रहे लटकी^३ ॥ ३ ॥

भाँको चढ़ कर गगन अटारी ।

करमन की फूटे मटकी^४ ॥ ४ ॥

गुरु पद परस मगन होय चित में ।

वहाँ से सुरत अधर सटकी^५ ॥ ५ ॥

१—फँस रही है । २—सुन तट—सुन्न स्थान । ३—लगी हुई । ४—घड़ा । ५—गई ।

गुरु दयाल बिन कौन करावे ।
 यह करनी अब निज घट की ॥ ६ ॥
 काल करम से खूँट^१ छुड़ाया ।
 माया ममता दई पटकी^२ ॥ ७ ॥
 राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई ।
 खबर जनाई मोहि धुर पट की ॥ ८ ॥

२-शब्द २४

निज घर अपने चाल री ।
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥
 माया फैली जग में भारी ।
 जित^३ जावे तित^४ काल री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥
 काल कर्म बहु फंद लगाये ।
 चहुँ दिस फैला जाल री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥
 निकसन^५ चाहो तो अब ही निकसो ।
 चलो गुरु के नाल^६ री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

१-संबंध । २-मार गिराई । ३-जिस तरफ । ४-उस ही तरफ ।
 ५-निकलना । ६-साथ ।

कोई मीत नहीं है तेरा ।
 तजो मोह धन माल री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥
 प्रीति प्रतीति धरो गुरु चरनन ।
 वे काटें दुख साल^१ री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥
 सुरत शब्द मारग ले चालो ।
 राधास्वामी नाम हिये पाल^२ री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

२—शब्द २५

धार नर देह किया क्या आय ॥ टेक ॥
 सत करतार का मरम न चीन्हा ।
 मन माया सँग रहा लिपटाय ॥ १ ॥
 धन और मान भोग आधीना ।
 कुटुम्ब संग नित प्यार बढ़ाय ॥ २ ॥
 दुरलभ औसर बाद^३ गँवावत ।
 जीव काज की सुध नहिं लाय ॥ ३ ॥
 भूल भरम तज चेत पियारे ।
 सतसँग करो नित तुम आय ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह^१ अब की ।

जस तस अपना काज बनाय ॥ ५ ॥

२—शब्द २६

चलो घर प्यारे,

क्यों जग में नित फँसइयाँ हो ॥ टेक ॥

देह संग नित दुख सुख सहते ।

मन इंद्री भोगन में बहते ॥

सतगुरु दया धार अब कहते ।

चेतो तुम गहो सरन गुसइयाँ^२ हो ॥ १ ॥

सतगुरु घर का भेद बतावें ।

शब्द संग मन सुरत चढ़ावें ॥

काल करम से खूँट छुड़ावें ।

उन सँग पार चलइयाँ हो ॥ २ ॥

अधर धाम सतगुरु का डेरा ।

पहुँचे वहाँ जिन धुन घट हेरा^३ ॥

सतगुरु दया सुरत ले घेरा ।

प्यारे राधास्वामी चरन समइयाँ हो ॥ ३ ॥

२—शब्द २७

कोइ दिन का है जग में रहना सखी ।

ले सुध बुध घर की ओर चलो ॥ टेक ॥

यहाँ दूत दिखावें जोर घना^१ ।
 और इंद्री नाच नचावें मना^२ ॥
 इन सबको दीजे बेग^३ हटा ।
 कुल काल करम का आज दलो^४ ॥ १ ॥
 सतगुरु का खोज करो भाई ।
 उन चरनन प्रीति धरो आई ॥
 प्रेमी जन से मेल मिलाई ।
 सतसंगत में उमँग रलो^५ ॥ २ ॥
 गुरु देवें घर का भेद बता ।
 सुत शब्द का दें उपदेश सचा ॥
 तब घट में अपने धूम मचा ।
 गुरु शब्द से चढ़ कर जाय मिलो ॥ ३ ॥
 फिर वहाँ से अधर चढ़ो प्यारी ।
 धुन मुरली बीन सुनो सारी ॥
 मन माया काल रहे वारी^६ ।
 सतगुरु की गोद में जाय पलो ॥ ४ ॥
 सतपुर से भी फिर अधर चलो ।
 घर अलख अगम के पार बसो ॥
 लख अचरज लीला मगन रहो ।
 राधास्वामी चरन में जाय घुलो^७ ॥ ५ ॥

१—बहुत ज्यादा । २—मन । ३—शीघ्र । ४—नाश करो । ५—मिलो ।
 ६—इसी तरफ । ७—रत्न मिल जाओ ।

राधास्वामी दयाल का संदेश और राधास्वामी मत का भेद व महिमा

२—शब्द २८

चलो री सखी मिल^१ आरत गावें ।
 ऋतु बसन्त आये पुरुष पुराने ॥ १ ॥
 अलख अगम का भेद सुनावें ।
 राधास्वामी नाम धरावें ॥ २ ॥
 सुरत शब्द की रेल चलावें ।
 जीव चढ़ाय अगमपुर धावें ॥ ३ ॥
 सतसँग धारा नितही बहावें ।
 राधास्वामी छिन छिन गावें ॥ ४ ॥
 उमँग उमँग हिया भेंट चढ़ावें ।
 काल जाल दुख दूर बहावें ॥ ५ ॥
 ऐसे समरथ पुरुष अपारा ।
 दृष्टि जोड़ रहूँ दर्श अधारा ॥ ६ ॥
 पल पल खटकत^२ बिरह करारी^३ ।
 जस हूलत^४ कोइ सेल^५ कटारी ॥ ७ ॥
 बिन देखे दीदार^६ न मानूँ ।
 जग संसार सभी विष^७ जानूँ ॥ ८ ॥

१—जुड़मिल कर । २—कसकती है । ३—तेज । ४—छेदता है । ५—बरछी ।
 ६—दर्शन । ७—जहर के समान ।

अमृतकुण्ड रूप^१ राधास्वामी ।

अचऊँ^२ छिन छिन तब मन मानी^३ ॥ ६ ॥

बिन राधास्वामी मोहि कछु न सुहावे ।

चार लोक मेरे काम न आवे ॥१०॥

ज्ञान ध्यान और जोग बैरागा ।

तुच्छ समझ मैंने इनको त्यागा ॥११॥

मैं तो चकोर चंद राधास्वामी ।

नहिं भावे सतनाम अनामी ॥१२॥

बिन जल मछली चैन न पावे ।

कँवल बिना अलि^४ क्यों ठहरावे ॥१३॥

स्वाँति बिना जैसे पपिहा^५ तरसे ।

सुत बियोग माता नहिं सरसे^६ ॥१४॥

अस अस हाल भया अब मेरा ।

कासे बरनूँ कोई न हेरा^७ ॥१५॥

दान देयँ तो दें राधास्वामी ।

और न कोइ ऐसा अन्तरजामी ॥१६॥

ऐसी भक्ति होय एकरंगी^८ ।

काटे बंधन मन बहुरंगी^९ ॥१७॥

१—अमृतकुण्ड के समान । २—पीऊँ । ३—शान्त हो । ४—भौंरा । ५—चातक पक्षी । ६—उमँगती है । ७—परखता । ८—एक सार, अनन्य । ९—अनेक प्रकार के रूप धारण करने वाला ।

राधास्वामी राधास्वामी नित गुन गाऊँ ।
 चरन सरन पर हिया उमगाऊँ ॥१८॥
 कहाँ लग बरनूँ मेहर अपारा ।
 दिन दिन होवत मौज निरारा^१ ॥१९॥
 जगत जीव कहा^२ समझें लीला ।
 देख देख हंसन चित सीला^३ ॥२०॥
 अब के दाव पड़ा मोरा सजनी ।
 जब आयो राधास्वामी की सरनी ॥२१॥
 खुल गये भक्ति प्रेम भंडारा ।
 कोटिन जीव का होय उधारा ॥२२॥
 चहुँ दिस धूम पड़ी अब भारी ।
 कालनगर^४ मानो देहैं उजाड़ी ॥२३॥
 स्वामी दयाल मौज ऐसी धारी ।
 दीन होय तिस लेहैं उवारी ॥२४॥
 मैं किंकर^५ उन चरनन दासा ।
 सब जीवन को देऊँ दिलासा^६ ॥२५॥
 बाँधि^७ सुरत चरनन में राखो ।
 अगम अपार अमीरस चाखो ॥२६॥
 हंस सभा कहा बरनूँ शोभा ।
 होवत जहाँ शब्दन की बरषा ॥२७॥

१ - अनोखी । २ - क्या । ३ - चित्त शान्त हुआ । ४ - काल का देश, त्रिलोकी । ५ - तुच्छ सेवक । ६ - ढाढ़स । ७ - समेट करके ।

चमकत बिजली गर्ज अकाशा ।
 और कहा कहूँ अजब तमाशा ॥२८॥
 बंकनाल के नाले छूटे ।
 सुखमन^१ नदियाँ भरम पुल टूटे ॥२९॥
 त्रिकुटी घाट बैठ मल धोई ।
 मानसरोवर दुरमति खोई ॥३०॥
 हंसरूप होय सुरत समानी ।
 शब्द अगम धुन अन्तर जानी ॥३१॥
 महासुन्न के ऊपर गाजी^२ ।
 राधास्वामी हो गये राजी^३ ॥३२॥
 भँवरगुफा की खिड़की^४ खोली ।
 सत्तपुरुष की सुन लई बोली ॥३३॥
 हंस सभी अगवानी धाये ।
 अलख लोक से लेवन^५ आये ॥३४॥
 सुरत सिरोमनि^६ पहुँची धाई ।
 अलख पुरुष का दर्शन पाई ॥३५॥
 नाना विधि जहाँ बजत बधाई ।
 हंस सभी मिल आरत लाई ॥३६॥
 अगम लोक जाय झंडा गाड़ा ।
 अगम पुरुष का भेद उघाड़ा^७ ॥३७॥

१—सुषुम्ना । २—गरजी । ३—प्रसन्न । ४—द्वार । ५—लेने को । ६—
 शिरोमणि, सब से उत्तम । ७—खोला, प्रकट किया ।

वहाँ का मरम न कोई आखा^१ ।

बिरले सन्त गुप्त कर भाखा ॥३८॥

जीव दया अब अतिकर^२ आई ।

राधास्वामी खुलकर गाई ॥३९॥

मानो रे मानो जीव अभागी ।

राधास्वामी करिहैं सभागी^३ ॥४०॥

धाओ दौड़ो पकड़ो चरना ।

जैसे बने तैसे आओ सरना ॥४१॥

फिर औसर^४ नहिं पाओ रे ऐसा ।

अब कारज करो जैसा रे तैसा ॥४२॥

छोड़ो कर्म भर्म पाखंडा ।

सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मंडा ॥४३॥

जब होवे हिये सुरत अखंडा^५ ।

पहुँचे सत्तलोक सचखंडा ॥४४॥

वहाँ से अलख लोक को धावे ।

अगम लोक में जाय समावे ॥४५॥

अगम पुरुष का दरशन करई ।

अद्भुत रूप सुरत जब धरई ॥४६॥

हंसा पाँति जोड़^६ जहाँ बैठे ।

भुंड भुंड जहाँ रहें इकट्ठे ॥४७॥

१—वर्णन किया । २—अत्यन्त, बहुत ही । ३—भाग्यशाली । ४—अवसर, मौका । ५—एकरस हो यानी तार जुड़ जाय । ६—कतार बाँध कर ।

अरबन खरबन भान^१ उजारा ।
 कहा कहूँ शोभा भूमि अपारा ॥४८॥
 कँवलन क्यारी चहुँ दिस लागी ।
 भालर मोती भुम भुम आगी^२ ॥४९॥
 राग रंग धुन अति भनकारा ।
 अमीसरोवर भरे हैं अपारा ॥५०॥
 हीरे लाल रतन की धरती ।
 चाँद सुरज की चादर तनती ॥५१॥
 जहाँ राधास्वामी का तस्त^३ बिराजे ।
 हंस मंडली अद्भुत राजे ॥५२॥
 धूम धाम नित होत सवाई^४ ।
 आनँद मंगल दिन प्रति^५ गाई ॥५३॥
 ऐसा देश रचा राधास्वामी ।
 निज भक्तन को करें बिसरामी ॥५४॥

१—शब्द २६

गुरुमता अनोखा दरसा ।
 मन सुरत शब्द जाय परसा ॥ १ ॥
 लीला घट देखी भारी ।
 हुई सुरत गगन पनिहारी ॥ २ ॥

१—भानु यानी सूर्य । २—आगे भूमती है । ३—सिंहासन । ४—ज्यादा ।
 ५—प्रतिदिन ।

अमृतरस भर भर पीया ।
 तन मन सब सीतल हूआ ॥ ३ ॥
 चोरी अब चोरन^१ त्यागी ।
 घर उनके अगनी लागी ॥ ४ ॥
 साहू^२ अब घट में जागे ।
 पहरा दे शब्द अनुरागे ॥ ५ ॥
 गुन गावत मन हुलसाया ।
 धुन धावत अधर चढ़ाया ॥ ६ ॥
 जगमग हुई जोति उजियारी ।
 घट खिल गई कँवल कियारी ॥ ७ ॥
 सुन्दर^३ की खिड़की खोली ।
 सुखमन में धुन नित बोली ॥ ८ ॥
 चढ़ी बंक किवाड़ी खोली ।
 त्रिकुटी जा हुई अमोली ॥ ९ ॥
 ज्यों फेरत पान तमोली ।
 यों धुन घट सूरत रोली^४ ॥ १० ॥
 क्या महिमा गुरूपद गाऊँ ।
 छिन छिन में उमँग बढ़ाऊँ ॥ ११ ॥
 सुर नर मुनि गति नहिं जानी ।
 यह अचरज अकथ कहानी ॥ १२ ॥

१—काम क्रोध आदि ने । २—शील सन्तोष आदि । ३—सुन्न के दर की । ४—छाँटी ।

सुन में जा शब्द समानी ।
 अद्भुत धुन किंगरी छानी^१ ॥१३॥
 गई महासुन्न के नाके^२ ।
 गुरु दया अचम्भा^३ ताके ॥१४॥
 फिर भँवरगुफा लगी डोरी ।
 सोहँग जा सूरत जोड़ी ॥१५॥
 सतगुरु पद सत कर जाना ।
 गति मति क्या कहूँ बखाना ॥१६॥
 शशि सूर अनेकन पाँती^४ ।
 देखे और आगे जाती ॥१७॥
 लख अलख अगम दरसाना ।
 मिला राधास्वामी नाम निशाना ॥१८॥
 यह अजब परम पद पाया ।
 अब तक कोई भेद न गाया ॥१९॥
 नहिं बेद कतेब सुनाया ।
 जोगी नहिं ज्ञानी धाया^५ ॥२०॥
 यह बस्तु अमोलक पाई ।
 कोई बिरले संत बताई ॥२१॥
 मेरे राधास्वामी परम दयाला ।
 जिन कीन्हा मोहि निहाला ॥२२॥

१—छाँट ली । २—दरवाजे पर । ३—अचरज । ४—कृतारें, पंक्तियाँ ।
 ५—पहुँचे ।

मैं आरत उनकी करता ।
 तन मन दोउ चरनन धरता ॥२३॥
 मैं हर दम यही पुकारूँ ।
 मत अगम अगाध सम्हारूँ ॥२४॥
 मेरा भाग उदय हो आया ।
 राधास्वामी चरन धियाया ॥२५॥
 जग स्वाद लगा सब फीका ।
 राधास्वामी नाम मैं सीखा ॥२६॥
 गति मति मेरी उलटी पलटी ।
 गुरु कर दई सूरत सुलटी^१ ॥२७॥
 मेरा काज हुआ सब पूरा ।
 मैं राधास्वामी चरनन धूरा ॥२८॥

१—शब्द ३०

सुख समूह^२ अन्तर घट छाया ।
 आरत सामा^३ आन सजाया ॥ १ ॥
 आनँद हर्ष अधिक हिये आया ।
 गुरु चरनन में चित्त समाया ॥ २ ॥
 दरशन कर गुरु महिमा गाया ।
 छवि अनूप नैनन में लाया ॥ ३ ॥

प्रेम सूर निज गगन उगाया ।
 भर्म^१ तिमिर^२ सब दूर बहाया ॥ ४ ॥
 जगे भाग धुन अनहद पाया ।
 अन्तर सुखमन तीरथ न्हाया ॥ ५ ॥
 सहसकँवल तिल उलट फिराया ।
 मन को छोड़ सुरत सँग धाया ॥ ६ ॥
 जोति निरंजन रूप दिखाया ।
 अति हुलास^३ कुछ कहा न जाया ॥ ७ ॥
 घंटा नाद और संख सुनाया ।
 चाँद सूर तारा दरसाया ॥ ८ ॥
 बंकनाल का द्वार खुलाया ।
 त्रिकुटी चढ़ गुरु शब्द मिलाया ॥ ९ ॥
 सूरज मंडल बेद पढ़ाया ।
 अर्धमात्रा^३ मूल^४ जनाया ॥ १० ॥
 सुन्न सिखर धुन ररँग जगाया ।
 माया काल दोऊ सुलवाया^५ ॥ ११ ॥
 सेत चंद्रमा फूल खिलाया ।
 मानसरोवर अमी पिलाया ॥ १२ ॥
 हंसन साथ मिलाप बढ़ाया ।
 किंगरी सारँगी धूम मचाया ॥ १३ ॥

१—अंधकार । २—आनंद, हर्ष । ३—ओंकार, ब्रह्म की मरकजी शक्ति ।

४—कारण । ५—सुला दिया ।

महासुन्न धुन गुप्त लखाया ।
 महाकाल बल छीन कराया ॥१४॥
 भँवरगुफा अमृत बरसाया ।
 सोहँग बंसी नाद बजाया ॥१५॥
 चढ़ी सुरत सतपुरुष गजाया^१ ।
 सच्चखंड जा तख्त बिछाया ॥१६॥
 पुरुष मेहर दुरबीन दिलाया ।
 अलख रूप शोभा परखाया ॥१७॥
 अगम पुरुष फिर अमी^२ चुवाया ।
 राधास्वामी भेद बताया ॥१८॥
 भक्त धाम ये ही ठहराया ।
 आरत कर राधास्वामी रिभाया ॥१९॥
 फल अपार दुख दूर गँवाया ।
 रसक रसक^३ रस शब्द रसाया^४ ॥२०॥
 जन्म जन्म के कर्म नसाया ।
 काल दाव अब खूब चुकाया ॥२१॥
 राधास्वामी चरनन माथ नवाया ।
 राधास्वामी मूरत हिये बसाया ॥२२॥
 तज बिकार मन को समभाया ।
 नाम पकड़ अब काम^५ हटाया ॥२३॥

१—ऊँची आवाज से बुलाया । २—अमृत । ३—धीरे धीरे । ४—चखा ।
 ५—कामना अर्थात् संसार के पदार्थों की वासना ।

सील छिमा दृढ़ थान जमाया ।
 मन बिहंग को अधर^१ उड़ाया ॥२४॥
 गुरु भृङ्गी^२ यह^३ कीट चिताया ।
 राधास्वामी चरन निपट लिपटाया ॥२५॥

२—शब्द ३१

सुरत सिरोमन हेला लाई^४ ।
 सतगुरु पूरा खोजो भाई ॥ १ ॥
 जोति निरंजन फाँसी डारा ।
 जीव बहे चौरासी धारा ॥ २ ॥
 करम धरम में सब भरमाए ।
 निज घर का कोइ भेद न पाए ॥ ३ ॥
 मैं अब कहूँ पुकार पुकारा ।
 बिन गुरु सरन नहीं निरवारा^५ ॥ ४ ॥
 पूरन धनी अपार अनामी ।
 परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी ॥ ५ ॥
 जग में संत रूप धर आए ।
 काल जाल से जीव बचाए ॥ ६ ॥

१—आकाश में । २—एक प्रकार का कीड़ा होता है जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि दूसरे कीड़ों को पकड़ कर अपने ही समान बना लेता है ।
 ३—भक्तरूपी । ४—हेला लाई—पुकार कर कहा । ५—निवाह ।

हुकुम दिया जीवन को ऐसा ।
 शब्द पकड़ जाओ निज देसा ॥ ७ ॥
 प्रेम भक्ति हिरदे में धारो ।
 दया मेहर ले उतरो पारो ॥ ८ ॥
 सुरत शब्द बिन जो मत होई ।
 काल जाल जानो तुम सोई ॥ ९ ॥
 बाहरमुख जो पूजा लाते ।
 मन अंतर जो ध्यान लगाते ॥ १० ॥
 वाच लक्ष का निरनै^१ करते ।
 व्यापक चेतन बिरती धरते ॥ ११ ॥
 कर विचार जो मन को सार्धें ।
 प्रान साध^२ जो धरें समार्धें ॥ १२ ॥
 जप तप संजम बहु बिधि धारें ।
 दृष्टि साध^३ कर रूप निहारें ॥ १३ ॥
 और अनेक प्रकाश दिखाई ।
 आत्म दर्शन चित में लाई ॥ १४ ॥
 ऐसा खेल लखें घट माहीं ।
 खट चक्कर^४ अंतर भरमाई ॥ १५ ॥
 यह सब मते काल के जानो ।
 अंतरगत माया के मानो ॥ १६ ॥

१—निर्णय । २—रोक कर । ३—एकत्रित करके । ४—पिंडदेश से संबंध रखने वाले छः चक्र ।

कोइ दिन सुख आनंद बिलासा ।
 फिर फिर पड़ें काल की फाँसा ॥१७॥
 कोई जीव बचे नहिं भाई ।
 काल हृद से परे न जाई ॥१८॥
 तिरलोकी में काल पसारा ।
 पाँच तत्त तिरगुन बिस्तारा ॥१९॥
 दयाल देस तिरलोकी पारा ।
 काल कर्म का वहाँ न गुजारा ॥२०॥
 जो कोइ संत बचन को माने ।
 दयाल देस की सो गति जाने ॥२१॥
 याते बार बार समझाऊँ ।
 संतन की गति अगम सुनाऊँ ॥२२॥
 सतगुरु चरन प्रीति करो गाढ़ी^१ ।
 तन मन अरपो^२ सूरत वारी ॥२३॥
 चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना ।
 रूप अनूप हिये बिच धरना ॥२४॥
 तब कुछ भेद समझ में आवे ।
 सुरत शब्द का कुछ रस पावे ॥२५॥
 जीव काज अस होवे पूरा ।
 काल करम हट जावें दूरा ॥२६॥

पंचम चक्र जीव का बासा ।
 छटवें में है सुरत निवासा ॥२७॥
 यहाँ से राह संत मत जारी ।
 नैन नगर बिच मारग धारी ॥२८॥
 सुरत दृष्टि कर भाँको द्वारा ।
 सहज चढ़ो खट चक्कर पारा ॥२९॥
 सप्तम कँवल सहसदल नामा ।
 जोति निरंजन का अस्थाना ॥३०॥
 घंटा शंख बजे तेहि द्वारे ।
 सूरज चाँद अनेक निहारे ॥३१॥
 व्यापक चेतन इसका भासा ।
 तीन लोक और पिंड निवासा ॥३२॥
 ताका ज्ञान पाय यह ज्ञानी ।
 कर उनमान^१ हुए अभिमानी ॥३३॥
 पोथी पढ़ बहु बात बनावें ।
 निज चेतन का भेद न पावें ॥३४॥
 निज चेतन है सिंध अपारा ।
 दयाल देस में तासु पसारा ॥३५॥
 बूँद एक वहाँ से चल आई ।
 सोई निर्गुन ब्रह्म कहाई ॥३६॥
 इसका भास पिंड में आया ।
 ताको व्यापक चेतन गाया ॥३७॥

जो कोई व्यापक निश्चय धारे ।
 मुक्ति न पावे भरमे वारे ॥३८॥
 याते तजो निरंजन धामा ।
 सतगुरु देस करो बिसरामा ॥३९॥
 सतगुरु पद सतलोक कहावे ।
 जोति निरंजन जहाँ न जावे ॥४०॥
 सहसकँवल परे तीन अस्थाना ।
 त्रिकुटी सुन्न और गुफा बखाना ॥४१॥
 ताके परे धाम सतनामा ।
 सतलोक सतगुरु पद जाना ॥४२॥
 अलख लोक तिस ऊपर होई ।
 ताके परे अगम है सोई ॥४३॥
 तिसके आगे धुर पद जानो ।
 राधास्वामी धाम पहिचानो ॥४४॥
 राधास्वामी नाम हिये बिच धारो ।
 और नाम सब ही तज डारो ॥४५॥
 राधास्वामी चरन बाँध मन आसा ।
 तब पावे सतलोक निवासा ॥४६॥
 तन मन इंद्री घट में घेरो ।
 सुरत चढ़ाय करो घर फेरो ॥४७॥
 हित चित से सतगुरु सँग कीजे ।
 राधास्वामी दया मेहर तब लीजे ॥४८॥

या बिधि जो कोइ कार कमावे ।
 काल देस तज निज घर जावे ॥४६॥
 दयाल देस में बासा पावे ।
 राधास्वामी चरनन माहिं समावे ॥५०॥
 आरत हुई दास की पूरी ।
 रहूँ गुरु अंग संग तज दूरी ॥५१॥

२—शब्द ३२

संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।
 आय जगत में जीव उबारे ॥ १ ॥
 राधास्वामी दीना अगम सँदेसा ।
 जनम मरन का गया अँदेसा^१ ॥ २ ॥
 राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
 राधास्वामी तिन को लीन उबारी ॥ ३ ॥
 राधास्वामी भेद अगाध^२ सुनाया ।
 सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ ४ ॥
 राधास्वामी घट में राह लखाई ।
 भेद मंजिल का भिन भिन गाई ॥ ५ ॥

१—खटका, चिंता । २—जिसका कोई पार न पा सके ।

दीन होय जो चरनन आई ।

राधास्वामी तिसको लिया अपनाई । ६ ।

प्रेम प्रीति नित हिये में बाढ़ी ।

राधास्वामी चरनन सूरत साजी ॥ ७ ॥

सुरत शब्द की करत कमाई ।

राधास्वामी दई घट गैल^१ लखाई ॥ ८ ॥

राधास्वामी दया फोड़ तिल चाली ।

आगे निरखी जोत उजाली ॥ ९ ॥

राधास्वामी संग गई गगनापुर ।

मगन हुई लख रूप शब्द-गुरु ॥ १० ॥

वहाँ से भी फिर अधर चढ़ाई ।

राधास्वामी अक्षर रूप लखाई ॥ ११ ॥

महासुन्न गई राधास्वामी लार^२ ।

सुनी भँवर धुन मुरली सार ॥ १२ ॥

सत्तलोक गई राधास्वामी संग ।

सत्तपुरुष का धारा रंग ॥ १३ ॥

राधास्वामी दया अलख दर्श^३ पाई ।

वहाँ से अगम लोक को धाई ॥ १४ ॥

राधास्वामी मेहर मिला धुर धाम ।

पाया राधास्वामी अचरज नाम ॥ १५ ॥

१—मार्ग, रास्ता । २—साथ । ३—दर्शन ।

राधास्वामी चरन किया बिसराम ।

राधास्वामी कीना पूरन काम ॥१६॥

राधास्वामी दीना अचरज ठाउँ^१ ।

राधास्वामी गुन मैं कस कस गाउँ^२ ॥१७॥

कहूँ पुकार जगत जीवन से ।

राधास्वामी राधास्वामी गाओ मन से ॥१८॥

करम धरम और भरम हटाओ ।

राधास्वामी चरन अब हिये बसाओ ॥१९॥

दया तुम्हार मोर मन आई ।

तासे राधास्वामी सरन जनाई ॥२०॥

राधास्वामी बिना कोई नहिं बाचे ।

दुख पावे चौरासी नाचे^३ ॥२१॥

राधास्वामी मत है ऊँच से ऊँचा ।

और मता कोई वहाँ न पहुँचा ॥२२॥

सब मत रहे रस्ते में थाके ।

राधास्वामी भेद न कोई भाखे ॥२३॥

परमात्म सब कहें बखाना ।

राधास्वामी भेद न उनहूँ जाना ॥२४॥

ब्रह्म और पारब्रह्म कहें गाई ।

राधास्वामी भेद न इनहूँ पाई ॥२५॥

१—स्थान । २—गाऊँ, अर्थात् वर्णन करूँ । ३—चक्कर लगाता रहे ।

राधास्वामी भेद सबन से न्यारा ।

संत सतगुरू कहें पुकारा ॥२६॥

संत बचन को जो कोइ माने ।

राधास्वामी मत को सो सच जाने ॥२७॥

सच्चा बिरही खोजी कोई ।

राधास्वामी मत मानेगा सोई ॥२८॥

सतसँग करे समझ तब आवे ।

राधास्वामी भाव^१ जब हिये बसावे ॥२९॥

मूरख जीव जगत के अंधे ।

राधास्वामी शब्द बिना रहें गंदे^२ ॥३०॥

वे क्या जानें संत की गत^३ को ।

कस समझें राधास्वामी मत को ॥३१॥

खान पान में रहें भुलाने ।

राधास्वामी महिमा नेक न जानें ॥३२॥

मरने का डर चित न समाय ।

राधास्वामी चरन भाव कस आय ॥३३॥

राधास्वामी हैं सच्चे करतार ।

यह नहिं मानें बड़े गँवार^४ ॥३४॥

सत्त सिंध से सब जिव आये ।

राधास्वामी बिन जग में भरमाये ॥३५॥

जो चाहे सच्चा निरवार^१ ।

राधास्वामी चरनन लावे प्यार ॥३६॥

शब्द डोर गह^२ सुरत चढ़ावे ।

राधास्वामी चरनन बासा पावे ॥३७॥

दीन होय गुरु सरनी आवे ।

राधास्वामी दया दृष्टि तब पावे ॥३८॥

शब्द बिना नहिं होय उधार ।

बिन राधास्वामी सहे जम की मार ॥३९॥

यह सब बचन सत्य कर गाया ।

राधास्वामी सरन उबार बताया ॥४०॥

मूरख जीव न मानें बात ।

राधास्वामी सरन न चित्त समात ॥४१॥

भागहीन बहें काल की धार ।

राधास्वामी मत नहिं मानें सार ॥४२॥

निंदा कर सिर पाप बढ़ावें ।

राधास्वामी बिन जम धक्के खावें ॥४३॥

जब लग धुर की मेहर न होई ।

राधास्वामी मत माने नहिं कोई ॥४४॥

राधास्वामी से अब करूँ पुकार ।

मेहर करो जिव लेव उबार ॥४५॥

२-शब्द ३३

राधास्वामी सत मत जिसने धारा ।

सहज हुआ उस जीव उधारा ॥ १ ॥

राधास्वामी चरन सरन सत धारी ।

वही जीव उतरे भौ पारी ॥ २ ॥

सुरत शब्द की जो करे करनी ।

वही जीव भौसागर तरनी ॥ ३ ॥

प्रीति प्रतीति चरन में लावे ।

राधास्वामी दया सोई जिव पावे ॥ ४ ॥

सतगुरु से जो प्रेम लगावे ।

राधास्वामी चरनन जाय समावे ॥ ५ ॥

गुरु की प्रीति तुड़ावे बंधन ।

सहजहि वारे तन मन और धन ॥ ६ ॥

जग का मोह सहज में छूटे ।

तन मन बंधन बहु विधि टूटे ॥ ७ ॥

विरह अंग ले करे अभ्यासा ।

प्रेम पंख ले उड़े अकासा ॥ ८ ॥

गुरुस्वरूप का धर कर ध्याना ।

ताके घट में बिमल निशाना ॥ ९ ॥

प्रीति सहित जो करे यह करनी ।

सुरत निरत निज पद में धरनी ॥ १० ॥

माया बिघन न लागे कोई ।

शब्द रूप में सुरत समोई^१ ॥११॥

निसदिन घट में आनंद पावे ।

राधास्वामी की महिमा गावे ॥१२॥

मेहर दया का धार भरोसा ।

चित को अपने छिन छिन पोसा^२ ॥१३॥

भोग बासना मन से टारे ।

मगन रहे चरनन आधारे ॥१४॥

मौज गुरु की सदा निहारे ।

रजा^३ गुरु की सदा सँभारे ॥१५॥

सतगुरु रक्षक तन मन प्रान ।

सतगुरु देवें भक्ती दान ॥१६॥

बिना मौज गुरु कुछ नहिं होवे ।

मौज आसरे निरभय सोवे ॥१७॥

जिस को हुई अस गुरु परतीती ।

सोइ जन काल करम को जीती ॥१८॥

जब कभी मन और चित घबरावे ।

घट में चरन और को धावे ॥१९॥

और प्रार्थना करे घनेरी ।

देव सहारा काटो बेड़ी ॥२०॥

बहु विधि करम किये मन साथा ।

सो सतगुरु काटें दे हाथा ॥२१॥

कोइ दिन करम भोग हट जावें ।

मेहर करें जल्दी भुगतावें ॥२२॥

जब गुरु में हुआ गहिरा प्यार ।

शब्द भेद तब मिलिया सार ॥२३॥

मन और सुरत चढ़ें ऊँचे को ।

उलट न देखें फिर नीचे को ॥२४॥

राधास्वामी चरनन बड़े पिरीती ।

धारे मन में दृढ़ परतीती ॥२५॥

सतसंगी सब प्यारे लागें ।

गहिरी प्रीति परस्पर^१ पालें ॥२६॥

दया भाव जीवन में आवे ।

सुरत अंस घट घट नजरावे^२ ॥२७॥

सहज विरोध अंग छुट जावे ।

हसद ईर्ष्या नाहिं सतावे ॥२८॥

मन में रहे कोई नहिं इच्छा ।

यही आस मालिक मिले सच्चा ॥२९॥

यही आस बड़े दिन दिन मन में ।

मालिक का दर्शन मिले तन में ॥३०॥

काम क्रोध अस दूर बहावे ।

राधास्वामी चरन सरन लिपटावे ॥३१॥

भरम और कपट होयँ अस दूर ।

घट घट दीखे सत का नूर ॥३२॥

जागत रहे उमंग नवेली ।

प्रेम रंग रहे सुरत रँगिली ॥३३॥

दीन गरीबी मन में धारे ।

प्रीति अंग घट में बिस्तारे ॥३४॥

सब जीवन सँग धरे पियारा ।

यह भी लागे सब को प्यारा ॥३५॥

बाल दशा होय जग में बरते ।

मन में अकड़ पकड़ नहिं धरते ॥३६॥

होय निःकर्म सबन से न्यारा ।

राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥३७॥

संशय भरम न राखे कोई ।

मन में कभी निरास न होई ॥३८॥

दृढ़ विश्वास चरन में धारे ।

मुक्ति आपनी होत निहारे ॥३९॥

गुरु दयाल भौ पार उतारें ।

कुल कुटुम्ब को भी ले तारें ॥४०॥

क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊँ ।
 गुरु की दया अपार सुनाऊँ ॥४१॥
 निर्मल भक्ति करे सोइ सूरा ।
 काज करें वाका^१ गुरु पूरा ॥४२॥
 तासे बार बार कहूँ बचना ।
 गुरुभक्ती सम और न जतना ॥४३॥
 याते सब कारज होयँ पूरे ।
 करम काट पहुँचे घर मूरे^२ ॥४४॥
 गृहस्त होय चहे हो बैरागी ।
 गुरु चरनन में जो लौ^३ लागी ॥४५॥
 पुरुष होय चहे इस्त्री होई ।
 गुरु के संग प्रीति करे सोई ॥४६॥
 सतगुरु वाका करें उधारा ।
 मेहर दया से लेहि सुधारा ॥४७॥
 सब जीवों को चाहिये ऐसी ।
 गुरु संग प्रीति करें जैसी तैसी ॥४८॥
 तौ उनका भी कारज सरई^४ ।
 भौसागर वे इक दिन तरई ॥४९॥
 जग में जम का जोर घनेरा ।
 जीव करें चौरासी फेरा ॥५०॥

१—उसका । २—आदि । ३—लगन, प्रेम । ४—काम बनेगा ।

कोई जीव बचने नहीं पावें ।

सतगुरु बिन सब भटका खावें ॥५१॥

बड़भागी जाय सतगुरु भेंटे ।

चरन भेद दे घट में खैंचें ॥५२॥

सुरत शब्द का भेद सुनावें ।

ध्यान भजन की जुगत लखावें ॥५३॥

सहसदलकँवल जोत दरसावें ।

अनहद घंटा संख सुनावें ॥५४॥

बंकनाल धस त्रिकुटी तीर ।

सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर ॥५५॥

लाल सूर जहाँ गुरु का रूपा ।

ओंकार पद त्रिकुटी भूपा ॥५६॥

सुन में लखा चंद्र अस्थान ।

अक्षर पुरुष रकार निशान ॥५७॥

किंगरी बाजे और सारंग ।

छोड़े नीचे गरज मृदंग ॥५८॥

महासुन्न होय गई गुफा में ।

सोहं धुन सुनी सुरत सफा में ॥५९॥

सत्तलोक का द्वारा सोई ।

आगे चढ़ सुत शब्द समोई^१ ॥६०॥

सत्तलोक सतपुरुष निवास ।
 हंस करें जहाँ सदा बिलास ॥६१॥
 आगे अलख पुरुष दरबारा ।
 तिस परे अगम लोक इक न्यारा ॥६२॥
 तिसके परे लखा धुर धाम ।
 अकह अपार अगाध अनाम ॥६३॥
 हैरत रूप अथाह दवाम^१ ।
 राधास्वामी का जहाँ बिसराम ॥६४॥
 हरष हरष सुत अति मगनानी ।
 राधास्वामी चरन समानी ॥६५॥

२—शब्द ३४

जगत में भूल भरम भारी ।
 धार माया की नित जारी ॥ १ ॥
 भीज रहे सब जिव माया रंग ।
 उठावत मन नित नई तरंग ॥ २ ॥
 भोग जग सबके मन भावें ।
 पदारथ नित नये चावें^२ ॥ ३ ॥
 बिना धन काज नहीं सरते^३ ।
 तृष्णा धन की सब करते ॥ ४ ॥

जतन में धन कारन पचते^१ ।

उमर भर मेहनत में खपते ॥ ५ ॥

मिला धन मगन हुए मन में ।

नहीं तो दुखी रहें तन में ॥ ६ ॥

क्रदर नर देही नहिं जानी ।

दूध तज माँगत हैं पानी ॥ ७ ॥

खबर नहिं कहाँ से जिव आया ।

जगत में क्योंकर भरमाया ॥ ८ ॥

देह तज फिर कहाँ जावेगा ।

कहाँ यह दुख सुख पावेगा ॥ ९ ॥

देखते कुदरत की करतूत ।

बुद्धि से करते उसकी कृत^२ ॥ १० ॥

समझ नहिं पाते को करतार ।

थका उन बुधि बल करत विचार ॥ ११ ॥

जहूरा^३ कारीगर का है ।

समझ नहिं आवे कैसा है ॥ १२ ॥

नहीं मन निश्चय लाता है ।

कोई रचना का करता^४ है ॥ १३ ॥

इसी से संशय में रहते ।

भरम कर चौरासी बहते ॥ १४ ॥

खाने और पीने में भूले ।
 पहिर^१ और ओढ़न सँग फूले ॥१५॥
 काम और क्रोध सतावें नित्त ।
 लोभ और मोह चुरावें चित्त ॥१६॥
 मान मद भरमावत दिन रात ।
 ईरखा नित्त जरावत गात^२ ॥१७॥
 रोग और सोग सतावें आय ।
 कहाँ लग बिपत कहूँ इन गाय ॥१८॥
 बहुरि फिर भोगें चौरासी ।
 कटे नहिं कबहीं जम फाँसी ॥१९॥
 समझ जो कोइ सुनावे आय ।
 भरम कर बचन न चित्त समाय ॥२०॥
 बड़ा मेरा जागा अचरज भाग ।
 चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥२१॥
 करी मोपै धुर से दया अपार ।
 दिया मोहि भेद सार का सार ॥२२॥
 जगत का दिखलाया सब हाल ।
 लखाया मन माया का जाल ॥२३॥
 सुरत मन मेरे निरमल कीन ।
 प्रेम और भक्ति दान मोहि दीन ॥२४॥

मेहर कर दीनी घट परतीत ।
 चरन में बढ़ती नित नित प्रीत ॥२५॥
 नाम की महिमा नित बसाय ।
 सरन दे मुझको लिया अपनाय ॥२६॥
 गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ।
 रहूँ नित चरनन में हुशियार ॥२७॥
 तजूँ मैं मन के सभी बिकार ।
 नाम राधास्वामी हिये सँभार ॥२८॥
 कहे कोइ कुछ जिव संसारी ।
 बचन उन मन में नहिं धारी ॥२९॥
 संतमत भेद नहीं जानें ।
 गुरु की सीख^१ नहीं मानें ॥३०॥
 नहीं कुछ सतसँग उन कीया ।
 मूढ़ और मूर्ख जग रहिया ॥३१॥
 मेहर मोपै कीनी गुरु प्यारे ।
 भ्रम और संशय सब टारे^२ ॥३२॥
 सकै नहिं कोई मोहि भ्रमाय ।
 भ्रम सब दीने दूर बहाय ॥३३॥
 उमँग मेरे हिये उठती हर बार ।
 करूँ स्वामी आरत साज सँवार ॥३४॥

सुरत की थाली लेकर हाथ ।
 शब्द धुन जोत जगाऊँ साथ ॥३५॥
 सुरत को तान दृष्टि को जोड़ ।
 सुनूँ मैं घट में अनहद घोर ॥३६॥
 सहसदल घंट संख बाजे ।
 गगन में धुन मिरदँग गाजे ॥३७॥
 सुन्न चढ़ सारंगी सुनती ।
 गुफा में मुरली धुन गुनती ॥३८॥
 पुरुष का दरशन सतपुर पाय ।
 अलख और अगम को परसा जाय ॥३९॥
 मिला राधास्वामी का दीदार^१ ।
 हुआ मोहि अब उन चरन अधार ॥४०॥
 दया राधास्वामी बरनी न जाय ।
 लिया मोहि अपनी गोद बिठाय ॥४१॥
 मेहर की दृष्टि करी भारी ।
 सुरत हुई राधास्वामी प्यारी ॥४२॥

२—शब्द ३५

सतसँग महिमा सुन कर आया ।
 राधास्वामी दर पर माथ^२ नवाया^३ ॥ १ ॥

अचरज संगत सुनी न देखी ।

भक्ती रीति अनोखी पेखी^१ ॥ २ ॥

राधास्वामी गति मति अगम अपारा ।

सुरत शब्द मारग में धारा ॥ ३ ॥

कर सतसंग मिटा अँधियारा ।

घट में शब्द किया उजियारा ॥ ४ ॥

देखा सब जग काल पसारा ।

जीव बहें चौरासी धारा ॥ ५ ॥

कोइ मंदिर कोइ तीरथ भरमें ।

कोइ जप तप करें बन औ^२ घर में ॥ ६ ॥

कोई बरत और दान में अटके ।

कोइ विद्या और ज्ञान में भटके ॥ ७ ॥

ब्यापक चेतन निश्चय करते ।

ब्यापक में वे बिरती^३ धरते ॥ ८ ॥

आना जाना कुछ नहिं मानें ।

ठौर ठिकाना कुछ नहिं जानें ॥ ९ ॥

यह ब्यापक है काल का भासा ।

सहस्रकँवल में तास^४ निवासा ॥ १० ॥

माया ब्रह्म उसी का नामा ।

सप्तम चक्र तास बिसरामा ॥ ११ ॥

बेद कतेब ब्रह्म उपजाये ।
 करम भरम में जीव फँसाये ॥१२॥
 बाचक ज्ञान कहै जो भाई ।
 मन चेतन में रहे समाई ॥१३॥
 ताके आगे भेद न पावे ।
 मुक्ति न होवे जोनी आवे ॥१४॥
 करम भोग उनका नहि छूटे ।
 फिर फिर चौरासी जम लूटे ॥१५॥
 बिन सतगुरु कोइ राह न पावे ।
 सुरत शब्द बिन घर नहिं जावे ॥१६॥
 तासे कहूँ पुकार पुकारी ।
 शब्द गुरू को लेव सँभारी ॥१७॥
 मेरा भाग जगा अब भारी ।
 सतगुरु ने मोहि लिया सुधारी ॥१८॥
 निज घर का मोहि भेद जनाया ।
 सात अस्थान परे बतलाया ॥१९॥
 निज घर है वह राधास्वामी धामा ।
 बार बार उन चरन प्रनामा ॥२०॥
 दीन अधीन होय आरत करता ।
 सुरत चरन में छिन छिन धरता ॥२१॥
 बर माँगूँ सोइ देव मोहि दाता ।
 मन रहे सुरत शब्द रँग राता ॥२२॥

दृढ़ परतीत चरन में राखूँ ।

राधास्वामी राधास्वामी निस दिन भाखूँ ॥२३॥

२—शब्द ३६

राधास्वामी मत में धारा नीका ।

राधास्वामी मत है सब का टीका^१ ॥ १ ॥

राधास्वामी हैं अगम अनामा ।

राधास्वामी बसें अधर धुर धामा ॥ २ ॥

ज्ञानी जोगी और सन्यासी ।

राधास्वामी मत परतीत न लाय ॥ ३ ॥

वेदान्ती और सूफ़ी भाई ।

राधास्वामी धाम का खोज न पाय ॥ ४ ॥

बुधि चतुराई सबहिन कीन्हीं ।

राधास्वामी चरन प्रीति नहिं लाय ॥ ५ ॥

विद्या में सब गये भुलाई ।

राधास्वामी भक्ती रीति न पाय ॥ ६ ॥

दृष्टी का कुछ साधन करते ।

राधास्वामी जुगत न चित्त समाय ॥ ७ ॥

निरख प्रकाश फूल रहे मन में ।
 राधास्वामी बिन सब धोखा खाय ॥ ८ ॥
 यह प्रकाश माया की छाया ।
 राधास्वामी नूर धार नहिं पाय ॥ ९ ॥
 बारहमुखी और मत सारे ।
 राधास्वामी भेद न सुनिया आय ॥ १० ॥
 काल फन्द में सब मत फन्दे ।
 राधास्वामी बिन को जाल कटाय ॥ ११ ॥
 मेरा भाग जगा अब भारी ।
 राधास्वामी चरनन मिलिया आय ॥ १२ ॥
 दया मेहर से बचन सुनाये ।
 राधास्वामी घट का भेद लखाय ॥ १३ ॥
 शब्द पकड़ सुत घट में चढ़ती ।
 राधास्वामी चरन अमीरस पाय ॥ १४ ॥
 दया मेहर से एक दिन मुझको ।
 राधास्वामी दें धुर घर पहुँचाय ॥ १५ ॥

२—शब्द ३७

सुरतिया समझ गई ।
 अब राधास्वामी मत निज सार ॥ १ ॥

चित से चेत किया गुरु सतसँग ।

शब्द का जाना भेद अपार ॥ २ ॥

आदि धाम से जो धुन आई ।

वही हुई सब की करतार ॥ ३ ॥

सब रचना की जान वही है ।

वही नूर और प्रेम की धार ॥ ४ ॥

जहाँ जहाँ यह धारा ठहरानी ।

मंडल बाँध करी रचन^१ नियार ॥ ५ ॥

शब्द रची तिरलोकी सारी ।

शब्द से फैली माया झार^२ ॥ ६ ॥

पाँचो तत्त और गुन तीनों ।

शब्द रची सब रचन सँभार ॥ ७ ॥

धुन का नाम आत्मा^३ होई ।

शब्द रूप तू सुरत बिचार ॥ ८ ॥

मन माया सँग हुई मलीनी ।

इंद्रियन सँग भरमी संसार ॥ ९ ॥

काम क्रोध बस दुख सुख भोगे ।

त्रिय तापन सँग हुई बीमार ॥ १० ॥

जब लग मिलें न गुरु धुर-धामी ।

फँसी रहे यह काल के जार^४ ॥ ११ ॥

शब्द भेद दे पंथ लखावें ।

घट में परखावें धुन धार ॥१२॥

राधास्वामी परम पुरुष निज धामी ।

महिमा उनकी अगम अपार ॥१३॥

सुन सुन सुरत मगन होय मन में ।

प्रीति लाय परतीत सँभार ॥१४॥

धुन की डोरी पकड़ अधर में ।

मन और सुरत चढ़ें धर प्यार ॥१५॥

सतगुरु संग बाँध जुग चालें ।

काल करम से होवें न्यार ॥१६॥

सुन्न में जाय मानसर न्हावे ।

मन का सँग तज सूरत सार ॥१७॥

महासुन्न और भँवरगुफा चढ़ ।

पहुँच गई सतगुरु दरबार ॥१८॥

अलख अगम की धुन सुन पाई ।

राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥१९॥

सतगुरु दया काज हुआ पूरा ।

सहज मिला मोहि निज घर बार ॥२०॥

राधास्वामी मत की महिमा भारी ।

काल देस से जीव निकार ॥२१॥

अमर धाम पहुँचावें सतगुरु ।

तब होवे सच्चा निरबार ॥२२॥

राधास्वामी दया करें जब अपनी ।

तब भेटें सतगुरु सच यार ॥२३॥

दया मेहर से जीव उबारें ।

सहज मिलावें सत करतार ॥२४॥

राधास्वामी गुन में छिन छिन गाऊँ ।

शुकर करूँ उन बारम्बार ॥२५॥

२—शब्द ३८

चहुँ दिस धूम मची, सतगुरु अब आये,

जग जीव जगाये, उन लिया अपनाई रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी

प्यारे राधास्वामी रे ॥ १ ॥

राधास्वामी परम हितकारी, अस लीला धारी,

जो जिव दीन दुखारी, उन लेहैं उबारी रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी

प्यारे राधास्वामी रे ॥ २ ॥

जम काल लजाई, माया रही मुरझाई,

कुछ पेश न जाई, सब करम नसाई रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी

प्यारे राधास्वामी रे ॥ ३ ॥

हुआ जीव उबारा, मिटा भर्म पसारा,
घर काल उजाड़ा, हुआ सत उजियारा रे।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ४ ॥

राधास्वामी महिमा भारी, कस गाऊँ पुकारी,
मैं बाल अनाड़ी, उन सरन अधारी।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ५ ॥

२—शब्द ३६

परम पुरुष प्यारे राधास्वामी,
धर संत सरूपा, जग आये री।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ १ ॥

करी मेहर घनेरी, जिव भाग जगे री,
दल काल दले री, मुख माया मोड़ी रे।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ २ ॥

दिया घर का सँदेशा, किया शब्द उपदेशा,
मेटा सब ही अँदेशा, तज काल कलेशा रे।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ३ ॥

मगन हुई सुन सतगुरु बचना, नित चरन सरन में पकना,
भोग जग सब ही तजना रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ४ ॥

सुत शब्द लगाऊँ, गुरु रूप धियाऊँ,
मन चरनन लाऊँ, नित राधास्वामी गाऊँ रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ५ ॥

२-शब्द ४०

परम गुरु राधास्वामी प्यारे ।

जगत में देह धर आये ॥

शब्द का देके उपदेशा ।

हंस जिव लीन्ह मुक्ताये ॥ १ ॥

किया सतसंग नित जारी ।

दया जीवों पै की भारी ॥

करम और भरम गये सारे ।

जीव चरनों में घिर आये ॥ २ ॥

भक्ति का आप दे दाना ।
 दिया जीवन को सामाना ॥
 देख हुआ काल हैराना ।
 रही माया भी मुरझाये ॥ ३ ॥
 बढ़ा कर चरन में प्रीती ।
 दर्ई घट शब्द परतीती ॥
 काल और कर्म को जीती ।
 सुरत मन उलट कर धाये ॥ ४ ॥
 जोत लख सूर निरखा री ।
 परे सत शब्द परखा री ॥
 अलख और अगम पेखा री ।
 चरन राधास्वामी परसाये^१ ॥ ५ ॥

४—शब्द ४१

सुनो चित्त दे प्रेम प्रीति से मारग का निज भेदा ।
 जा सुनते मन निश्चय लाते मिटे सकल भ्रम खेदा ॥१॥
 मन बुधि छलबल और चतुराई काम क्रोध मद लोभा ।
 बादबिबाद बाचिक और विद्या तिनकी नहिं यहाँ शोभा ॥२॥
 घट के बैरी सदा विरोधी झूठ सत्य कर देहीं ।
 नाना विधि के विष तरंग से मान में मन हर लेहीं ॥३॥

१—स्पर्श किये ।

या जुक्री से निर्मल मारग कभी न होय बिचारा ।
 जिन जिन ने इन आसा धारी तिन^१ निरास थक हारा ॥४॥
 यह तो हैं सब मन की धारें मन है काल का अंसी^२ ।
 जाने काल की आसा धारी वा मुख अटकी बंसी^३ ॥५॥
 अटक छुड़ावनहार जगत में कोई नजर न आवे ।
 खोज थके पच मरे सभी जन दयासिन्धु को पावे ॥६॥
 अस बिचार यह हित की बातें सुन लीजे धरि ध्याना ।
 भवजल लहर जहर सागर में सतगुरु संग ठिकाना ॥७॥
 सतगुरु संत परम पद बासी आदि अनादी रक्षक ।
 दया धार वे सब को पोषें^४ जीत काल जिव भक्षक ॥८॥
 बिन स्वारथ निज सरन में लावें गावें भेद अपारा ।
 मरम गाय मारग दरसाई करें जीव निस्तारा ॥९॥
 ऐसे समरथ जब जग आवें धर सतगुरु औतारा ।
 तब ही प्रगटे जोति मर्म की होय अनन्त उजारा ॥१०॥
 सो यह अवसर चित्त-ललचावन अति सुन्दर मनभावन ।
 आनन्दलावन तिमिरनसावन^५ प्रगट्यो या संसारन^६ ॥११॥
 हे प्रेमी परमारथ खोजी उदासीन चित्त त्यागी ।
 हे सब जीव मुक्ति के गाहक^७ सुरतवंत अनुरागी ॥१२॥
 सबको सुन्दर खबर जनाऊँ कहत चित्त अति उमंगे ।
 अंतर शीतल बाहर निर्मल घट अनन्तरङ्ग भलके ॥१३॥

१—वे । २—अंश । ३—मछली पकड़ने का काँटा । ४—पालन करें । ५—
 अंधकार दूर करने वाला । ६—इस संसार में । ७—चाहने वाले ।

अचरज भाग जगा जगजीवन बरनत बने न वारा ।
 को कहि सके मर्म या गति की जाका वार न पारा ॥१४॥
 खुली खान सत परमारथ अब मिल गये पुरुष अनामी ।
 प्रगटे परम संत निज दाता सतगुरु राधास्वामी ॥१५॥
 मनमोहन दिलदार सरलचित सुन्दर शीतल गाता ।
 दर्शन जाके करत हरष मन मिटत सहज उत्पाता ॥१६॥
 सत्त नूर वा रूप में भलके सेत सेत सब दीसे ।
 अचरज शोभा तेज अनूपा प्रिय लागे अति जीसे ॥१७॥
 सत्त प्रेम की शीतल धारा अंग अंग से जारी ।
 देखत उमंगत पीवत मातत सुन्दर सूरत प्यारी ॥१८॥
 दयासिन्धु से उठे मौज जब बचन रूप होय जारी ।
 वाके परमानन्द परम रस भीजत तन मन सारी ॥१९॥
 जगे भाग अचरज जिन जिन के मिले आय अस संग ।
 सतसंगत प्रेमा बिलास में किये संशय सब भंगा ॥२०॥
 जीवनिबल और काल करमबस देख दया जब आई ।
 निज मालिकदयाल राधास्वामी सतगुरु रूप बनाई ॥२१॥
 रूप धरा अति परम सुहावन दया मेहर के कारन ।
 प्रेम लगाय अभागी जीवन महा जाल कटवावन ॥२२॥
 खोली अंतर दृष्टी जिनकी छिन में तिमिर नसाया ।
 निज चरनन में दीन लीन कर काल को दूर भगाया ॥२३॥

और अभागी अति मलीन जिव हम से पापी कामी ।
 तिनकी नीच बुद्धि के कारन खोल भेद दिया स्वामी ॥२४॥
 अति मलीन पत्थर हिरदय भी बचन सुना उमँगाया ।
 निज चरनन की सरन दात दे राधास्वामी भाग जगाया ॥२५॥
 पर भवसागर लहर कहर अति गहिर गँभीर अपारा ।
 काम क्रोध मद लोभ मोह की अगम अपारा धारा ॥२६॥
 सुन्दर चेतन निर्मल बुद्धी सत बिचार सत भाऊ ।
 छिपे अकाश गर्द माया में सूक्त कोई न दाऊ ॥२७॥
 सत सूर के उदय हुए भी केते ही रहे अंधे ।
 नयनन हीन फँसे जिव सारे भर्म में अंधे धुंधे ॥२८॥
 अस अभाग जीवन का देखत अती तरस मन आवत ।
 जिय अकुलावत हिय घबरावत कोउ उपाव बन आवत ॥२९॥
 सो उपाव कोइ और न सूक्त एक चरन की आसा ।
 हो उन दासा कर बिश्वासा मेढूँ जम की त्रासा ॥३०॥
 पूरन भेद दिया गुरु सतगुरु अचरज अकह अपारा ।
 सत परमारथ सार अंस संतन मत सार का सारा ॥३१॥
 प्रथमे गति मति जग दुखदाई पूरन दिया लखाई ।
 दूजे पार पुरुष की महिमा अचरज बरन सुनाई ॥३२॥
 अस मन को इत ते कुछ हर के उत की ललक लगाई ।
 तीजे भेद अगम मारग का खोल खोल जतलाई ॥३३॥

१—आकृत । २—उपाय, जतन । ३—अत्यंत । ४—इधर । ५—उधर ।

६—गहरी चाह ।

जब ही आँख खुली मन मूरख फ़िकर देश की आई ।
जगत भाव भय मन से त्यागी भोगन से अकुलाई ॥३४॥
तब ही परम दयाल गोसाईं दीन दान निज नामा ।
देश ठिकाना रूप निशाना महा काल पहिचाना ॥३५॥
शब्द अगम की खबर जनाई सरन अडोल गहाई^१ ।
मन बैरी की घात^२ बचाकर सूरत पार कराई ॥३६॥
पिंड जाल को आप काट गुरु तिल से राह चलाई ।
सहसकमल कर पार गगन में निज दर्शन दिखलाई ॥३७॥
दर्शन करत सुरत मगनानी सुख कस बरना जाई ।
सुन्न दिखाय अगाध सिंध को छिन में पार कराई ॥३८॥
सत्त नूर सत्त सिंध सार पद लखि सूरत मुसकाई ।
अलख अगम दर्शन कर प्यारी राधास्वामी चरन समाई ॥३९॥
अस अपार गति सहजहि दाता निज प्रेमी को दीना ।
महाजाल को हाल काट कर प्रीतम निज कर लीना ॥४०॥
नहिं संदेह मिले यह पदवी सब सरनागत^३ जन को ।
प्रेमी प्यारे दास भक्त सब जो जो सोधें मन को ॥४१॥
पर है करमभूमि^४ यह मंडल करनी करे सो पावे ।
बिन करनी नहिं प्रगट होय फल निज घर कोइ न जावे ॥४२॥
राधास्वामी दयाल परम गुरु यों निज वाक्य पुकारा ।
“करनी करो मार मन डारो इन्द्री रोक दुआरा” ॥४३॥

साहब संत कबीर सतगुरु करनी मुख्य बताई ।
 विष से अमृत करन हेतु को करनी ही ठहराई ॥४४॥
 नानक पलटू जगजीवन इत्यादि साध अरु संता ।
 करनी रीति सिखाय भक्त की मेटी जग भय चिन्ता ॥४५॥
 सुमिरन करनी ध्यान है करनी शब्दश्रवन निज करनी ।
 सतसँग करनी सेवा करनी भक्ति भाव सब करनी ॥४६॥
 “मेहर दया करनी करवाई” ऐसे दयाल सुनाया ।
 “करनी कर बहु मेहर बढ़ाई” पर यों भी कह गाया ॥४७॥
 अस करनी जो रत्नखान है बने न बिन अनुरागा ।
 बिन परतीत प्रीति जुक्ती के यह मन कभी न जागा ॥४८॥
 अस अनुराग प्रतीति प्रीति सब बिन सतसंग न आवे ।
 सतसंगत निर्णय विचार सत भाव उमंग जगावे ॥४९॥
 सत निर्णय बिन प्रीति प्रतीति अनुराग भाव सब काँचा ।
 ढीली चाल चले मन मूरख महिमा जुगत न जाँचा ॥५०॥
 सुन सुनाय वा काट कूट कहे साध संत की बानी ।
 निर्णय याका नाम न होई वह नहिं पय^१ है पानी ॥५१॥
 अनुराग के प्रश्न और शंका गहरे कहीं जो उपजें ।
 सुनकर कहें मौज उत्तर नहिं वास्तव हिय में लरजें^२ ॥५२॥
 जो कहूँ जिज्ञासू अरु खोजी या जुक्ती नहिं माना ।
 अर्ज कीन कर दया बतावो मैं हूँ अति अनजाना ॥५३॥

तो फिर क्रोध भरे उपदेशक कहा यह जन है विरोधी ।
यासे चर्चा करूँ न कबही याकी मति है ओछी^१ ॥५४॥
असअसव्यर्थस्वाँगरचिजोजिव बने साध अरु संता ।
करें हानि अपनी और उनकी जो चालें उन पंथा ॥५५॥
याते निर्णय गहरी पूरी निर्मल अनुभव रूपा ।
भक्तिवंत अनुरागी जन को अमृत है भवकूपा ॥५६॥
या बिधि भेद खुले कुदरत का मिटै भर्म अज्ञाना ।
सारी रचना संत भेद की देन लगे परमाना ॥५७॥
जेती है मनुष्य की विद्या जेती मर्म रचना की ।
करें सिद्ध सब संतबचन को नित नवीन दे साखी^२ ॥५८॥
सुरतवंत अनुरागी प्रेमी निरपक्षी^३ चितसीला ।
रग रग तार तार रचना में परखें प्रीतम लीला ॥५९॥
अंध घोर अस्थूल भूल भ्रम खान जो रचा पसारा ।
वाही में अस भक्तन भलके अद्भुत नूर अपारा ॥६०॥
सभी रीति सब दशा जगत की सभी कथा दुख सुख की ।
दरसन लगेँ मौज प्यारे की नहिं करतूत मनुष की ॥६१॥
लगे मौज वह परम पियारी दया धार सम दीसे ।
भाव बढ़ावन खेद मिटावन प्रिय लागे अति जी से ॥६२॥
अस परतीत होय दृढ़ गहिरी अटल अडोल अखंडा ।
डोले घटे न पलटे रत्ती पलट जाय ब्रह्मंडा ॥६३॥

अस निश्चय करनी करवावे अघट^१ उमंग जगावे ।
 परमारथ अनमोल रतन होय सर्वोपरि मन भावे ॥६४॥
 जग व्योहार कार जीवन में एक अर्थ रह जावे ।
 परम अर्थ जामें सिध होवे आठ पहर वहि भावे^२ ॥६५॥

नाम का निर्णय व राधास्वामी नाम की महिमा

१—शब्द ४२

नाम निर्णय करूँ भाई ।
 दुधाविधि^३ भेद बतलाई ॥ १ ॥
 बर्ण धुन आत्मक^४ गाऊँ ।
 दोऊ का भेद दरसाऊँ ॥ २ ॥
 बर्ण कहु चाहे कहु अक्षर ।
 जो बोला जाय रसना कर^५ ॥ ३ ॥
 लिखन और पढ़न में आया ।
 उसे वर्णात्मक गाया ॥ ४ ॥
 लखायक^६ है यही धुन का ।
 बिना गुरु फल नहीं किनका^७ ॥ ५ ॥
 मिलें गुरु नाम धुन भेदी ।
 सुरत धुन धुनी^८ सँग बेधी^९ ॥ ६ ॥

१—कभी न घटने वाली । २—अच्छा लगे । ३—द्विधा, दो तरह का ।
 ४—वर्णात्मक और ध्वन्यात्मक । ५—रसना कर—जबान से । ६—लखाने
 वाला । ७—जरा भी । ८—शक्ति, जिसकी ध्वनि है । ९—जुड़ जाय ।

एकता नाम और नामी ।
 करावें जो मिलें स्वामी^१ ॥ ७ ॥
 नाम वर्णात्मक^२ गाया ।
 नामी धुनआत्मक^३ पाया ॥ ८ ॥
 वर्ण से सुरत मन माँजो^४ ।
 बहुर चढ़ गगन धुन साधो^५ ॥ ९ ॥
 धुनी धुन^६ एक कर जानो ।
 सुरत से शब्द पहिचानो ॥ १० ॥
 शब्द और सुरत भये एका ।
 नाम धुनआत्मक देखा ॥ ११ ॥
 गुरु बिन और बिना करनी ।
 मिले कस कहो यह रहनी ॥ १२ ॥
 चाह अनुराग जिस होई ।
 भाग बड़ गुरुमुखी सोई ॥ १३ ॥
 नाम नामी दोऊ गाया ।
 अभेदी^७ भेद समझाया ॥ १४ ॥
 गुरु की मौज में सब कुछ ।
 जिसे चाहें करें गुरुमुख ॥ १५ ॥
 गुरुमुख होय तन धन से ।
 करे फिर प्रीति निज मन से ॥ १६ ॥

१—पूरे गुरु । २—वर्णों द्वारा बोला जाने वाला । ३—शब्द स्वरूप ।
 ४—साफ करो । ५—सँभालो । ६—नामी व नाम । ७—अभिन्न वस्तुओं का,
 नाम व नामी का ।

लगे तब जाय सुन^१ धुन से ।
 गये तब तीन गुन तन से ॥१७॥
 बर्ण^२ धुन भेद दोउ बरना ।
 वाच^३ और लक्ष^४ इन कहना ॥१८॥
 वाच वर्णात्मक जानो ।
 लक्ष धुन धुनी पहिचानो ॥१९॥
 बर्ण में भेष जग भूला ।
 मर्म धुन संत कोई तोला^५ ॥२०॥
 बर्ण जप जप पचें भेषी^६ ।
 मिले कुछ फल नहीं नेकी^७ ॥२१॥
 भेद धुन का नहीं पाया ।
 नाम फल हाथ नहिं आया ॥२२॥
 जपें नित सहस और लाखा ।
 खुले नहिं नेक^८ उन आँखा ॥२३॥
 तिमिर^९ संसार नहिं जावे ।
 मोह मद काम भरमावे ॥२४॥
 धुनी धुन भेद नहिं चीन्हा ।
 सुरत और शब्द नहिं लीन्हा ॥२५॥
 मिला नहिं गुरु धुनभेदी ।
 लखावे धुन मिटे खेदी^{१०} ॥२६॥

१—सुन्न की । २—वाच्य यानी प्रकट । ३—लक्ष्य यानी गुप्त । ४—समझा ।

५—भेषधारी । ६—जरा । ७—अंधेरा । ८—खेद, कष्ट ।

काल ने बुद्धि उन छेदी ।
 मुफ्त नरदेह उन दे दी' ॥२७॥
 दया कर संत गोहरावें^२ ।
 ज़रा नहिं चित्त में लावें ॥२८॥
 पाँच धुन भेद बतलावें ।
 सुरत की राह दिखलावें ॥२९॥
 धुनों के नाम दरसावें ।
 रूप अस्थान कह गावें ॥३०॥
 सुरत का जोग लखवावें ।
 जीव नहिं कहन उन मानें ॥३१॥
 सुरत ले गगन चढ़ावें^३ ।
 पिंड में सार बतलावें ॥३२॥
 चढ़े ब्रह्मंड तब परखे ।
 सहसदल मध्य कुछ निरखे ॥३३॥
 बंक चढ़ तिरकुटी धावे ।
 सुन्न दस द्वार गति पावे ॥३४॥
 महासुन जाय हरखानी ।
 भँवर में जा सुनी बानी ॥३५॥
 अमर पद^४ मूल^४ जा देखा ।
 बीन धुन का मिला लेखा ॥३६॥

अलख और अगम भी पेखा ।

नाम का मूल अब देखा ॥३७॥

कहूँ क्या खोल राधास्वामी ।

सैन^१ यह समझ परमानी ॥३८॥

१—शब्द ४३

नाम रस चखा गुरू सँग सार ।

काम रस छोड़ा देख असार^२ ॥ १ ॥

नाम रँग रँगी सुरत मन मार ।

क्रोध को जारा छिमा सँभार ॥ २ ॥

नाम का मिला आज भंडार ।

लोभ को टाला जान कँगार^३ ॥ ३ ॥

नाम गति पाई चढ़ आकाश ।

मोह तम गया देख परकाश ॥ ४ ॥

नाम धन पाया गगन निहार ।

मगन होय बैठी तज अहंकार ॥ ५ ॥

नाम धुन सुनी सुन्न दस द्वार ।

नाम पद मिला महासुन पार ॥ ६ ॥

सुरत लिया भँवरगुफा आधार ।

सोहं और बंसी सुनी पुकार ॥ ७ ॥

पद चौथे^१ चली नाम की लार^२ ।

अलख में गई नाम को धार ॥ ८ ॥

अगम में पहुँची नाम सँभार ।

मिला राधास्वामी नाम अगार^३ ॥ ९ ॥

करो अब सतसँग जग को जार ।

होय घट भीतर नाम उजार ॥ १० ॥

मान मद बैठे दोनों हार ।

नाम पद हुई सुरत गलहार ॥ ११ ॥

भेद यह गावें संत पुकार ।

भेष नहिं मानें बड़े गँवार^४ ॥ १२ ॥

रहे पंडित और जोगी वार^५ ।

ज्ञान कर ज्ञानी मानी हार ॥ १३ ॥

संत कोइ पहुँचे अगम निहार ।

तोड़िया जिन जिन तिल^६ का द्वार ॥ १४ ॥

नाम पद^७ बरने देख विचार ।

रहा नहिं धोखा खोला भाड़^८ ॥ १५ ॥

नाम का परदा दिया उघाड़^९ ।

कहूँ मैं तुमसे कर अति प्यार ॥ १६ ॥

मिलें कोइ सतगुरु परम उदार^{१०} ।

करो यह करनी तुम निरवार^{११} ॥ १७ ॥

१—सत्तलोक को । २—साथ । ३—अगाड़ी, सबसे आगे । ४—मूर्ख । ५—इसी ओर । ६—तीसरे तिल । ७—नाम पद—शब्द के स्थान । ८—पूरा । ९—खोल । १०—दाता । ११—छुटकारा, बचाव ।

पाओ तब नाम कुल्ल करतार ।

बाँध कर चढ़ो सुरत का तार ॥१८॥

मीन मत^१ चढ़ गई उलटी धार ।

मकर^२ गति पकड़ा अपना तार ॥१९॥

काल अब थका पुकार पुकार ।

शरम कर बैठी माया नार ॥२०॥

सुरत अब पाया निज घरबार ।

मिले राधास्वामी पुरुष अपार ॥२१॥

२—शब्द ४४

मन तू करले हिये धर प्यार ।

राधास्वामी नाम का आधार ॥ टेक ॥

राधास्वामी नाम है अगम अपारा ।

जो सुमिरे तिस^३ लेहि उबारा ॥

सुन घट में अनहद भनकार ॥ १ ॥

राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा ।

संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा ॥

दरस किया जाय कुल करतार ॥ २ ॥

राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।

शेष महेश कहत सब हारी ॥

लीला अपर अपार ॥ ३ ॥

राधास्वामी परम पुरुष जग आये ।
 हंस जीव सब लिये मुक्ताये^१ ॥
 और जीवन पर बीजा डार ॥ ४ ॥
 नाम की महिमा बहु विधि गाई ।
 मुक्ती की यह जुगत बताई ॥
 सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥
 राधास्वामी नाम का भेद सुनाया ।
 सुरत शब्द मारग दरसाया ॥
 धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥
 धुनआत्मक^२ जो राधास्वामी नामा ।
 तिस महिमा कस कहूँ बखाना ॥
 जो सुने सोइ जाय निज घरबार ॥ ७ ॥

२—शब्द ४५

मन तू सुन ले चित दे आज ।
 राधास्वामी नाम की आवाज ॥ टेक ॥
 अनहद बाजे घट घट बाजें ।
 अनुरागी सुन सुन आराधे^३ ॥
 प्रेम भक्ति का लेकर साज ॥ १ ॥

तीन लोक में अनहद राजे ।
 सत्तलोक सत शब्द बिराजे ॥
 तिस परे राधास्वामी नाम की गाज^१ ॥ २ ॥
 शब्द की महिमा संतन गाई ।
 जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई ॥
 कर दिया उनका पूरा काज ॥ ३ ॥
 राधास्वामी नाम हिये में धारा ।
 सोई जन हुआ सबसे न्यारा ॥
 त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥
 राधास्वामी नाम प्रीति जिन धारी ।
 राधास्वामी तिसको लिया सुधारी ॥
 दान दिया वाहि भक्ती दाज^२ ॥ ५ ॥
 राधास्वामी नाम है अपर अपारा ।
 राधास्वामी नाम है सार का सारा ॥
 जो सुने सोइ करे घट में राज ॥ ६ ॥

२—शब्द ४६

जब देखा तेज मैंने जो मालिक के नाम का ।
 दिल और जान भेंट हुए गुरु के नाम का ॥ १ ॥
 प्यासों की प्यास बुझ गई धारा से नाम के ।
 ऐसा है आब^३ शीरीं^४ अमी रूप नाम का ॥ २ ॥

नामी व नाम में है नहीं फ़र्क देख ले ।
 छवि यार की दिखाता है वह तेज नाम का ॥ ३ ॥
 हिरदे में तुझको दीख पड़ेगा जमाले^१ यार ।
 जो रगड़ा उस पै नित दिया जावे नाम का ॥ ४ ॥
 मालिक का संग तुझको मिला यह सहीह^२ जान ।
 जो दिल में तेरे लाग रहा ध्यान नाम का ॥ ५ ॥
 कर संग नाम का जो तू दीदार को चहे ।
 मालिक का मेल है जो हुआ मेल नाम का ॥ ६ ॥
 मालिक के लोक में तेरा हो जायगा गुज़र ।
 जो तू उड़ेगा ऊँचे को बल लेके नाम का ॥ ७ ॥
 सुमिरन से नाम गुरु के तू गमगीं^३ न हो कभी ।
 मालिक का प्यार आवे जो हो प्यार नाम का ॥ ८ ॥

सतगुरु व सतगुरुभक्ति की महिमा

१—शब्द ४७

गुरू गुरू मैं हिरदे धरती ।

गुरू आरत की सामाँ^४ करती ॥ १ ॥

१—सौंदर्य । २—सही । ३—रंजीदा, दुखी । ४—तैयारी ।

गुरु मेरे पूरन पुरुष विधाता^१ ।

तिन चरनन पर मन मेरा राता^२ ॥ २ ॥

गुरु हैं अगम अपार अनामी ।

गुरु बिन दूसर और न जानी ॥ ३ ॥

नहि ब्रह्मा नहिं बिष्णु महेशा ।

नहिं ईश्वर परमेश्वर शेषा ॥ ४ ॥

राम कृष्ण नहिं दस औतारी ।

व्यास वशिष्ठ न आदि कुमारी^३ ॥ ५ ॥

ऋषि मुनि देवी देव न कोई ।

तीरथ बर्त धर्म नाहि होई ॥ ६ ॥

जोगी जती तपी ब्रह्मचारी ।

जनक^४ सनक^५ सन्यास बिचारी ॥ ७ ॥

आतम परमातम नहि मानूँ ।

अक्षर निहअक्षर नाहि जानूँ ॥ ८ ॥

सत्तनाम जानूँ न अनामी ।

लिख गिरंथ सब करत बखानी ॥ ९ ॥

सब को करूँ प्रनाम जोड़ कर^६ ।

पर कोई नहि सतगुरु सम-सर^७ ॥ १० ॥

१—कर्त्ता धर्त्ता । २—लगा हुआ, लीन । ३—आद्या । ४—ब्रह्मज्ञानी

राजा जनक । ५—ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक देवर्षि का नाम ।

६—हाथ । ७—बराबर ।

सतगुरु कृपा सबन को जाना ।
 बिन सतगुरु कैसे पहिचाना ॥११॥
 सतगुरु भेद दिया इक इक का ।
 तब जाना इन सबका ठेका^१ ॥१२॥
 सतगुरु सबका भेद बखानें ।
 अब किसको गुरु से बढ़ जानें ॥१३॥
 गुरु ने सबका पद दरसाई ।
 जस जस जिनकी गति^२ तस गाई ॥१४॥
 ताते सतगुरु सबके करता^३ ।
 सतगुरु ही हैं सबके हरता^४ ॥१५॥
 याते सतगुरु का पद भारी ।
 सतगुरु सम नहिं कोई बिचारी^५ ॥१६॥
 जब जिव सरन गुरु की आवे ।
 कर्म धर्म और भर्म नसावे ॥१७॥
 जो गुरु मारग देहिं लखाई ।
 सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई ॥१८॥
 गुरु आज्ञा से जो शिष करई ।
 वह करतूत^६ भक्ति फल देई ॥१९॥
 ताते पिरथम^७ गुरु को खोजो ।
 शब्द बतावें सो गुरु सोधो^८ ॥२०॥

१—ठहरने का स्थान, पद । २—पहुँच । ३—रचने वाले । ४—समेटने वाले । ५—समझती हूँ । ६—करनी । ७—प्रथम, पहले । ८—तलाश करो ।

अस गुरु सम कोइ और न आना^१ ।

गुरु मिले फिर कहा^२ कमाना^३ ॥२१॥
याते मो मत निश्चय ये ही ।

गुरु बिन दूसर और न सेई ॥२२॥
जाके हिरदे गुरु परतीती ।

काल कर्म वासे नहिं जीती ॥२३॥
सबके सिर पर उसका डंका ।

काहू की उसके नहिं संका ॥२४॥
बड़े बड़े उधरें^४ उस संगी ।

गुरुमुख है इन सबसे चंगा^५ ॥२५॥
गुरुमुख की गति सबसे भारी ।

गुरुमुख कोटिन जीव उबारी ॥२६॥
कहँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ ।

कोई न जाने किस समझाऊँ ॥२७॥
जग में पड़ा काल का घेरा ।

जीव करें चौरासी फेरा^६ ॥२८॥
जो चौरासी छूटन चावें ।

तो गुरुमुख सेवा चित लावें ॥२९॥
और काम सब देहिं बहाई ।

शब्द गुरु^७ की करें कमाई ॥३०॥

१—दूसरा । २—आज्ञा । ३—कहा कमाना—आज्ञा मानना चाहिए ।
४—उद्धार पाते हैं । ५—उत्तम, बढ़कर । ६—भ्रमण । ७—शब्द रूपी गुरु ।

कोटिन जन्म रहे कोइ काशी ।

बेद पाठ और तीरथ बासी ॥३१॥

जप तप संजम बहु बिधि करई ।

भेष बनावे विद्या पढ़ई ॥३२॥

पिछलों की जो धारें टेका^१ ।

जिनको कभी आँख नहिं देखा ॥३३॥

पोथिन में सुनी उनकी महिमा ।

टेक बाँध मन सबका भरमा ॥३४॥

अब इनको जो कोइ समझावे ।

टेक छोड़ते जिव सा जावे^२ ॥३५॥

कोई शिव और कोई बिष्णु की ।

कोई राम और कोई कृष्ण की ॥३६॥

कोइ देवी कोइ गंगा जमुना ।

कोइ मूरत कोइ चारों धामा^३ ॥३७॥

कोइ मथुरा कोइ टेक मुरारी^४ ।

मदनमोहन^५ कोइ कुंजबिहारी^५ ॥३८॥

कोइ गोकुल कोइ बलभाचारी^५ ।

कोइ कंठी माला गल धारी ॥३९॥

१—पक्ष । २—जिव सा जावे—जान सी जाती है । ३—चार तीर्थ-स्थान—बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ और रामेश्वर । ४—श्रीकृष्ण महाराज के नाम । ५—वल्लभाचार्य के अनुयायी ।

कोइ अचार^१ कोइ संध्या तर्पन^२ ।

गया गायत्री करें समर्पन^३ ॥४०॥

कोइ गीता कोइ भागवत पढ़ते ।

कथा पुरान नेम से सुनते ॥४१॥

क्या दादू क्या नानकपंथी ।

क्या कबीर क्या पलटू संती ॥४२॥

सब मिल करते पिछली टेका^४ ।

वक्तू गुरु का खोज न नेका^५ ॥४३॥

बिन गुरु वक्तू भक्ति नहिं पावे ।

बिना भक्ति सतलोक न जावे ॥४४॥

यह कहना उन जीवन कारन^६ ।

जिनके बिरह अनुराग की धारन^७ ॥४५॥

विषयी^८ संसारी^९ और रागी^{१०} ।

इनको टेक न चहिये त्यागी ॥४६॥

इनको टेक सहारा भारी ।

टेक बिना कुछ नाहिं अधारी ॥४७॥

उनको नहिं उपदेश हमारा ।

उनको जगत कामना मारा ॥४८॥

१—बाहरी सफाई । २—पितरों के लिये जलदान । ३—आदर से भेंट करना ।
४—पक्ष । ५—जरा भी । ६—के लिये । ७—धारणा । ८—भोग-विलास में
आसक्त । ९—दुनियादार । १०—विषय-वासना में फँसा हुआ ।

कोइ कुटुम्ब कोइ धन आधीना ।

कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना ॥४६॥

मारे डर के टेक न छोड़ें ।

वक्त्र गुरु में मन नहिं जोड़ें ॥५०॥

जो अनुरागी^१ बिरही भाई ।

भक्ति गुरु की उन प्रति^२ गाई ॥५१॥

वक्त्र गुरु जब लग नहिं मिलई ।

अनुरागी का काज न सरई^३ ॥५२॥

पिरथम सीढ़ी भक्ति गुरु की ।

दूसर सीढ़ी सुरत नाम^४ की ॥५३॥

जब लग गुरुभक्ती नहिं पूरी ।

मन मनसा यह होयँ न चूरी ॥५४॥

मन चूरे बिन सुरत न निर्मल ।

कैसे चढ़े और लगे शब्द चल ॥५५॥

गुरुभक्ती अस^५ कैसे आवे ।

सतसँग कर गुरु सेवा धावे^६ ॥५६॥

गुरु को पल पल माहिं रिक्तावे ।

गुरु प्रसन्नता नित्त कमावे ॥५७॥

गुरु जब इसको प्यारे होई^६ ।

गुरु को प्यारा जब यह होई ॥५८॥

१—प्रेमी । २—उनके लिये । ३—चल सकता । ४—शब्द । ५—ऐसी ।
६—सेवा धावे—सेवा के लिए दौड़े ।

पूरन दया गुरू जब करई^१ ।

भक्ति पदारथ जब ही मिलई ॥५६॥

यह भी जोग^१ मेहर से होगा ।

दया मेहर बिन जानो धोखा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जैन ।

गुरुभक्ती पूरन बिना, कोई न पावे चैन ॥६१॥

पिरथम सीढ़ी है गुरुभक्ती ।

गुरुभक्ती बिन काज न रत्ती^२ ॥६२॥

और उपाव अनेकन करते ।

गुरुभक्ती को मुख्य न रखते ॥६३॥

यही कसर है सबके मत में ।

सिद्धान्त^३ न पावें ओछे चित में ॥६४॥

॥ दोहा ॥

गुरुभक्ती दृढ़ के करो, पीछे और उपाय ।

बिन गुरुभक्ती मोह जग, कभी न काटा जाया ॥६५॥

मोटे बंधन जगत के, गुरुभक्ती से काट ।

भीने^४ बंधन चित के, कटें नाम परताप^५ ॥६६॥

१—संजोग । २—जरा भी । ३—असली मतलब । ४—सूक्ष्म । ५—नाम के प्रभाव से ।

मोटे जब लग जायँ नहिं, भीने कैसे जायँ ।
ताते सबको चाहिये, नितगुरुभक्ति कमायँ ॥६७॥
एक जन्म गुरुभक्ति कर, जन्म दूसरे नाम' ।
जन्म तीसरे मुक्तिपद', चौथे में निज धाम ॥६८॥

अब आरत गुरु करूँ सँवारा ।

काया' थाल मन दीपक बारा' ॥६९॥

भक्ति जोति और भोग अनुरागा ।

दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा ॥७०॥

यों आरत अब करी बनाई ।

सतगुरु पूरे रहें सहाई ॥७१॥

१—शब्द ४८

यह तन दुर्लभ तुमने पाया ।

कोटि जन्म भटका जब खाया ॥ १ ॥

अब या को विरथा मत खोवो ।

चेतो छिन छिन भक्ति कमावो ॥ २ ॥

भक्ति करो तो गुरु की करना ।

मार्ग शब्द गुरु से लेना ॥ ३ ॥

शब्द मारगी' गुरु न होवे ।

तो झूठी गुरुवाई लेवे ॥ ४ ॥

१—शब्द की कमाई । २—सुन्न स्थान । ३—शरीर । ४—जला कर ।
५—शब्द के मार्ग पर चलने वाला ।

गुरु सोई जो शब्दसनेही^१ ।
 शब्द बिना दूसर नहिं सेई^२ ॥ ५ ॥
 शब्द कहा मैं गगनशिखर का ।
 शब्द कहा मैं सुन्न शहर का ॥ ६ ॥
 शब्द कहा मैं भँवर डगर^३ का ।
 शब्द कहा मैं अगम नगर का ॥ ७ ॥
 गुरु पहिचान खूब मैं गाई ।
 धोखा या में कुछ न रहाई ॥ ८ ॥
 शब्द कमावे सो गुरु पूरा ।
 उन चरनन की हो जा धूरा^४ ॥ ९ ॥
 और पहिचान करो मत कोई ।
 लक्ष^५ अलक्ष^६ न देखो सोई ॥ १० ॥
 शब्द भेद लेकर तुम उनसे ।
 शब्द कमावो तुम तन मन से ॥ ११ ॥
 अपने जीव की कुछ दया पालो ।
 चौरासी का फेर^७ बचा लो ॥ १२ ॥
 नहिं नरकन में अति दुख पइहो^८ ।
 अग्निकुंड में छिन छिन दहिहो^९ ॥ १३ ॥
 यह सुख चार दिनों का भाई ।
 फिर दुख सदा होय दुखदाई ॥ १४ ॥

१—शब्द से प्रीति करने वाला । २—सेवन करता । ३—रास्ता । ४—धूल, खाक । ५—गुण, लक्षण । ६—दुर्गुण, कुलक्षण । ७—फेरा, चक्कर । ८—पाओगे । ९—जलोगे ।

बार बार मैं कहूँ चिताई ।
 दया तुम्हारी मोहि सताई ॥१५॥
 मेरे मन करुणा^१ अस आई ।
 चेतो तुम, गुरु होयँ सहाई ॥१६॥
 बिन गुरु और न पूजो कोई ।
 दर्शन कर गुरुपद नित सेई ॥१७॥
 गुरु पूजा में सबकी पूजा ।
 जस समुद्र सब नदी समाजा^२ ॥१८॥
 देवी देवा ईश महेशा ।
 सूरज शेष और गौरि गनेशा ॥१९॥
 ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा ।
 तीन लोक और चौथा धामा ॥२०॥
 गुरु सेवा में सबकी सेवा ।
 रंचक^३ भर्म न मानो भेवा^४ ॥२१॥
 ताते बार बार समझाऊँ ।
 गुरु की भक्ती छिन छिन गाऊँ ॥२२॥
 गुरुमुख होय गुरु आज्ञा बरते ।
 गुरुवरती^५ इक छिन में तरते ॥२३॥
 गुरु महिमा मैं कहाँ लग गाऊँ ।
 गुरु समान कोई और न पाऊँ ॥२४॥

१—दया । २—समूह । ३—जरा भी । ४—भेद । ५—गुरु का आश्रय रखने वाले ।

गुरु अस्तुति है सब मत माहीं ।

गुरु से बेमुख ठौर^१ न पाहीं^२ ॥२५॥
भोग बिलास हुकूमत जग की ।

धन और हाकिम के बस रहती ॥२६॥
हाकिम सेवा तुम कस करते ।

धन और मान बढ़ाई लेते ॥२७॥
आज्ञा उसकी अस सिर धरते ।

खान पान निद्रा भी तजते ॥२८॥
सो धन जोड़ किया क्या भाई ।

जक्क लाज में दिया उड़ाई ॥२९॥
सो जग की गति पहले भाखी^३ ।

चार दिना, फिर है नहिं बाक्री ॥३०॥
सो धन कारन हाकिम सेवा ।

ऐसी करते क्या कहूँ भेवा^४ ॥३१॥
गुरु सेवा जो सदा सहाई ।

ताको ऐसी पीठ दिखाई^५ ॥३२॥
दिन नहिं पक्ष^६ मास नहिं बरसा^७ ।

कभी न दर्शन को मन तरसा ॥३३॥
कहो कैसे तुम्हरा उद्धार ।

नर्क निवास दुख चोधारा^८ ॥३४॥

१—जगह, स्थान । २—पाते । ३—बयान की । ४—भेद । ५—यानी मुँह मोड़ लिया । ६—पन्द्रह दिन । ७—वर्ष, साल । ८—चारों ओर ।

उस दुख में कहो कौन सहाई ।
 गुरु से प्रीति न करी बनाई ॥३५॥
 जो इसकी परतीत न लाओ ।
 तौ मन अपना यों समझाओ ॥३६॥
 रोग दुःख नित प्रती^१ सताई ।
 मौत^२ पियादे^३ हैं यह भाई ॥३७॥
 मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा^३ ।
 वह तो करे सकल जिव हिंसा ॥३८॥
 यह हिंसा तुम पर भी आवे ।
 एक दिन काल सीस पर धावे ॥३९॥
 उस दिन का कुछ करो उपाई ।
 धन हाकिम कुछ काम न आई ॥४०॥
 पर जो समझवार^४ तुम होते ।
 तो धन से कुछ कारज^५ लेते ॥४१॥
 कारज लेना यह है भाई ।
 गुरुसेवा में खर्च कराई ॥४२॥
 गुरु नहिं भूखा तेरे धन का ।
 उनपै^६ धन है भक्ति नाम का ॥४३॥
 पर तेरा उपकार करावें ।
 भूखे प्यासे को दिलवावें ॥४४॥

१—प्रति दिन । २—मृत्यु के सिपाही । ३—संशय । ४—समझदार ।

५—काम । ६—उनके पास ।

उनकी मेहर मुफ्त तू पावे ।
 जो उनको परसन्न करावे ॥४५॥
 उनका खुश होना है भारी ।
 सत्तपुरुष निज किरपा धारी ॥४६॥
 गुरु परसन्न होयँ जा ऊपर ।
 वही जीव है सबके ऊपर ॥४७॥
 गुरु राजी^२ तो करता^३ राजी ।
 कर्म काल की चले न बाजी^४ ॥४८॥
 गुरु की आन^५ सभी मिल मानें ।
 शुकदेव नारद ब्यास बखानें ॥४९॥
 ताते गुरु को लेव रिभाई^६ ।
 औरन^७ रीभे कुछ न भलाई ॥५०॥
 गुरु परसन्न और सब रूठे^८ ।
 तौ भी उसका रोम न दूटे^९ ॥५१॥
 औरन को परसन्न जो करता ।
 गुरु से द्रोह घात जो रखता ॥५२॥
 गुरु की निन्दा से नहिं डरता ।
 गुरु को मानुषरूप समझता ॥५३॥
 सो नरकी जानो अपघाती^{१०} ।
 उस सँग दूत करें उत्पाती^{११} ॥५४॥

१—सबसे बढ़कर । २—प्रसन्न । ३—मालिक । ४—दावँ, चाल । ५—आज्ञा, पक्ष । ६—लेव रिभाई—प्रसन्न कर लो । ७—औरों के । ८—नाराज । ९—यानी कुछ नहीं बिगड़ता । १०—आत्मघाती । ११—उपद्रव ।

याते^१ समझो बूझो भाई ।
 गुरु को परसन करो बनाई^२ ॥५५॥
 कुल कुटुंब कुछ काम न आई ।
 और बिरादरी करे न सहाई ॥५६॥
 यह तो चार दिना के संगी ।
 इन निज स्वारथ में बुधि रंगी ॥५७॥
 लज्जा डर इनका मत करो ।
 गुरुभक्ती में अब चित धरो ॥५८॥
 गुरु सहायता यहाँ वहाँ करें ।
 उनसे करता^३ भी कुछ डरे ॥५९॥
 कुल कुटुंब से कुछ नहिं सरे^४ ।
 इनके संग नर्क में पड़े ॥६०॥
 कार्यमात्र^५ बरतो इन माहीं ।
 बहुत मोह में बहु दुख पाई ॥६१॥
 ताते सतसँग सतगुरु सेवो ।
 नाम पदारथ^६ दम दम लेवो ॥६२॥
 गुरु समान और नाम समाना ।
 तीसर सतसँग और न जाना ॥६३॥
 इनसे सब कारज होयँ पूरे ।
 कर्म काट पहुँचो घर मूरे^७ ॥६४॥

१—इससे । २—अच्छी तरह । ३—कर्त्ता, सृष्टि रचने वाला । ४—नहिं सरे—मतलब नहीं निकलता । ५—जितना जरूरी हो । ६—अनमोल वस्तु ।

७—मूल, आदि स्थान ।

यह कहना मेरा अब मानो ।

नहीं अंत को पड़े पछतानो ॥६५॥

धन और मान काम नहीं आवे ।

हुकुम हाकिमी^१ सभी नसावे ॥६६॥

ताते कुछ भक्ती कर लीजे ।

यह भी सुफल कमाई कीजे ॥६७॥

१—शब्द ४६

काल ने जगत अजब भरमाया ।

मैं क्या क्या करूँ बखान ॥ १ ॥

जो साधन^२ थे पिछले जुग के ।

सो कलजुग में किये प्रमान^३ ॥ २ ॥

मूरख प्राणी मन सैलानी^४ ।

सो अटके जल और पषान^५ ॥ ३ ॥

बुद्धिमान अभिमानी जो नर ।

विद्या नारि के हुए गुलाम ॥ ४ ॥

बाक्की जीव बीच के जितने ।

ना मूरख ना अति बुधिमान ॥ ५ ॥

१—अफसरि । २—उपासना के तरीके । ३—किये प्रमान—ठीक बतलाए ।

४—सैर का शौक्तीन । ५—पत्थर में ।

जप तप व्रत संजम बहु धोखे ।
 पंच अग्नि में जले निदान ॥ ६ ॥
 देखो चरित्र काल करता के ।
 कोई सिर कोई पैर रूंधान^१ ॥ ७ ॥
 भटक भटक भटकाया सब जग ।
 कोई न लगाया ठौर ठिकान ॥ ८ ॥
 ऐसी हालत देख जगत की ।
 संत सतगुरू प्रगटे आन ॥ ९ ॥
 गुरु सेवा और नाम महातम^२ ।
 सतसंग सतगुरु किया बखान ॥ १० ॥
 साधन तीन सार^३ उन बरने ।
 और साधन सब थोथे मान ॥ ११ ॥
 वेद शास्त्र और स्मृति पुराना^४ ।
 पढ़ना इनका बिरथा जान ॥ १२ ॥
 पंडित भेष पेट के मारे ।
 वे संतन पर करते तान^५ ॥ १३ ॥
 हित कर संत उन्हें समझावें ।
 वे मानी नहिं मानें आन ॥ १४ ॥
 उनके चाह मान और धन की ।
 परमारथ से खाली जान ॥ १५ ॥

१—फँसे या बँधे हैं । २—माहात्म्य, महिमा । ३—उत्तम ।

४—पुराण । ५—करते तान—तान मारते हैं ।

वे चौरासी चक्कर मारें ।
 फिर फिर गिरते चारों खान^१ ॥१६॥
 पिछले जुग की विद्या पढ़ते ।
 कोई न्याय बेदान्त बखान ॥१७॥
 ना साधन अधिकार न परखें ।
 पढ़ने का करते अभिमान ॥१८॥
 इस जुग की विद्या नहिं पढ़ते ।
 ताते उलटे गिरें निदान^२ ॥१९॥
 दीन गरीबी मत इस जुग का ।
 और गुरुभक्ती कर परमान ॥२०॥
 ताते निरमल निश्चल चित होय ।
 गगन चढ़ाओ शब्द निशान ॥२१॥
 सुरत शब्द मारग अन्तरमुख ।
 पाँच शब्द का गहो ठिकान ॥२२॥
 शब्द शब्द पौड़ी^३ पै चढ़ कर ।
 पहुँचो सच्चखंड सतनाम ॥२३॥
 ताते पहिले गुरु को ध्याओ ।
 और काम सब पीछे जान ॥२४॥
 गुरु की मूरत हृदे बसाओ ।
 चन्द्र चकोर प्रीति^४ घट आन ॥२५॥

१—पैदायश की क्रिमें - जरायुज इत्यादि । २—अस्त्री में । ३—सीढ़ी, मंजिल । ४—जैसी प्रीति चकोर की चंद्रमा के लिए होती है ।

जब लग ऐसी प्रीति न होवे ।

तब लग साधन यही बखान ॥२६॥

गुरुभक्ती जब पूरन हो ले ।

तब सुत चढ़े अधर^१ असमान ॥२७॥

गुरुभक्ती बिन शब्द में पचते^२ ।

सो भी मानुष मूरख जान ॥२८॥

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से ।

खैचें सुरत गुरु बलवान ॥२९॥

गुरुमुखता बिन सुरत न चढ़ती ।

फूटे गगन न^३ पावे नाम ॥३०॥

गुरुमुखता है मूल सबन की ।

और साधन सब शाखा जान ॥३१॥

माता को जस पुत्र पियारा ।

और कामी को कामिन^४ जान ॥३२॥

मछली को जस नीर अधारा ।

चात्रिक^५ को जस स्वाँति समान ॥३३॥

ऐसा गुरु प्यारा जब होगा ।

तब कुछ आगे पंथ चलान ॥३४॥

कहना था सो सब कह दीन्हा ।

अब तू चाहे मान न मान ॥३५॥

१—अंतर में । २—मेहनत करते हैं । ३—फूटे गगन न—न गगन का रास्ता खुलता है । ४—स्त्री । ५—चातक, पपीहा ।

यह आरत गुरुमुख की गाई ।
 गुरुमुख होय सो करे प्रमान^१ ॥३६॥
 राधास्वामी भक्ति बताई ।
 गुरु की भक्ति करो यह जान ॥३७॥
 और भक्ति सब दूर बहाओ ।
 क्यों पड़ते चौरासी खान^२ ॥३८॥
 गुरुभक्ती सम और न कोई^३ ।
 राधास्वामी किया बखान ॥३९॥
 गुरु का ध्यान करो तुम निसदिन ।
 गुरु का शब्द सुनो नित कान ॥४०॥
 नैन श्रवन और हिरदा तीनों ।
 शीशमहल सम निरमल जान ॥४१॥
 राधास्वामी जोर देय कर ।
 गुरुभक्ती को कहें प्रमान^४ ॥४२॥

१—शब्द ५०

चेतो मेरे प्यारे, तेरे भले की कहूँ ॥ १ ॥
 गुरु तो पूरा ढूँढ़, तेरे भले की कहूँ ॥ २ ॥
 शब्द रता^१ गुरु देख, तेरे भले की कहूँ ॥ ३ ॥
 तिस गुरु सेवा धार, तेरे भले की कहूँ ॥ ४ ॥

१—अमल करे । २—योनियों में । ३—कोई साधन । ४—सच्चा
 साधन बताते हैं । ५—लीन, सरशार ।

गुरु चरनामृत पी, तेरे भले की कहूँ ॥ ५ ॥
 गुरु परशादी खाव, तेरे भले की कहूँ ॥ ६ ॥
 गुरु आरत कर ले, तेरे भले की कहूँ ॥ ७ ॥
 तन मन भेंट चढ़ाव, तेरे भले की कहूँ ॥ ८ ॥
 बचन गुरु के मान, तेरे भले की कहूँ ॥ ९ ॥
 गुरु को कर परसन्न, तेरे भले की कहूँ ॥ १० ॥
 नित भजन कर नेम^१, तेरे भले की कहूँ ॥ ११ ॥
 जीव दया तू पाल, तेरे भले की कहूँ ॥ १२ ॥
 दुःख न दे तू काय^२, तेरे भले की कहूँ ॥ १३ ॥
 बचन तान मत मार, तेरे भले की कहूँ ॥ १४ ॥
 कड़वा तू मत बोल, तेरे भले की कहूँ ॥ १५ ॥
 सबको सुख पहुँचाव, तेरे भले की कहूँ ॥ १६ ॥
 नाम अमीरस पीव, तेरे भले की कहूँ ॥ १७ ॥
 सील छिमा चित राख, तेरे भले की कहूँ ॥ १८ ॥
 संतोष बिबेक बिचार, तेरे भले की कहूँ ॥ १९ ॥
 काम क्रोध को त्याग, तेरे भले की कहूँ ॥ २० ॥
 लोभ मोह को टार^३, तेरे भले की कहूँ ॥ २१ ॥
 दीन गरीबी धार, तेरे भले की कहूँ ॥ २२ ॥
 संतों से कर प्रीति, तेरे भले की कहूँ ॥ २३ ॥
 भोजन बहुत न खाव, तेरे भले की कहूँ ॥ २४ ॥

सतसंग में तू जाग, तेरे भले की कहूँ ॥२५॥
 मान बढ़ाई छोड़, तेरे भले की कहूँ ॥२६॥
 भोग बासना जार^१, तेरे भले की कहूँ ॥२७॥
 सम^२ दम^३ हिरदे धार, तेरे भले की कहूँ ॥२८॥
 बैराग भक्ति ना छोड़, तेरे भले की कहूँ ॥२९॥
 गुरु स्वरूप धर ध्यान, तेरे भले की कहूँ ॥३०॥
 गुरु ही का जप नाम, तेरे भले की कहूँ ॥३१॥
 गुरु अस्तुति कर नित, तेरे भले की कहूँ ॥३२॥
 गुरु से प्रेम बढ़ाव, तेरे भले की कहूँ ॥३३॥
 तीरथ मूरत भर्म, तेरे भले की कहूँ ॥३४॥
 जात अभिमान बिसार, तेरे भले की कहूँ ॥३५॥
 पिछलों की तज टेक, तेरे भले की कहूँ ॥३६॥
 वक्तु गुरु को मान, तेरे भले की कहूँ ॥३७॥
 तीरथ गुरु के चरन, तेरे भले की कहूँ ॥३८॥
 गुरु की सेवा बर्त, तेरे भले की कहूँ ॥३९॥
 विद्या गुरु उपदेश, तेरे भले की कहूँ ॥४०॥
 और विद्या पाखंड, तेरे भले की कहूँ ॥४१॥
 लीक^४ पुरानी छोड़, तेरे भले की कहूँ ॥४२॥
 जो गुरु कहें सो मान, तेरे भले की कहूँ ॥४३॥
 मारग ज्ञान न धार, तेरे भले की कहूँ ॥४४॥

१—जला दे । २—मन वश में करना । ३—इंद्रियों को दमन
 करना । ४—लकीर यानी पुरानी टेक ।

भक्ती पंथ सँभार, तेरे भले की कहूँ ॥४५॥
 सुरत शब्द मत^१ ले, तेरे भले की कहूँ ॥४६॥
 सुरत चढ़ा नभ माहिं, तेरे भले की कहूँ ॥४७॥
 गगन तिरकुटी जाव, तेरे भले की कहूँ ॥४८॥
 दसवें द्वार समाव, तेरे भले की कहूँ ॥४९॥
 भँवरगुफा चढ़ आव, तेरे भले की कहूँ ॥५०॥
 सत्तलोक धस जाव, तेरे भले की कहूँ ॥५१॥
 अलख अगम को पाव, तेरे भले की कहूँ ॥५२॥
 राधास्वामी नाम धियाव, तेरे भले की कहूँ ॥५३॥
 भटक अटक सब तोड़, तेरे भले की कहूँ ॥५४॥
 टेक पक्ष गुरु बाँध, तेरे भले की कहूँ ॥५५॥

१—शब्द ५१

गुरु का ध्यान कर प्यारे ।
 बिना इसके नहीं छुटना ॥ १ ॥
 नाम के रंग में रँग जा ।
 मिले तोहि धाम निज अपना ॥ २ ॥
 गुरु की सरन दृढ़ कर ले ।
 बिना इस काज नहिं सरना^२ ॥ ३ ॥
 लाभ और मान क्यों चाहे ।
 पड़ेगा फिर तुझे देना ॥ ४ ॥

करम जो जो करेगा तू ।
 वही फिर भोगना भरना ॥ ५ ॥
 जक्क के जाल से ज्यों त्यों ।
 हटो मरदानगी^१ करना ॥ ६ ॥
 जिन्होंने मार मन डाला ।
 उन्हीं को सूरमा^२ कहना ॥ ७ ॥
 बड़ा बैरी यह मन घट में ।
 इसी का जीतना कठिना ॥ ८ ॥
 पड़ो तुम इसी के पीछे ।
 और सब ही जतन तजना ॥ ९ ॥
 गुरु की प्रीति कर पहले ।
 बहुरि^३ घट शब्द को सुनना ॥ १० ॥
 मान दो बात यह मेरी ।
 करे मत और कुछ जतना^४ ॥ ११ ॥
 हार जब जाय मन तुझसे ।
 चढ़ा दे सुर्त को गगना ॥ १२ ॥
 और सब काम जग झूठा ।
 त्याग दे, इसी को गहना^५ ॥ १३ ॥
 कहें राधास्वामी समझाई ।
 गहो अब नाम की सरना ॥ १४ ॥

१—बहादुरी । २—बहादुर । ३—फिर । ४—उपाय । ५—ग्रहण
 करना, पकड़ना ।

१—शब्द ५२

गुरु सरन आज मैं पाई ।
 मेरे आनंद अधिक बधाई ॥ १ ॥
 गुरु कृपासिंध मैं पाये ।
 मेरे घर दर^१ बजत बधाये ॥ २ ॥
 गुरु परम पुरुष सुखदाता ।
 उन चरन मोर मन राता^२ ॥ ३ ॥
 गुरुभक्ति करूँ दिन राती ।
 मन चित से अति गुन गाती ॥ ४ ॥
 गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ ।
 मन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ ॥ ५ ॥
 गुरु मूरत नैनन ताकूँ ।
 शशि भानु कोटि छवि भाकूँ ॥ ६ ॥
 गुरु सम अब कोइ न दिखाई ।
 मैं फेरूँ यही दुहाई^३ ॥ ७ ॥
 गुरु चरन पकड़ मेरे भाई ।
 क्यों भरमै नर तन पाई ॥ ८ ॥
 अब जन्म सुफल कर अपना ।
 गुरु प्रेम करो जग सुपना^४ ॥ ९ ॥
 जग रैन अंधेरी भारी ।
 गुरु मूरत चन्द्र उगा री ॥ १० ॥

१—दरवाजे पर । २—लीन । ३—फेरूँ दुहाई—ढँढोरा पीटती हूँ ।

४—स्वप्न की तरह झूठा ।

सीतलता हिरदे आई ।
 गुरु बचन चाँदनी छाई ॥११॥
 गुरु से कोई बड़ा न मेरे ।
 सब पड़े काल के घेरे ॥१२॥
 गुरुमुख कोइ सतगुरु हेरे^१ ।
 मनमुख सब काल के चरे^२ ॥१३॥
 गुरु महिमा मुख से कहते ।
 अंतर में प्रीति न धरते ॥१४॥
 भरमों में भटके फिरते ।
 गुरुपद में चित्त न धरते ॥१५॥
 वह जीव अभागी जानूँ ।
 मैं गुरु बिन और न मानूँ ॥१६॥
 अब आरत गुरु की करता ।
 राधास्वामी चरन पकड़ता ॥१७॥

१—शब्द ५३

गुरु चरन धूर कर अंजन ।
 हिये नैन खुलें मन मंजन^३ ॥ १ ॥
 घट तिमिर^४ अनादी^५ नाशन ।
 गुरु रूप भानु परकाशन ॥ २ ॥

१—खोजता है । २—गुलाम । ३—साफ करने वाली ।

४—अंधेरा । ५—हमेशा का ।

मेरे हिरदे प्रेम बढ़ावन ।
 पल पल में उमँग समावन^१ ॥ ३ ॥
 सुत चढ़े गगन गुरु पावन^२ ।
 सतगुरु पद शब्द सुनावन ॥ ४ ॥
 सो सतगुरु जग माहिं बिराजन ।
 जग जीव अचेत चितावन ॥ ५ ॥
 क्या महिमा सतगुरु गावन ।
 जीव अधम नीच किये पावन^३ ॥ ६ ॥
 मन माया जोर चलावन ।
 ठोकर दे दूर करावन ॥ ७ ॥
 दासन का दास दसावन^४ ।
 सेवा पर तन मन वारन ॥ ८ ॥
 मैं किंकर कुटिल अपावन^५ ।
 गुरुगोद लिया और किया अपनावन । ९ ।
 यह मानुष जन्म जितावन^६ ।
 गुरुरूप लखा मनभावन ॥ १० ॥
 यह आरत दोना^७ गावन ।
 राधास्वामी किया बखानन ॥ ११ ॥

१—पैदा करने वाली । २—पावे । ३—पवित्र । ४—कहलाता हूँ ।

५—अपवित्र । ६—सफल बनाने वाला । ७—नाम एक प्रेमी का ।

१—शब्द ५४

भक्ति महातम सुन मेरे भाई ।
 सब संतन ने किया बखान ॥ १ ॥
 यही मता गुरुमत पहिचानो ।
 और मते सब झूठ भुलान^१ ॥ २ ॥
 बिना भक्ति थोथे सब मानो ।
 छिलका है मींगी^२ की हान ॥ ३ ॥
 ताते भक्ती दृढ़ कर पकड़ो ।
 और सयानप^३ तजो निदान ॥ ४ ॥
 भक्ती इश्क प्रेम यह तीनों ।
 नाम भेद है रूप समान^४ ॥ ५ ॥
 भक्ति भाव यह गुरुमत जानो ।
 और मते सब मनमत ठान^५ ॥ ६ ॥
 प्रेम रूप आतम परमातम ।
 भक्ति रूप सतनाम बखान ॥ ७ ॥
 भक्ती और भगवंत एक हैं ।
 प्रेम रूप तू सतगुरु जान ॥ ८ ॥
 प्रेम रूप तेरा भी भाई ।
 सब जीवन को यों ही मान ॥ ९ ॥
 एक भेद यामें पहिचानो ।
 कहीं बुंद कहीं लहर समान ॥ १० ॥

१—भूले हैं । २—बीज के अन्दर की गिरी अर्थात् सार ।

३—चतुराई । ४—एक ही । ५—समझो ।

कहीं सिंध सम करे प्रकाशा ।
 कहीं सोत और पोत^१ कहान ॥११॥
 कहिं इच्छा परबल होय बैठी ।
 कहीं हुई माया बलवान ॥१२॥
 एक ठिकाने माया थोड़ी ।
 सिंध प्रताप शुद्ध हुई आन ॥१३॥
 सोत पोत में माया नाहीं ।
 वहाँ प्रेम ही प्रेम रहान ॥१४॥
 वह भंडार प्रेम का भारी ।
 जाका^२ आदि न अंत दिखान ॥१५॥
 बिना संत पहुँचे नहिं कोई ।
 सतगुरु संत किया अस्थान^३ ॥१६॥
 प्रेम भक्ति की ऐसी महिमा ।
 ग्रहण करो यह अमृत खान ॥१७॥
 ताते पहले करो भक्ति गुरु ।
 पीछे पाओ नाम निशान ॥१८॥
 आरत कर कर गुरू रिझाओ ।
 पाओ उनसे प्रेम निधान^४ ॥१९॥
 राधास्वामी कहत सुनाई ।
 मिला तुम्हे अब भक्ती दान ॥२०॥

१—सोत और पोत—भंडार । २—जिसका । ३—किया अस्थान—वहाँ रहते हैं । ४—प्रसन्न करो । ५—प्रेम का स्रज्जाना ।

१—शब्द ५५

जक्क' भाव भय लज्जा छोड़ो ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ १ ॥
 जाति बरन भय लज्जा त्यागो ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ २ ॥
 शत्रु मित्र डर दूर हटाओ ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ३ ॥
 मात पिता डर छोड़ गँवाओ ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ४ ॥
 जोरू लड़के मत डर इनसे ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ५ ॥
 भाई भतीजों का डर मत कर ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ६ ॥
 सास ससुर डर मन से छोड़ो ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ७ ॥
 बहू जमाई^३ इनका डर तज ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ८ ॥
 यार आशना^३ सब डर छोड़ो ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥ ९ ॥
 नातेदार कुटुम्बी जितने ।
 इनका डर तज, कर भक्ती ॥ १० ॥

भक्ति अंग में जब तू बरते ।
 छोड़ भिभक^१ इन कर भक्ती ॥११॥
 जो मूरख हैं मर्म न जानें ।
 इनका डर क्या, कर भक्ती ॥१२॥
 इनका डर कुछ मत कर मन में ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥१३॥
 भेष^२ भेष को देख लजावे ।
 सो भी कच्चा, कर भक्ती ॥१४॥
 जब लग सबसे निडर न होवे ।
 तब लग कच्चा, कर भक्ती ॥१५॥
 जिल्लत^३ इज़्जत^४ जो कुछ होवे ।
 मौज बिचारो कर भक्ती ॥१६॥
 गुरु का बल हिरदे धर अपने ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥१७॥
 यह बिगाड़ कुछ करें न तेरा ।
 क्यों भिभके तू कर भक्ती ॥१८॥
 बिना मौज गुरु कुछ नहीं होता ।
 सुन प्यारे तू कर भक्ती ॥१९॥
 तू कच्चा, यह करे कचाई ।
 और कहूँ क्या कर भक्ती ॥२०॥

१—डर और लज्जा । २—भेषधारी । ३—निरादर, अपमान ।

४—आदर, सम्मान ।

करते करते पक्का होगा ।
 और उपाव न कर भक्ती ॥२१॥
 कच्ची से पक्की^१ होय एक दिन ।
 छोड़ कपट तू कर भक्ती ॥२२॥
 कपट भक्ति कुछ काम न आवे ।
 सच्ची कच्ची कर भक्ती ॥२३॥
 राधास्वामी कहत सुनाई ।
 जैसी बने तैसी कर भक्ती ॥२४॥

१—शब्द ५६

धोखा मत खाना जग आय पियारे ।
 धोखा मत खाना जग आय ॥ १ ॥
 कोई मीत^२ न जानो अपना ।
 सब ठग बैठे फाँसी लाय ॥ २ ॥
 जब सच्चा होय चले डगर गुरु^३ ।
 तब ही चौकें, रोकें आय ॥ ३ ॥
 ऊँच नीच कहें बचन तोख^४ के ।
 मन को तेरे दें भरमाय ॥ ४ ॥
 इनसे रहना समझ बूझ कर ।
 हैं यह बैरी हित^५ दिखलाय ॥ ५ ॥

१—पक्की भक्ति । २—मित्र । ३—डगर गुरु—गुरु के मार्ग पर ।

४—तान । ५—प्यार, हृमददी ।

तेरी हानि लाभ नहिं सोचें ।
 अपने स्वारथ रहे लिपटाय ॥ ६ ॥
 तू भी चतुरा गुरु का प्यारा ।
 उन सँग रहूँ गुरु चरन समाय^१ ॥ ७ ॥
 उनको भी इस भाँति भलाई ।
 तेरी भक्ति न थकती जाय ॥ ८ ॥
 जो बेमुख गुरु भक्ति नाम से ।
 कोई तरह काबू नहिं पाय ॥ ९ ॥
 तौ जुझी से दीन विधी से ।
 छोड़ चलो सँग, दोष न ताय^२ ॥ १० ॥
 जो सन्मुख^३ गुरु भक्ति नाम से ।
 होयँ कदाचित्^४ मेल मिलाय ॥ ११ ॥
 राधास्वामी कहत बनाई ।
 बहुरि बहुरि तू भक्ति कमाय ॥ १२ ॥
 भक्ति न छूटे कोई जुझि से ।
 नहिं तो बहु विधि रहो पछताय ॥ १३ ॥

१—शब्द ५७

सतगुरु खोजो री प्यारी ।
 जगत में दुर्लभ रतन^५ यही ॥ १ ॥

१—गुरु चरन समाय—सतगुरु के चरणों में लीन रहते हुए । २—इसमें ।

३—श्रद्धावान् । ४—शायद, कभी । ५—अमूल्य पदार्थ ।

जिन पर मेहर दया सतगुरु की ।
 उनको दरस दई ॥ २ ॥
 दरस पाय सतलोक सिधारी ।
 सत्तनाम पद कीन्ह सही' ॥ ३ ॥
 सही नाम पाया सतगुरु से ।
 बिन सतगुरु सब जीव बही ॥ ४ ॥
 जीव पड़े चौरासी भरमें ।
 खान पान मद मान लई ॥ ५ ॥
 मान मनी^१ का रोग पसरिया^२ ।
 बड़े बने जिन मार सही ॥ ६ ॥
 छोटा रहे चित्त से अंतर ।
 शब्द माहिं तब सुरत गई ॥ ७ ॥
 शब्द बिना सारा जग अंधा ।
 बिन सतगुरु सब भर्ममई^४ ॥ ८ ॥
 शब्द भेद और शब्द कमाई ।
 जिन जिन कीन्हीं सार^५ लई ॥ ९ ॥
 शब्दरता^६ सतगुरु पहिचानो ।
 हम यह पूरा पता दई ॥ १० ॥
 खोलो आँख निकट ही देखो ।
 अब क्या खोलूँ खोल कही ॥ ११ ॥

१—प्रत्यक्ष किया । २—अहंकार । ३—फैला है । ४—भ्रममय अर्थात्
 भ्रमपूर्ण । ५—असली तत्त्व । ६—जो शब्द में लीन हो ।

आगे भाग^१ तुम्हारा प्यारी ।
 नहिं परखो तो जून रही^२ ॥१२॥
 कहना था सोई कह डाला ।
 राधास्वामी खूब कही ॥१३॥

१—शब्द ५८

सोता मन कस जागे भाई ।
 सो उपाव मैं करूँ बखान ॥ १ ॥
 तीरथ करे बर्त भी राखे^३ ।
 विद्या पढ़ के हुए सुजान ॥ २ ॥
 जप तप संजम^४ बहु बिधि धारे ।
 मौनी हुए निदान ॥ ३ ॥
 अस उपाव हम बहुतक कीन्हे ।
 तौ भी यह मन जगा न आन ॥ ४ ॥
 खोजत खोजत सतगुरु पाये ।
 उन यह जुक्ति कही परमान^५ ॥ ५ ॥
 सतसँग करो संत को सेवो ।
 तन मन करो कुरबान^६ ॥ ६ ॥
 सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़ ।
 चेत^७ लगाओ अपना ध्यान ॥ ७ ॥

१—भाग्य, किस्मत । २—जून रही—योनियों में भरमोगे । ३—किये ।

४—परहेज । ५—ठीक ठीक । ६—न्यौछावर । ७—होशियारी से ।

जागत जागत अब मन जागा ।
 झूठा लगा जहान^१ ॥ ८ ॥
 मन की मदद मिली सूरत को ।
 दोनों अपने महल समान^२ ॥ ९ ॥
 बिना शब्द यह मन नहिं जागे ।
 करो चाहे कोई अनेक विधान^३ ॥ १० ॥
 यही उपाव छाँट कर गाया ।
 और उपाव न कर परमान^४ ॥ ११ ॥
 विरथा बैस^५ बितावें अपनी ।
 लगे न कभी ठिकान ॥ १२ ॥
 संत बिना सब भटके डोलें ।
 बिना संत नहिं शब्द पिछान^६ ॥ १३ ॥
 शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ ।
 तू भी सुरत लगा दे तान^७ ॥ १४ ॥
 घर पावे चौरासी छूटे ।
 जन्म मरन की होवे हान^८ ॥ १५ ॥
 राधास्वामी कहें बुझाई ।
 बिना संत सब भटके खान ॥ १६ ॥

१—संसार । २—समा गये । ३—विधि, उपाय । ४—न कर परमान—सही
 न मानो । ५—उमर । ६—पहिचान पाते । ७—खींच कर ।

१—शब्द ५६

गुरु कहें पुकार पुकार ।
 समझ मन कर लो सुमिरनियाँ ॥ १ ॥
 स्वाँसो स्वाँस घटे तेरी पूँजी ।
 चली जाय यह उमरनियाँ ॥ २ ॥
 बक्कू मिला यह तख्तनशीनी^१ ।
 छोड़ बान^२ अब घुरबिनियाँ^३ ॥ ३ ॥
 यह मारग अब गुरु बतावें ।
 पकड़ गहो तुम उर^४ धुनियाँ^५ ॥ ४ ॥
 शब्द संग तुम सुरत लगाओ ।
 रहो नित्त गुरु मुजरनियाँ^६ ॥ ५ ॥
 दया लेव तुम हर दम उनकी ।
 सरन पड़ो उन चरननियाँ ॥ ६ ॥
 वह तो भेद बतावें घट का ।
 पकड़ शब्द भौ तरननियाँ ॥ ७ ॥
 लागी लगन बहुरि नहिं सूझे ।
 सुरत अजर^७ में जरननियाँ^८ ॥ ८ ॥
 जिन जिन संग करा गुरु पूरे ।
 छुटा जन्म और मरननियाँ ॥ ९ ॥
 जगत जार^९ तजसार^{१०} समझ तू ।
 मिटे चौरासी भरमनियाँ ॥ १० ॥

१—राजगद्दी पर बैठने का । २—आदत । ३—घूरे से दाने बीन बीन कर खाने वाली मुर्गी । ४—अंतर में । ५—शब्द की धुन । ६—गुरु के संमुख । ७—अमरपद । ८—पकाना । ९—जाल । १०—असलियत ।

सतसँग करो प्रीति घट धारो ।
 देख रूप चढ़ दर्पनियाँ^१ ॥११॥
 गगन गिरा^२ परखो धुन बानी ।
 यही कमाई करननियाँ ॥१२॥
 पहुँचो जाय अधर^३ में प्यारी ।
 गाँठ खुले तब तन मनियाँ^४ ॥१३॥
 या जग में कोइ सुखी न देखो ।
 गहो गुरु के बचननियाँ ॥१४॥
 दुख के जाल फँसे सब मूरख ।
 तू क्यों उन सँग फँसननियाँ ॥१५॥
 मैं तू मोर तोर सब त्यागो ।
 गहो राधास्वामी सरननियाँ ॥१६॥

१—शब्द ६०

गुरु की कर हर दम पूजा ।
 गुरु समान कोइ देव न दूजा^१ ॥ १ ॥
 गुरु चरन सेव नित करिये ।
 तन मन गुरु आगे धरिये ॥ २ ॥
 गुरु दरस करो आँखन से ।
 गुरु बचन सुनो सरवन^२ से ॥ ३ ॥

१—आईना । २—शब्द । ३—अंतर । ४—तन व मन से लगी हुई
 सुरत की गाँठ । ५—दूसरा । ६—कान ।

गुरु के बल मन को मारो ।
 गुरु के बल काल सँघारो^१ ॥ ४ ॥
 गुरु ब्रह्म रूप धर आये ।
 गुरु पारब्रह्म गति गाये ॥ ५ ॥
 गुरु सत्तनाम पद खोला^२ ।
 गुरु अलख अगम को तोला ॥ ६ ॥
 गुरु रूप धरा राधास्वामी ।
 गुरु से बड़ नहीं अनामी^३ ॥ ७ ॥

१—शब्द ६१

गुरु ध्यान धरो तुम मन में ।
 गुरु नाम सुमिर छिन छिन में ॥ १ ॥
 गुरु ही गुरु गावो भाई ।
 गुरु ही फिर होयँ सहाई ॥ २ ॥
 जितने पद ऊँचे नीचे ।
 गुरु बिन कोइ नाहिं पहुँचे ॥ ३ ॥
 गुरु ही घट भेद लखाया ।
 गुरु ही सुन शिखर^४ चढ़ाया ॥ ४ ॥
 महासुन्न भी गुरु दिखलाई ।
 गुरु भँवरगुफा दरसाई ॥ ५ ॥

१—संहार करो, मारो । २—भेद बताया । ३—अनामी पुरुष ।

४—सुन्न शिखर—दसवाँ द्वार ।

गुरु सत्तलोक पहुँचाया ।
 गुरु अलख अगम परसाया^१ ॥ ६ ॥
 गुरु ही सब भेद बखाना ।
 गुरु से^२ राधास्वामी जाना ॥ ७ ॥

१—शब्द ६२

गुरु चरन पकड़ दृढ़ भाई ।
 गुरु का सँग करो बनाई ॥ १ ॥
 गुरु बचन करो आधारा ।
 गुरु दरस निहारो^३ सारा ॥ २ ॥
 गुरु की गति अगम अपारा ।
 गुरु अस्तुति करो सँवारा^४ ॥ ३ ॥
 गुरु राखो हिरदे माहीं ।
 तो मिटे काल परछाहीं ॥ ४ ॥
 भोगों की आसा त्यागो ।
 मनसा तज जग से भागो ॥ ५ ॥
 आसा गुरु शब्द लगाओ ।
 मनसा गुरु पद में लाओ ॥ ६ ॥
 आसा और मनसा मोड़ी ।
 मन इन्द्री गुरु में जोड़ी ॥ ७ ॥

१—प्राप्त कराया । २—गुरु से—गुरु के जरिये से ही । ३—देखो ।

४—अच्छी तरह ।

दिन रात रहे गुरु ध्याना ।
 गुरु बिन कोइ और न जाना ॥ ८ ॥
 गुरु स्वाँस गिरास^१ न बिसरे ।
 तू पल पल गा गुरु जस^२ रे ॥ ९ ॥
 गुरु हैं हितकारी तेरे ।
 गुरु बिन कोइ मित्र न है रे ॥ १० ॥
 गुरु फंद छुड़ावें जम के ।
 गुरु मर्म लखावें सम^३ के ॥ ११ ॥
 भोजल से पार उतारें ।
 छिन छिन में तुझे सँवारें ॥ १२ ॥
 ज्यों निज अंडा सेवे कच्छा^४ ।
 त्यों गुरु राखें तेरी पच्छा^५ ॥ १३ ॥
 गुरु सम कोइ और न रक्षक ।
 कुल कुटुंब सब जानो तक्षक^६ ॥ १४ ॥
 ताते^७ गुरु को कभी न छोड़ो ।
 कनक^८ कामिनी से मन मोड़ो ॥ १५ ॥
 गुरु की भक्ति सदा सुखदाई ।
 गुरु बिन मन बुधि भी दुखदाई ॥ १६ ॥
 गुरु विश्वास चित्त में धरो ।
 गुरु परशाद जक्क से तरो ॥ १७ ॥

१—स्वाँस गिरास—क्षण भर को भी । २—यश, कीर्ति । ३—शान्ति, मोक्ष ।

४—कछुआ । ५—पक्ष, तरफदारी । ६—डसने वाले, साँप ।

७—इसलिए । ८—सोना, धन ।

मान मोह मद गुरु सब हरें^१ ।
 काम क्रोध भी तुझसे डरें ॥१८॥
 लोभ लहर सब देयें निकारी ।
 माया ममता सब बाजी हारी ॥१९॥
 तुझसे जीत सके नहिं कोई ।
 गुरु का बल जो मन में होई ॥२०॥
 गुरु से पावे नाम रसायन ।
 घट से भागे तृष्णा डायन^२ ॥२१॥
 गुरु चरनामृत गुरु परशादी ।
 प्रीति सहित ले मिटे उपाधी^३ ॥२२॥
 गुरु पै तन मन दोनों वारो ।
 हिरदे में गुरु रूप निहारो ॥२३॥
 गुरु हैं दाता गुरु हैं दानी ।
 गुरु आराधो^४ छिन छिन प्राणी ॥२४॥
 सत्तपुरुष सतनाम गुरु हैं ।
 अलख रूप और अगम गुरु हैं ॥२५॥
 राधास्वामी गुरु का नाम ।
 निज पद पाय करो बिसराम ॥२६॥
 गुरु सब विधि हैं अंतरजामी ।
 गावो^५ ध्यावो राधास्वामी ॥२७॥

१—नष्ट करें। २—भुतनी। ३—झगड़ा। ४—उपासना करो।

५—सुमिरन करो।

१—शब्द ६३

सतगुरु का नाम पुकारो ।
 सतगुरु को हियरे धारो ॥ १ ॥
 सतगुरु का करो भरोसा ।
 फिर करो न कुछ अफ़सोसा^१ ॥ २ ॥
 सतगुरु तोहि छिन छिन पोसें^२ ।
 हँगता^३ तेरी सब बिधि खोमें^४ ॥ ३ ॥
 तू कर उन चरनन होशें^५ ।
 सतगुरु से मत कर रोसें^६ ॥ ४ ॥
 सतगुरु गति अब सुन मोसे ।
 कही जात न रंचक^७ मुँह से ॥ ५ ॥
 दसवें में खैचें नौ^८ से ।
 फिर एक करें तोहि दो^९ से ॥ ६ ॥
 शब्दारस तोहि पिलावें ।
 जमपुर से फेर बचावें ॥ ७ ॥
 घर अगम तोहि दरसावें ।
 मारग सब तोहि लखावें ॥ ८ ॥
 जो संगत उनकी करते ।
 सो जग से कभी न डरते ॥ ९ ॥

१—पछतावा । २—रक्षा करें । ३—अहंकार । ४—दूर करें ।

५—सचेत हो । ६—रोष । ७—थोड़ी भी । ८—नौ इंद्रियों ।

९—जड़ व चेतन की मिलौनी से ।

जो बेमुख^१ गुरु से फिरते ।
 सो भौसागर में गिरते ॥१०॥
 चौरासी चक्कर खावें ।
 फिर जन्म जन्म दुख पावें ॥११॥
 तुम सोचो अपने मन में ।
 कोइ नाहिं गुरु सम जग में ॥१२॥
 जिन जिन गुरुभक्ती धारी ।
 सो पहुँचे निज दरबारी ॥१३॥
 गुरुभक्ति न जिनको प्यारी ।
 तिन जीती बाजी हारी ॥१४॥
 गुरु चरनन आशिक^२ होना ।
 यह बात बड़ी, क्या कहना ॥१५॥
 गुरु लगें जिसे अति प्यारे ।
 तिन कुल कुटुंब सब तारे ॥१६॥
 धन^३ पिता मात उन जन के ।
 जिन भक्ति करी कुल तज के ॥१७॥
 जिन सही मलामत^४ जग की ।
 तिन मिली रास^५ सुख घर की ॥१८॥
 जो कुल लाज जक्क से डरे ।
 गुरुभक्ती से वह पुनि गिरे ॥१९॥

सूरा रण से कभी न टरे ।
 सती सदा मुरदे^१ सँग जरे ॥२०॥
 रण छोड़े कायर^२ कहलाय ।
 सती फिरे भंगी घर जाय ॥२१॥
 पपिहा अपना पन^३ नहिं त्यागे ।
 जले पतंगा जोती आगे ॥२२॥
 मछली को जैसे जलधारा ।
 गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा ॥२३॥
 जिन पर बख्शि^४श गुरु की होई ।
 गुरुमुख ऐसा बिरला कोई ॥२४॥
 राधास्वामी कही बनाय ।
 सेवक को गुरु दिया जगाय ॥२५॥

१—शब्द ६४

सतगुरु कहें करो तुम सोई ।
 मन के कहे चलो मत कोई ॥ १ ॥
 यह भौ^५ में गोते दिलवावे ।
 सतगुरु से बेमुख करवावे ॥ २ ॥
 काल चक्र^६ में डाल घुमावे ।
 मोह जाल में बहुत फँसावे ॥ ३ ॥

१—मृत पति । २—डरपोक । ३—ग्रण, स्वभाव । ४—दात । ५—संसार ।

६—जन्म मरण का चक्कर ।

मित्र न जानो बैरी पूरा ।
 गुरुभक्ती से डारे दूरा ॥ ४ ॥
 दारा^१ सुत सम्पति परिवारा ।
 डारे काम क्रोध की धारा ॥ ५ ॥
 इन्द्री भोग बास^२ भरमावे ।
 भक्ति बिबेक नाश करवावे ॥ ६ ॥
 सतगुरु प्रीतम मिलें न जब तक ।
 कभी न छूटें मन के कौतुक^३ ॥ ७ ॥
 छल बल मन के कहाँ लग बरनूँ ।
 ऋषी मुनी कोइ जाने न मरमूँ^४ ॥ ८ ॥
 ताते सतगुरु खोजो निज के ।
 बिन सतगुरु कोइ चले न बच के ॥ ९ ॥
 सतगुरु सम प्रीतम नहि कोई ।
 मन मलीन को धोवें^५ वोही ॥ १० ॥
 मेरा भाग उदय हुआ भारी ।
 सतगुरु की मैं हुई अति प्यारी ॥ ११ ॥
 जक्क जीव कहा^६ जानें महिमा ।
 बेद कतेब न जानें मरमा^७ ॥ १२ ॥
 ज्ञानी जोगी सब थक हारे ।
 सतगुरु महिमा कोइ न बिचारे ॥ १३ ॥

१—छी । २—बासना । ३—खेल, छल कपट । ४—मर्म, भेद ।

५—निर्मल करें । ६—क्या । ७—भेद ।

ताते सतगुरु सरन पुकारूँ ।
 आरत उनकी नित प्रति धारूँ ॥१४॥
 आरत करूँ प्रेम से जब ही ।
 कुल परिवार तरे मेरा तब ही ॥१५॥
 आरत बिधि अब करूँ सिंगारा ।
 राधास्वामी मेरे हुए दयारा ॥१६॥
 राधास्वामी परम दयाल ।
 कर आरत उन हुआ निहाल ॥१७॥

१—शब्द ६५

अरे मन रँग जा सतगुरु प्रीत ।
 होय मत और किसी का मीत^१ ॥ १ ॥
 यही अब धारो हित कर चीत^२ ।
 बिना गुरु जानो सभी अनीत^३ ॥ २ ॥
 गुरू से लेना जा उन सीत^४ ।
 तजो सब कलमल^५ रहो अतीत^६ ॥ ३ ॥
 मार लो मन को यही पलीत^७ ।
 सुरत में धरो शब्द की रीत ॥ ४ ॥
 चढ़ो तुम नभ में यह जग जीत ।
 गहो अब संतन की यह नीत^८ ॥ ५ ॥

१—मित्र । २—चित्त में । ३—अन्याय । ४—सीत प्रसाद । ५—काल का मैल ।
 ६—मोह माया से परे, निर्माया । ७—पाजी । ८—नीति यानी रीति-व्यवहार ।

गुरू का नाम सँभारो चीत^१ ।

लगाओ छिन छिन उनसे प्रीति ॥ ६ ॥

गायें राधास्वामी यह निज गीत ।

तजो सब छल बल ममता तीत^२ ॥ ७ ॥

१—शब्द ६६

गुरू की मौज^३ रहो तुम धार ।

गुरू की रजा^४ सँभालो यार^५ ॥ १ ॥

गुरू जो करें सो हितकर जान ।

गुरू जो कहें सो चित धर मान ॥ २ ॥

शुकर^६ की करना समझ बिचार ।

सुख दुख देंगे हिकमत^७ धार ॥ ३ ॥

ताड़^८ और मार करें सोइ प्यार ।

भोग सब इन्द्री रोग निहार^९ ॥ ४ ॥

कहूँ क्या दम दम शुकरगुजार ।

बिना उन और न करनेहार ॥ ५ ॥

दुखी चित से न हो दुख लार^{१०} ।

सुखी होना नहीं सुख जार^{११} ॥ ६ ॥

बिसारो^{१२} मत उन्हें हर बार ।

दुख और सुख रहो उन धार ॥ ७ ॥

१—चित्त में । २—माया । ३—मर्जी । ४—प्रसन्नता । ५—मित्र ।

६—शुकराना । ७—मसलहत । ८—ताड़ना । ९—समझो ।

१०—दुख लार—दुःख के साथ । ११—जाल । १२—भुलाओ ।

गुरु और शब्द ये दोऊ मीत ।
 नहीं कोइ और, इन धर चीत ॥ ८ ॥
 यही सतपुरुष यही करतार^१ ।
 लगावें तोहि एक दिन पार ॥ ९ ॥
 बिना उन कोई नहीं संसार ।
 देव मन सूरत उन पर वार ॥ १० ॥
 करें वह नित तेरी सार^२ ।
 तेरे तन मन के हैं रखवार^३ ॥ ११ ॥
 शुकर कर राख हिरदे धार ।
 मिटावें दुख सब ही भाड़^४ ॥ १२ ॥
 करें क्या मन तेरा नाकार^५ ।
 नहीं तू छोड़ता बिष धार ॥ १३ ॥
 भोग में गिरे बारम्बार ।
 न माने कहन उनकी सार^६ ॥ १४ ॥
 इसी से मिले तुझको दंड ।
 नहीं तू मानता मतिमंद^७ ॥ १५ ॥
 सहो अब पड़े जैसी आय ।
 करो कर्याद गुरु से जाय ॥ १६ ॥
 पकड़ फिर उन ही को तू धाय ।
 करेंगे वो ही तेरी सहाय^८ ॥ १७ ॥

१—कर्त्ता-धर्त्ता । २—रक्षा । ३—रक्षक । ४—एक एक करके सभी ।

५—निकम्मा । ६—उत्तम । ७—बेवकूफ । ८—मद्द ।

बिना उन और नहीं दरबार ।

रहो उन चरन में हुशियार ॥१८॥

गुनह^१ तुम किये दिन और रात ।

गुरू की कुछ न मानी बात ॥१९॥

इसी से भोगते दुख घात^२ ।

बचावेंगे वही फिर तात^३ ॥२०॥

रहो राधास्वामी के तुम साथ ।

लगे फिर शब्द अगम^४ तुम हाथ ॥२१॥

१—शब्द ६७

आज सखि काज करो कुछ अपना ।

गुरु दरस तको^१ छोड़ो जग सुपना ॥ १ ॥

नहिं पछितइहो सिर धुन^२ रोइहो ।

जम की नगरिया अनेक दुख सहिहो ॥ २ ॥

मानो बचन सुनो धर^३ कान ।

सुरत लगाय सुनो धुन तान ॥ ३ ॥

नहिं मर मर जन्मो चारों खान ।

मान मान अब मेरी कही मान ॥ ४ ॥

गुरु के चरन का कर तू ध्यान ।

शान^४ गुमान^५ छोड़ अभिमान ॥ ५ ॥

१—पाप । २—चोट । ३—पिता । ४—दुर्लभ । ५—देखो । ६—पीट कर ।

७—दे कर । ८—शेखी, अकड़ । ९—घमंड ।

गुरु बिन तेरा कौन सहाई ।
 नाम बिना को पार लगाई ॥ ६ ॥
 आज काज कर गुरु सँग भाज ।
 सूना^१ पड़ा तेरा तख्त और ताज ॥ ७ ॥
 शब्द पिछान^२ सुरत निज साज^३ ।
 छोड़ जक्क और कुल की लाज ॥ ८ ॥
 मन और सुरत गुरु सँग माँज^४ ।
 नहिं फिर खुलिहै तेरा पाज^५ ॥ ९ ॥
 कूड़ फटक^६ ले गुरु का छाज^७ ।
 भोग बिलास छोड़ यह खाज^८ ॥ १० ॥
 राधास्वामी कही बनाई ।
 जो नहिं मानो भुगतो भाई ॥ ११ ॥

१—शब्द ६८

कोमल चित्त दया मन धारो ।
 परमारथ का खोज लगाना ॥ १ ॥
 इन्द्री थान विषय^१ को त्यागो ।
 सुरत शब्द में नित्त लगाना ॥ २ ॥
 सार पदार्थ गुरु से पाओ ।
 चरन कँवल में प्रीति बढ़ाना ॥ ३ ॥

१—खाली । २—पहचान कर । ३—सँवारो । ४—निर्मल कर । ५—कलई ।

६—साक़ कर ले । ७—सूप । ८—खुजली का रोग । ९—इन्द्री...

विषय—वे विषय जिनमें इन्द्रियाँ फँसी रहती हैं ।

धारा अगम पकड़ सुत जोड़ो ।

इस सतसँग में सदा समाना^१ ॥ ४ ॥

चली सुरत नभ द्वारा भाँका ।

अंडा^२ तीन लोक दरसाना ॥ ५ ॥

परे जाय ब्रह्मंड समानी ।

सुन्न सरोवर कँवल खिलाना ॥ ६ ॥

अब तो काल कला^३ सब हारा ।

मानसरोवर पैठ^४ अन्हाना ॥ ७ ॥

अक्षर रूप निरखती चाली ।

छोड़ दिया अब देश बिगाना^५ ॥ ८ ॥

सूरत साफ़ उड़ी ऊँचे को ।

छूट गया सब महल पुराना ॥ ९ ॥

आगे चढ़ चढ़ अधर समानी ।

शब्द शब्द का मर्म पिछाना^६ ॥ १० ॥

संत बिना कोई समझे नहीं ।

आगे जो जो भेद दिखाना ॥ ११ ॥

कहने में आवे नहिं पूरा ।

उलटा सुलटा^७ करत बखाना ॥ १२ ॥

बाचक^८ अपनी उक्ति लगावें^९ ।

अमल^{१०} बिना नहिं बूझ बुझाना ॥ १३ ॥

१—लीन होना । २—अंड के । ३—दाव । ४—घुस कर । ५—दूसरे का ।

६—समझा । ७—जैसा तैसा । ८—बाचक ज्ञानी । ९—उक्ति लगावें—

बातें बनाते हैं । १०—साधन ।

संतन की गति संतहि जानें ।
 और कहो कैसे पहिचाना ॥१४॥
 अपनी उक्ति चतुरता त्यागो ।
 संत बचन को करो प्रमाना^१ ॥१५॥
 वह कहते देखी निज^२ अपनी ।
 तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ॥१६॥
 राधास्वामी सबसे कहते ।
 संत भेद कोइ भेदी जाना ॥१७॥

१—शब्द ६६

गुरु क्यों न सँभार ।
 तेरा नर तन बीता भर्म में ॥ १ ॥
 दारा सुत परिवार ।
 ठगियन सँग क्यों खोवई^३ ॥ २ ॥
 क्यों नहि करत बिचार ।
 जग मिथ्या यह है सही ॥ ३ ॥
 मन है बड़ा गँवार, मोहरहा कर प्यार ।
 छूटे कैसे जार^४ से ॥ ४ ॥
 बिन गुरु चले न दाव ।
 थाके सभी उपाव कर ॥ ५ ॥

१—करो प्रमाना—सही मानो । २—स्वाप्त । ३—मनुष्य-शरीर को क्यों
 व्यर्थ खोता है ? ४—जाल ।

नाम सँभारो^१ मीत^२ ।
 धीरज धर घट में रहो ॥ ६ ॥
 मौज निहारो पीव^३ ।
 जो करिहैं सो सब भला ॥ ७ ॥
 तेरी बुद्धि मलीन ।
 मन चंचल घाटा गहे^४ ॥ ८ ॥
 तू नहिं जाने भेद ।
 भर्म जाल में फँस रहा ॥ ९ ॥
 याते कर बिस्वास ।
 गुरु बिन और न दूसरा ॥ १० ॥
 गुरु का घाट^५ निहार ।
 सुरत बाँध निज शब्द में ॥ ११ ॥
 शब्द बिना कोइ नाहिं ।
 जो काढ़े^६ इस फंद से ॥ १२ ॥
 ताते शब्द किवाड़ ।
 खोलो गुरुकुंजी पकड़ ॥ १३ ॥
 महल माहिं धस जाय ।
 गुरुमुख को रोके^७ नहीं ॥ १४ ॥
 मनमुख भटका खाय ।
 चढ़ उतरे, गिर गिर पड़े ॥ १५ ॥

१—पकड़ लो । २—हे मित्र । ३—मालिक । ४—घाटा गहे—नुकसान की
 बात करता है । ५—गति । ६—निकाले ।

ठीका^१ ठौर न पाय ।
 क्योंकर गुरु समझावहीं ॥१६॥
 मन मत छोड़े नाहिं ।
 गुरु को दोष लगावही ॥१७॥
 गुरु जो कहें उपाव ।
 उसमें मन बाँधे^२ नहीं ॥१८॥
 क्योंकर होय निबाह ।
 जम धक्के खावत फिरे ॥१९॥
 राधास्वामी कहत सुनाय ।
 मन बैरी को मीत^३ कर ॥२०॥

१—शब्द ७०*

प्रेमी सुनो प्रेम की बात ॥ टेक ॥
 सेवा करो प्रेम से गुरु की ।
 और दर्शन पर बल बल जात^४ ॥ १ ॥
 बचन पियारे गुरु के ऐसे ।
 जस माता सुत तोतरि^५ बात ॥ २ ॥
 जस कामी को कामिन^६ प्यारी ।
 अस गुरुमुख को गुरु का गात^७ ॥ ३ ॥

१—ठिकाना । २—लगाता । ३—मित्र । ४—बल बल जात—कुरबान

हो जाओ । ५—तुतली । ६—स्त्री । ७—शरीर ।

*इस शब्द के ढंग पर परम गुरु हुजूर महाराज ने भी

एक शब्द रचा है ।

खाते पीते चलते फिरते ।
 सोवत जागत बिसर' न जात ॥ ४ ॥
 खटकत^३ रहे भाल^३ ज्यों हियरे ।
 दर्दों के ज्यों दर्द समात ॥ ५ ॥
 ऐसी लगन गुरू सँग जाकी ।
 वह गुरुमुख परमारथ पात ॥ ६ ॥
 जब लग गुरु प्यारे नहिं ऐसे ।
 तब लग हिरसी^४ जानो जात ॥ ७ ॥
 मनमुख फिरे किसी का नहीं ।
 कहो क्योंकर परमारथ पात ॥ ८ ॥
 राधास्वामी कहत सुनाई ।
 अब सतगुरु का पकड़ो हाथ ॥ ९ ॥

२—शब्द ७१*

खोजी सुनो सत्त की बात ॥ टेक ॥
 सतसँग करो चित्त दे गुरु का ।
 और बचन उन हिये समात ॥ १ ॥
 भेद भाव जब गुरू सुनावें ।
 सुन सुन मन चरनन उमँगात ॥ २ ॥

१—भूल । २—चुभता । ३—बरछी । ४—देखादेखी इच्छा उठाने वाला ।

*परम गुरु हुजूर महाराज का यह शब्द परम गुरु हुजूर स्वामी
 जी महाराज के उस शब्द के ढंग पर है जो सफा १४३
 पर प्रारंभ होता है ।

जस लोभी को दाम^१ पियारा ।
 अस खोजी को गुरु की बात ॥ ३ ॥
 सोवत जागत याद न बिसरत ।
 गुरु दरशन को मन अकुलात^२ ॥ ४ ॥
 दरद उठे छिन छिन हिये माहीं ।
 नित बड़े परमारथ चाट^३ ॥ ५ ॥
 ऐसी लगन लाय जो खोजी ।
 सो सतगुरु से पावे दात ॥ ६ ॥
 जब लग लगन न होवे साँची ।
 हिरसी^४ कपटी जानो जात ॥ ७ ॥
 माया चेरा^५ गुरु का नाहीं ।
 सो कस^६ प्रेम की दौलत पात ॥ ८ ॥
 काल करम के धक्के खावे ।
 जम खूँदे नित धर धर लात ॥ ९ ॥
 जगत मोह तज साँचे मन से ।
 अब राधास्वामी का कर तू साथ ॥ १० ॥

१—शब्द ७२*

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे ।
 कर्म जगात^१ चुकाय ॥ १ ॥

१—धन । २—व्याकुल होता है । ३—चस्का । ४—देखा देखी काम करने वाला । ५—दास । ६—कैसे । ७—जकात यानी महसूल, कर ।

*इस शब्द के ढंग पर परम गुरु हुजूर महाराज ने भी एक शब्द रचा है ।

भूल भ्रम में सब जग पचता^१ ।

अचरज बात न काहू^२ सुहाय ॥ २ ॥

भागहीन सब जग माया बस ।

यह निर्मल गति कोई न पाय ॥ ३ ॥

जिन पर दया आदि करता^३ की ।

सो यह अमृत पीवन^४ चाहि ॥ ४ ॥

कहाँ लग महिमा कहूँ इस गति की ।

बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि ॥ ५ ॥

बिन गुरु चरन और नहिं भावे ।

इस आनंद में रहे समाय ॥ ६ ॥

दर्शन करत पिंड सुधि भूली ।

फिर घर बाहर सुधि क्या आय ॥ ७ ॥

ऐसी सुरत प्रेमरँग भीनी^५ ।

तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय ॥ ८ ॥

जोग बैराग ज्ञान सब रूखे ।

यह रस उनमें दीखे न ताय^६ ॥ ९ ॥

बड़भागी कोई बिरला प्रेमी ।

तिन यह न्यामत^७ मिली अधिकाय ॥ १० ॥

राधास्वामी कहत सुनाई ।

यह आरत कोइ गुरुमुख गाय ॥ ११ ॥

१—परेशान होता । २—किसी को । ३—आदि करता—आदि कर्त्ता, राधास्वामी दयाल । ४—पीना । ५—भीगी हुई । ६—उसको । ७—दुर्लभ पदार्थ ।

२-शब्द ७३*

सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे ।
 क्यों जम हाट^१ बिकाय ॥ १ ॥
 करम धरम में सब जिव अटके ।
 गुरु सँग हेत^२ न कोई लाय ॥ २ ॥
 भागहीन सब पड़े कालबस ।
 गुरु दयाल की सरन न आय ॥ ३ ॥
 जिन पर मेहर करें राधास्वामी ।
 उन हिरदे यह बचन समाय ॥ ४ ॥
 गुरु चरनन की क्या कहूँ महिमा ।
 बिरले प्रेमी ध्यावत ताय^३ ॥ ५ ॥
 भाव भक्ति कोई क्या दिखलावे ।
 निज कर रहे चरन लिपटाय ॥ ६ ॥
 सतगुरु रूप निरख हिये अंतर ।
 तन मन की सब सुधि विसराय^४ ॥ ७ ॥
 ऐसी सुरत पिरेमी जाकी ।
 तिन गुरु मेहर मिली अधिकाय ॥ ८ ॥
 जोगी ज्ञानी और बैरागी ।
 यह सब झूठे ठौर न पाय ॥ ९ ॥

१-बाज़ार । २-प्रेम । ३-उनको । ४-भूल जावे ।

*परम गुरु हुजूर महाराज का यह शब्द परम गुरु हुजूर
 स्वामीजी महाराज के शब्द के ढंग पर है जो सफा
 १४५ पर प्रारंभ होता है ।

बड़ा भाग उन प्रेमी जागा ।
 जिनको लिया गुरु गोद बिठाय ॥१०॥
 राधास्वामी चरन धार हिये अंतर ।
 यह आरत अनुरागी^१ गाय ॥११॥

२—शब्द ७४

निज रूप का जो तू प्रेमी है ।
 कर जुगत जगत से हो न्यारा ॥
 बिन मेहर गुरु नहिं काज सरे^२ ।
 सतगुरु का हो जा निज प्यारा ॥ १ ॥
 गुरु पल पल तेरी सार^३ करें ।
 करमों का काटें सिर भारा ॥
 और छिन छिन तुझपर दया करें ।
 तेरी सुरत चढ़ावें भौ पारा ॥ २ ॥
 तब घट में देख बहार नई ।
 जहाँ पचरंगी^४ फुलवार खिली ॥
 और जगमग जगमग जोत बली^५ ।
 घंटा और शंख बजे न्यारा ॥ ३ ॥
 सुखमन में होय नल बंक धसी ।
 त्रिकुटी गुरु पद में जाय बसी ॥

१—प्रेमी । २—बने । ३—रक्षा । ४—पाँच तत्त्वों के पाँच रंगों की ।

५—जलती है ।

और ओंकार धुन संग रसी^१ ।
 जहाँ गर्ज मेघ होय अति भारा ॥ ४ ॥
 वहाँ से भी आगे चटक^२ चली ।
 धुन ररंकार में जाय पिली ॥
 हंसन संग रलियाँ करत मिली ।
 जहाँ अमृत बरसे चौधारा ॥ ५ ॥
 महासुन्न गई चढ़ भँवर रही ।
 धुन सोहँग मुरली अधर लई ॥
 फिर सत्तलोक सत शब्द रली^३ ।
 जहाँ बीन बजे धुन निज सारा ॥ ६ ॥
 वहाँ से भी आगे सुरत चली ।
 घर अलख अगम को निहार रही ॥
 फिर राधास्वामी चरन मिली ।
 और पाय गई प्रीतम प्यारा ॥ ७ ॥

२-शब्द ७५

देखो री कोइ सुरत रंगीली ।
 चिंता में रहे है अचिंत^१ री ॥ १ ॥
 भीड़ भाड़ संग नित उठ बरते ।
 अंतर रहे एकंत^२ री ॥ २ ॥

१-सराबोर हुई । २-तेजी से । ३-मिली । ४-चिंता रहित ।

५-सब से अलग ।

मन माया की घात बचा कर ।
 चलत नित्त गुरु पंथ री ॥ ३ ॥
 सुरत डोर लागी रहे निसदिन ।
 चरन कँवल प्रिय कंत^१ री ॥ ४ ॥
 ऐसी लगन लगी जिन गुरुमुख ।
 सोइ पावे पद अंत री ॥ ५ ॥
 राधास्वामी हुए हैं सहाई ।
 दीनी भक्ति पुखंत^२ री ॥ ६ ॥
 मैं तो नीच निकाम अनाड़ी ।
 दान दिया निज मंत^३ री ॥ ७ ॥

२—शब्द ७६

आज तजो सुरत निज मन का मान^४ ॥ टेक ॥
 इसी मान ने जग भरमाया ।
 यही मान करे सब की हान ॥ १ ॥
 अहँग बुद्धि परदा है भारी ।
 निज सरूप गुरु कभी न दिखान ॥ २ ॥
 मान मनी^५ जिस घट में भरिया ।
 हिये नैन वाके^६ कभी न खुलान ॥ ३ ॥
 याते सबको ऐसा चाहिये ।
 अपनी कसर नित निरखें आन ॥ ४ ॥

दीन होय गिर सतगुरु चरना ।
 अपने को जानो अनजान ॥ ५ ॥
 तब सतगुरु और साध दया कर ।
 भेद सुनावें अधर ठिकान ॥ ६ ॥
 प्रीति सहित उन सतसँग करना ।
 रहनी उन अनुसार रहान ॥ ७ ॥
 सुन उन बचन भाव जग त्यागो ।
 सुरत शब्द का गहो निशान^१ ॥ ८ ॥
 दास अंग ले सेवा करना ।
 ताड़ मार उन सहो निदान ॥ ९ ॥
 काम क्रोध को मन से तजना ।
 सील छिमा चित माहिं बसान ॥ १० ॥
 जो कोई बचन कहें तोहि कडुवा ।
 और कोइ तान और दोष लगान ॥ ११ ॥
 नीच निकाम समझ आपे^२ को ।
 तौ भी उनसे मन न फिरान^३ ॥ १२ ॥
 कोई बात से मन नहिं उलटे ।
 गुरु को नित तू गुरु ही जान ॥ १३ ॥
 भय और भाव^४ सदा उन राखो ।
 बचन सुनो उन चित से आन ॥ १४ ॥

१—गहो निशान—निशाना बाँधो । २—अपने आप को ।

३—हटावे । ४—विश्वास ।

बचन अनुसार करो तुम करनी ।
 गहनी रहनी संग मिलान^१ ॥१५॥
 अस अस भाव लाय जो गुरु से ।
 उसको दें अपनी पहिचान ॥१६॥
 उमँग उमँग करे सेवा निसदिन ।
 हरख हरख करे दरशन आन ॥१७॥
 दिन दिन जागे प्रीति नवीना^२ ।
 धर परतीत करे उन ध्यान ॥१८॥
 दीन होय मन बस में आवे ।
 शब्द माहिं तब सुरत समान ॥१९॥
 प्रेम धार नित घट में जारी ।
 दिन दिन अनुभव सहज जगान ॥२०॥
 रहन गहन^३ गुरुमुख की गाई ।
 गुरुमुख होय सो ले पहिचान ॥२१॥
 राधास्वामी मेहर रहे नित संगी ।
 सहज सहज पट अधर^४ खुलान ॥२२॥
 जोत निरख पहुँचे गगनापुर ।
 सुन्न परे मुरली सुन तान ॥२३॥
 सत्तनूर सतपुर जाय निरखै ।
 अलख अगम के महल बसान ॥२४॥

१—गहनी मिलान—उपदेश के अनुसार जीवन बनाओ । २—नई ।

३—रहनी गहनी । ४—पट अधर—अंतर के परदे ।

वहाँ से धुर घर पहुँचे छिन में ।
राधास्वामी चरन परस^१ मगनान^२ ॥२५॥

२—शब्द ७७

कोइ करो गुरु का सतसँग आज ॥ टेक ॥
जो जग सँग तुम रहो लिपटाई ।
परमारथ का होय अकाज^३ ॥ १ ॥
जम के दूत सतावें तुमको ।
लख^४ चौरासी नचावें नाच ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसँग ।
छोड़ जगत और कुल की लाज ॥ ३ ॥
प्रीति करो उन चरनन गहिरी ।
भक्ति भाव का पाओ साज^५ ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ ।
त्रिकुटी जाय करो वहाँ राज ॥ ५ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दातार^६ ।
करें मेहर से पूरन काज ॥ ६ ॥

१—स्पर्श करके । २—प्रसन्न होवे । ३—नुकसान । ४—लाख (प्राचीन

ग्रंथों में जीवों की चौरासी लाख योनियाँ मानी गई हैं ।)

५—सामान । ६—दाता ।

२—शब्द ७८

कोइ सुनो हिये में गुरु संदेश ॥ टेक ॥

धार अधर^१ से नित चल आवत ।

तू रहा लिपट करम के देश^२ ॥ १ ॥

मोह नींद में जुग जुग सोता ।

भोगत रहे नित काल कलेश ॥ २ ॥

माया काल पड़े तेरे पीछे ।

दुखी रखत तोहि और दिलरेश^३ ॥ ३ ॥

सतगुरु खोज उन बचन सँभालो ।

छोड़ो जगत के भोग और ऐश ॥ ४ ॥

सुरत शब्द की धारो जुगती ।

त्यागो मन से काम और तैश^४ ॥ ५ ॥

प्रीति करो गाढ़ी गुरु चरनन ।

कपट छोड़ धर हंसा भेष ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया धार अब मन में ।

मिल चरनन से कर आदेश^५ ॥ ७ ॥

१—ऊपर । २—करम के देश—मृत्यु लोक से मतलब है । ३—पीड़ित हृदय । ४—क्रोध । ५—बंदगी ।

२—शब्द ७६

जाग री मेरी प्यारी सुरतिया ।

गुरु चरनन में लाग री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

भूल भरम में बहु दिन बीते ।

अब उठ जग से भाग री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥

दुर्लभ दर्शन मिले भाग से ।

नैन कँवल गुरु ताक^१ री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥

तिल अंतर सुर्त जोड़ अधर चढ़ ।

सुन ले अनहद राग^२ री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

सहसकँवल होय धाय गगन पर ।

मारो काला नाग^३ री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

सुन्न में जाय हुई अब निर्मल ।

छूटी संगत काग^४ री ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
 दीना तोहि सुहाग री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

२-शब्द ८०

आवो गुरु दरबार री ।
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥
 जगत अगिन में क्यों तू जलती ।
 न्हावो सीतल धार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥
 सतसँग कर गुरु का हित चित से ।
 जग भय भाव बिसार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥
 बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
 तन मन चरनन वार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥
 नाम दान सतगुरु से लेकर ।
 करनी करो सँभार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥
 बिमल प्रकाश लखो घट अंतर ।
 सुन अनहद भनकार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी सरन धार हिये अपने ।
 कर ले जीव उपकार री ॥
 मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

२—शब्द ८१

आज पकड़ो गुरु के चरन सँभार ॥ टेक ॥
 बिन गुरु तेरा और न कोई ।
 वो ही हैं तेरे रखवार ॥ १ ॥
 कब लग^१ मन सँग खाव भकोले ।
 कब लग भरमो जग की लार^२ ॥ २ ॥
 जगत भोग सब रोग पहिचानो ।
 इनकी चाह मन से तज डार ॥ ३ ॥
 दृढ़ परतीत धरो गुरु चरनन ।
 और बढ़ाओ दिन दिन प्यार ॥ ४ ॥
 तेरा काज करेंगे वो ही ।
 गफलत तज अब हो हुशियार ॥ ५ ॥
 घट में थिर^३ होय करो कमाई ।
 सुनो सुरत से धुन भनकार ॥ ६ ॥
 राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
 पहुँचावें तोहि धुर दरबार ॥ ७ ॥

२—शब्द ८२

गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात ॥ टेक ॥

सतगुरु हैं हितकारी तेरे ।

और वो ही हैं पित और मात ॥ १ ॥

दया मेहर से बचन सुनावें ।

उनका सतसँग कर दिन रात ॥ २ ॥

मन माया ने घेरा डाला ।

जीव की करते बहु बिधि घात^१ ॥ ३ ॥

बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।

दृढ़ कर पकड़ो उनका हाथ ॥ ४ ॥

वे दयाल तोहि लेहैं सँभारी ।

काल करम से दूटे नात^२ ॥ ५ ॥

अपना बल दे भजन करावें ।

सुरत शब्द मारग दरसात ॥ ६ ॥

राधास्वामी धाम लखावें ।

धुन सँग सूरत अधर चढ़ात ॥ ७ ॥

२—शब्द ८३

गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत ॥ टेक ॥

भाव^३ सहित सतसँग कर उनका ।

धार हिये में गहिरी प्रीत ॥ १ ॥

सुरत शब्द की जुगत बतावें ।
 और सिखावें भक्ती रीत ॥ २ ॥
 करम भरम से खूँट छुड़ावें^१ ।
 और करें तेरा निरमल चीत^२ ॥ ३ ॥
 जो तू गुरु के बचन सँभारे ।
 जावे निज घर भौजल जीत ॥ ४ ॥
 राधास्वामी चरन पकड़ ले दृढ़ कर ।
 वो ही हैं तेरे सच्चे मीत^३ ॥ ५ ॥

२—शब्द ८४

गुरु प्यारे की प्रीति प्यारी हिरदे धार ॥ टेक ॥
 जगत मोह दुखदाई जानो ।
 मन से उसको तू तज डार ॥ १ ॥
 कुटुंब जगत की प्रीति न साँची ।
 स्वारथ सँग सब लगे लवार^४ ॥ २ ॥
 निज घर की अब सुद्ध^५ सँभालो ।
 शब्द भेद ले गुरु से सार ॥ ३ ॥
 प्रेम सहित उन जुगत कमाओ ।
 घट में सुन अनहद भनकार ॥ ४ ॥

१—खूँट छुड़ावें—संबंध छुड़ाते हैं । २—चित्त । ३—मित्र ।

४—भूटे । ५—सुध, याद ।

राधास्वामी मेहर से पार लगावें ।

उनके चरन का कर आधार ॥ ५ ॥

२—शब्द ८५

गुरु प्यारे के चरनों की हो धूर ॥ टेक ॥

दीन होय गुरु सन्मुख आवो ।

जग परमारथ जानो कूड़^१ ॥ १ ॥

देवी देवा भाव बिसारो ।

साखा तज अब पकड़ो मूर^२ ॥ २ ॥

गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें ।

घट में सुनावें अनहद तूर^३ ॥ ३ ॥

प्रेम सहित जब जुगत कमावे ।

देखै नभ में अद्भुत नूर^४ ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सरन गहो दृढ़ कर ।

मेहर करें तुझपर भरपूर ॥ ५ ॥

२—शब्द ८६

गुरु प्यारे से मिलना उमँग उमँग ॥ टेक ॥

चित दे सुनो गुरु के बचना ।

सीखो उनसे भक्ती ढंग ॥ १ ॥

करम भरम सब दूर निकारो ।
 छोड़ो सबहि कुसंग ॥ २ ॥
 सुरत लगाय सुनो घट धुन को ।
 चढ़ै प्रेम का रंग ॥ ३ ॥
 गुरु का बल ले चढ़ो गगन को ।
 काल कर्म रहे दंग^१ ॥ ४ ॥
 दीन हीन मोहि चीन्ह दया से ।
 राधास्वामी मिलाया अपने अंग ॥ ५ ॥

२—शब्द ८७

गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़ ॥ टेक ॥
 या जग में साँचा सुख नाहीं ।
 काल करम का मच रहा शोर ॥ १ ॥
 मन इन्द्री लागे भोगन में ।
 काम क्रोध का भारी जोर ॥ २ ॥
 याते बेग^२ गिरो गुरु चरनन ।
 सतसँग करो कपट को छोड़ ॥ ३ ॥
 दीन होय ले शब्द उपदेशा ।
 सुन ले घट में अनहद घोर^३ ॥ ४ ॥

१—आश्चर्य में । २—शीघ्र, जल्दी । ३—शब्द ।

दया होय तब चढ़ै अधर में ।
 राधास्वामी चरनन पावे ठौर' ॥ ५ ॥

२—शब्द ८८

गुरु प्यारे से प्यारी लगन^१ लगाय ॥ टेक ॥
 जग का मोह छुड़ावें दिन दिन ।
 भोग बासना सहज हटाय ॥ १ ॥
 बचन सुना तेरे भरम मिटावें ।
 मन और सूरत देहैं जगाय ॥ २ ॥
 घट में सहज करावें करनी ।
 सुरत शब्द की जुगत बताय ॥ ३ ॥
 उमँग जगाय करावें सेवा ।
 दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाय ॥ ४ ॥
 इक दिन मेहर करें गुरु प्री ।
 राधास्वामी पद में दें पहुँचाय ॥ ५ ॥

२—शब्द ८९

गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री ॥ टेक ॥
 धर बिस्वास गुरु का प्यारी ।
 चरन सरन में धाओ री ॥ १ ॥

जो कुछ दया करें गुरु प्यारे ।
 चित से कभी न भुलाओ री ॥ २ ॥
 भूल भ्रम को दूर निकारो ।
 प्रेम चरन में लाओ री ॥ ३ ॥
 नित भजन कर गुरु प्यारे का ।
 धुन में सुरत लगाओ री ॥ ४ ॥
 छिन छिन मेहर परख सतगुरु की ।
 राधास्वामी चरन समाओ री ॥ ५ ॥

२—शब्द ६०

गुरु प्यारे का सँग कर जग से भाग ॥ टेक ॥
 जब लग मन अटका^१ रहे जग में ।
 बड़े न चित में बिमल^२ अनुराग^३ ॥ १ ॥
 काम क्रोध मद दूर बहावो ।
 छोड़ देव संगत मन काग^४ ॥ २ ॥
 निरमल चित होय कर सतसंगा ।
 गुरु चरनन में लाओ राग^५ ॥ ३ ॥
 शब्द संग तुम सुरत सँवारो ।
 उमँग उमँग घट धुन में लाग ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति जगाय हिये में ।

राधास्वामी सँग नित खेलो फाग ॥ ५ ॥

१—शब्द ६१

गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान ॥ टेक ॥

वो ही हैं तेरे साँचे मीता^१ ।

वही हैं चेतन पुरुष सुजान ॥ १ ॥

वही हैं बंद^२ छुड़ावनहारे ।

वही सच्चे हितकारी जान ॥ २ ॥

बचन सुनो उन हिये धर प्यारा ।

आज्ञा उनकी चित से मान ॥ ३ ॥

अंतरमुख करो शब्द कमाई ।

गुरु स्वरूप का धारो ध्यान ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति बढ़ाओ दिन दिन ।

गुरु प्रसन्नता लेवो आन ॥ ५ ॥

सहज सहज निरमल होय सूरत ।

शब्द शब्द सँग अधर^३ चढ़ान ॥ ६ ॥

दया करें जब राधास्वामी ।

निज घर अपने जाय बसान^४ ॥ ७ ॥

२—शब्द ६२

गुरु प्यारे सिखावें भक्ती रीत ॥ टेक ॥
निरमल भक्ति रीत है भीनी^१ ।

कौन सिखावे बिन गुरु मीत ॥ १ ॥
कुल मालिक का भेद सुना कर ।

चरन कँवल में लगावें प्रीत ॥ २ ॥
मालिक से मालिक को चाहे ।

यही है निरमल भक्ती रीत ॥ ३ ॥
और चाह सब दूर बहावो ।

चरन गहो तज माया तीत^२ ॥ ४ ॥
गुरु सतगुरु मालिक को जानो ।

वही हैं संत और वही अतीत^३ ॥ ५ ॥
धर परतीत करो दृढ़ प्रीती ।

त्यागो जग की चाल अनीत^४ ॥ ६ ॥
शब्द संग मन सुरत चढ़ाओ ।

सतगुरु बल धर अपने चीत^५ ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर जावो ।

काल करम और माया जीत ॥ ८ ॥

१—सूक्ष्म । २—तीती, कड़वी । ३—मायातीत, माया से परे ।

४—अनुचित । ५—चित्त में ।

२-शब्द ६३

गुरु प्यारे के सँग चलो हे मन यार ॥ टेक ॥

निज घर की वह राह बतावें ।

सुरत शब्द की जुगती सार ॥ १ ॥

राधास्वामी चरनन प्रीति बढ़ावें ।

घट में सुनावें धुन भनकार ॥ २ ॥

परचे दे परतीत दृढ़ावें ।

बचन सुना करें हिये सिंगार ॥ ३ ॥

मन के मैल बिकार^१ निकारें ।

भोग बासना काटें झाड़^२ ॥ ४ ॥

अस^३ करनी कहो कौन करावे ।

बिन गुरु सतगुरु परम उदार^४ ॥ ५ ॥

निरमल होय सुत चढ़ै अधर में ।

मगन होय लख बिमल बहार ॥ ६ ॥

परम बिलास मिला निज घर में ।

राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥

२-शब्द ६४

गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय ॥ टेक ॥

जगत संग मैं रही अजानी ।

चरनन में लिया आप बुलाय ॥ १ ॥

दया भरे मोहि बचन सुनाये ।
 मोह जाल से लिया छुड़ाये ॥ २ ॥
 परमारथ की कदर जनाई ।
 धुन सँग सूरत दीन लगाय ॥ ३ ॥
 प्रेम धार घट भीतर उमँगी ।
 अमृत रस पी रहूँ तृप्ताय^१ ॥ ४ ॥
 राधास्वामी दाता गुरु दयाला ।
 मुझसी अधम^२ को दिया पार लगाय ॥ ५ ॥

२-शब्द ६५

गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय ॥ टेक ॥
 नर देह अजब मिली किरपा से ।
 हित^३ से भक्ती पंथ कमाय ॥ १ ॥
 यह औसर फागुन ऋतु जानो ।
 जीव का अपने काज बनाय ॥ २ ॥
 प्रीति धार करो संग गुरु का ।
 सेवा कर नई उमँग बढ़ाय ॥ ३ ॥
 या विधि होली खेलो गुरु से ।
 प्रेम रंग घट माहि भराय ॥ ४ ॥
 ध्यान धरो घट धुन को साधो^४ ।
 मन और सूरत गगन चढ़ाय ॥ ५ ॥

तन मन धन की धूल उड़ा कर ।

शब्द गुरु से भेंटो^१ जाय ॥ ६ ॥

बिरह अनुराग नवीन जगा कर ।

राधास्वामी प्रीतम लेव रिझाय^२ ॥ ७ ॥

२—शब्द ६६

गुरु प्यारे से होली खेलो आय ॥ टेक ॥

ऐसा फाग रचो मन मेरे ।

धरन गगन में धूम मचाय ॥ १ ॥

सखी सहेली सँग ले अपने ।

प्रेम रंग की बरषा^३ लाय ॥ २ ॥

शब्द शोर होवत घट माहीं ।

राग रागिनी नई बिधि गाय ॥ ३ ॥

मन और सुरत उमँग कर चढ़ते ।

शब्द धुनन सँग केल कराय^४ ॥ ४ ॥

भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से ।

उमँग उमँग राधास्वामी गुन गाय ॥ ५ ॥

१—मिलो । २—प्रसन्न कर लो । ३—वर्षा । ४—केल कराय—
बिलास करते हैं ।

२—शब्द ६७

गुरु प्यारे की मौज रहो तुम धार ॥ टेक ॥

वे हर दम तेरी दया बिचारें ।

निसदिन रक्षा करें सँभार ॥ १ ॥

हँगता^१ ममता भूल और भरमा ।

मन के निकारें सबहि बिकार ॥ २ ॥

जिसमें तेरी होय भलाई ।

स्वारथ और परमारथ सार ॥ ३ ॥

वैसी ही करें मौज दया से ।

दोऊ में हित^२ मानो यार ॥ ४ ॥

चाहे मन माने या नाहीं ।

मौज गुरू की दया निहार ॥ ५ ॥

जिस बिधि^३ राखें उस बिधि रहना ।

शुकर की रखना समझ बिचार ॥ ६ ॥

ऐसी समझ धार रहे मन में ।

सो निरखे गुरु मेहर अपार ॥ ७ ॥

राधास्वामी समरथ और न कोई ।

चरन पकड़ धर प्रेम पियार ॥ ८ ॥

१—अहंकार । २—फायदा, लाभ । ३—तरह ।

२—शब्द ६८

गुरु प्यारे का सँग बड़भागी पाय ॥ टेक ॥

जिन सज्जन गुरु महिमा जानी ।

वे सतसंग करें नित आय ॥ १ ॥

परमारथ की कदर जान कर ।

जग आसा सब दर्ई हटाय ॥ २ ॥

मन इंद्री का सोधन^१ करके ।

राधास्वामी चरनन प्रेम जगाय ॥ ३ ॥

सुरत लगावें शब्द अधर में ।

घट में निसदिन आनंद पाय ॥ ४ ॥

जग का मोह न ब्यापे उनको ।

दुख सुख में रहें चरन धियाय ॥ ५ ॥

प्रीति प्रतीति धार गुरु चरनन ।

सेवा कर लें गुरू रिझाय^२ ॥ ६ ॥

मन इच्छा को रोक जुगत से ।

मगन होय गुरु रज्जा^३ कमाय ॥ ७ ॥

सुखी रहें चरनन में हर दम ।

राधास्वामी प्यारे हुए सहाय ॥ ८ ॥

२—शब्द ६६

गुरु प्यारे के सँग आनँद भारी ॥ टेक ॥
 जग ब्योहार सुहावे नाहीं ।
 छोड़ दई कृत^१ संसारी ॥ १ ॥
 दरशन बचन भजन और सेवा ।
 यह करतूत लगी प्यारी ॥ २ ॥
 मन और सुरत प्रेम रँग भीजें ।
 सुन सुन अनहद झनकारी ॥ ३ ॥
 उमँग उमँग अब चढ़त अधर में ।
 छिन छिन होय तन से न्यारी ॥ ४ ॥
 गुरु सतगुरु पद परस^२ दया से ।
 राधास्वामी चरन सीस धारी ॥ ५ ॥

२—शब्द १००

गुरु प्यारे की कर परतीती ।
 होय जीव उबार ॥ टेक ॥
 संशय भरम निकारो मन से ।
 कर सतसंग बढ़ावो प्यार ॥
 रहो नित हुशियार ॥ १ ॥

काम क्रोध मद लोभ बिकारा ।

इन दूतन का सँग तज डार ॥

गुरु सीख सँभार ॥ २ ॥

गुरु बल सील छिमा चित राखो ।

और संतोष बिबेक बिचार ॥

अस दूतन^१ टार^२ ॥ ३ ॥

शब्द जुगत तुम नित्त कमाओ ।

गुरु मूरत का ध्यान सँभार ॥

घट देख बहार ॥ ४ ॥

मेहर करें राधास्वामी दयाला ।

सुरत चढ़ावें धुन की लार^३ ॥

जाय निज घर बार ॥ ५ ॥

२—शब्द १०१

गुरु प्यारे का धार भरोसा ।

करें कारज पूर ॥ टेक ॥

सुरत शब्द की जुगत कमाओ ।

मेहर से घट में झलके नूर^४ ॥

बाजे अनहद तूर^५ ॥ १ ॥

१—काम, क्रोध इत्यादि । २—दूर करो । ३—धुन के साथ ।

४—प्रकाश । ५—शब्द ।

बिरहन सुरत पाय घट भेदा ।

कार कमावत कर भ्रम चूर^१ ॥

तज मनसा कूर^२ ॥ २ ॥

सुन सुन धुन सूरत मगनानी ।

मस्त हुआ मन सूर^३ ॥

हुई इच्छा दूर ॥ ३ ॥

राधास्वामी दृष्टि दया की डारी ।

काल करम रहे भूर^४ ॥

मिली जाय पद मूर^५ ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर की क्या कहूँ महिमा ।

पहुँच गई धुर धाम हुजूर ॥

हुई चरनन धूर ॥ ५ ॥

२—शब्द १०२

गुरु प्यारे की जुगत कमाओ ।

मन धर कर प्यार ॥ टेक ॥

दीन होय कर सतसँग गुरु का ।

बचन सुनो चित चेत^६ सँभार ॥

उर^७ धारो सार ॥ १ ॥

१—नाश । २—दुष्ट । ३—बहादुर । ४—भुरते रहे । ५—असली पद ।

६—होश । ७—हृदय में ।

संशय छोड़ प्रीति कर गुरु से ।
 दिन दिन उन परतीत सँभार ॥
 सब भ्रम निकार ॥ २ ॥
 जब मन निरमल चित होय निश्चल ।
 शब्द भेद दें सबका सार ॥
 गुरु किरपा धार ॥ ३ ॥
 घेर घुमर^१ घट में मन सूरत ।
 शब्द सुनें चढ़ उलटी धार ॥
 लख बिमल बहार ॥ ४ ॥
 राधास्वामी मेहर से जाय अधर में ।
 सुन्न और महासुन्न के पार ॥
 सत रूप निहार ॥ ५ ॥

२—शब्द १०३

गुरु प्यारे का कर दीदारा^३ ।
 घट प्रीति जगाय ॥ टेक ॥
 गुरु दरशन की महिमा भारी ।
 छिन में कोटिन^३ पाप नसाय ॥
 जिव काज बनाय ॥ १ ॥

बिरही जन कोई जानें रीती ।
 जस दरपन^१ में दरश दिखाय ॥
 हिये रूप बसाय ॥ २ ॥
 ऐसी लगन लगावें जो जन ।
 छिन छिन रहें गुरु चरन समाय ॥
 घट आनंद पाय ॥ ३ ॥
 चरन भेद ले सुरत चढ़ावें ।
 दरशन रस ले रहें तृप्ताय ॥
 धुन शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
 मेहर करें गुरु राधास्वामी प्यारे ।
 एक दिन लें निज चरन लगाय ॥
 धुन घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

२-शब्द १०४

गुरु प्यारे से प्रीति लगाना ।
 मन सरधा^३ लाय ॥ टेक ॥
 जगत भोग सब जान असारा ।
 इनसे हट सतसंग समाय ॥
 गुरु बचन कमाय^३ ॥ १ ॥

भूल भरम और करमा धरमा ।

इनसे नहिं कुछ काज सराय^१ ॥

सब दूर बहाय ॥ २ ॥

उमँग सहित गुरु सेवा धारो ।

मन और सुत धुन संग लगाय ॥

गुरु रूप धियाय ॥ ३ ॥

मेहर से घट में मिले अनंदा ।

दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाय ॥

नई उमँग जगाय ॥ ४ ॥

दया करें गुरु सुरत चढ़ावें ।

सहस्रकँवल लख त्रिकुटी धाय ॥

गुरु शब्द सुनाय ॥ ५ ॥

सुन्न में जाय सुनी धुन सारँग ।

सूरज सेत^२ भँवर^३ दरसाय ॥

सोहँग धुन गाय ॥ ६ ॥

सतगुरु रूप लखे सतपुर में ।

आगे राधास्वामी धाम दिखाय ॥

निज चरन समाय ॥ ७ ॥

२—शब्द १०५

गुरु प्यारे की सेवा धारो ।

तज मन अभिमान ॥ टेक ॥

अस गुरु संग भाग से पइये ।

सेवा कर उन बहुत रिभइये^१ ॥

तन मन कर कुरबान ॥ १ ॥

गुरु पूरे जब दया बिचारें ।

करम भरम सब छिन में टारें^२ ॥

दैं भक्ती दान ॥ २ ॥

निज घट का गुरु भेद बतावें ।

सुरत शब्द का जोग सिखावें^३ ॥

लाय घट में ध्यान ॥ ३ ॥

दीन होय गुरु सतसँग करना ।

मन और सुरत शब्द में धरना ॥

चढ़ अधर ठिकान ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें^४ ।

शब्द शब्द का धाम लखावें^५ ॥

धुर पद दरसान ॥ ५ ॥

१—प्रसन्न करो । २—दूर करें ।

२-शब्द १०६

गुरु प्यारे की सरन सँभारो ।

धर मन परतीत ॥ टेक ॥

बिना सरन कोइ बचे न भाई ।

सरन बिना कोइ घर नहिं जाई ॥

तज माया तीत^१ ॥ १ ॥

जिन जिन सरन गही गुरु पूरे ।

उन ही जाय लखा पद मूरे^२ ॥

ले संतन सीत^३ ॥ २ ॥

जो तुम निज घर जाना चाहो ।

सतगुरु से ले जुगत कमाओ ॥

कर मनुआँ मीत^४ ॥ ३ ॥

दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाओ ।

तन मन धन गुरु भेंट चढ़ाओ ॥

यही है भक्ती रीत ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें^५ ।

मन और सुरत दोऊ तेरे घेरें^६ ॥

दे चरनन प्रीत ॥ ५ ॥

१—कड़वी । २—असली पद । ३—प्रसाद । ४—मित्र ।

५—देखें । ६—एकाम करें ।

शब्द संग सुत अधर चढ़ावें ।
 नभ लख गगन शिखर पहुँचावें ॥
 मन माया जीत ॥ ६ ॥
 मुरली धुन सुन सतपुर धाई ।
 अलख अगम के पार चढ़ाई ॥
 गाऊँ राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

२—शब्द १०७

सतगुरु प्यारे ने दया कर ।
 मोहि लीन उबारी हो ॥ टेक ॥
 जन्म जन्म भोगन में भूली ।
 ऊँच नीच माया सँग भूली' ॥
 रही दुखियारी हो ॥ १ ॥
 इस औसर गुरु सतसँग पाया ।
 मेहर हुई मन चरन समाया ॥
 बचन गुरू उर^१ धारी हो ॥ २ ॥
 जग का रंग देख सब मैला^३ ।
 प्रेमीजन सँग कीन्हा मेला^४ ॥
 भोग लगे सब स्वारी^५ हो ॥ ३ ॥

उमँग उमँग सेवा को धाई ।

घेर फेर मन शब्द लगाई ॥

हुई गुरु प्यारी हो ॥ ४ ॥

अधर चढ़त गई द्वारे दस में ।

भीज रही सुत अमृत रस में ॥

दूर हुए दुख सारी^१ हो ॥ ५ ॥

सोहँग मुरली धुन सुन पाई ।

बीन सुनी सतपुर में जाई ॥

लखी गुरु लीला भारी हो ॥ ६ ॥

अलख अगम गई सुरत प्रवीनी^२ ।

राधास्वामी चरन हुई लौलीनी ॥

हुई सबसे अब न्यारी हो ॥ ७ ॥

२—शब्द १०८

सतगुरु प्यारे ने मेहर से ।

मेरा काज सँवारी हो ॥ टेक ॥

भरमत रही जगत में सारी ।

भोगन सँग सब पूँजी हारी ॥

दुख पाये मैं भारी^३ हो ॥ १ ॥

जग का हाल देख बहु डरती ।
 जहँ तहँ खोज जतन का करती ॥
 कोई न जनाया घर पारी हो ॥ २ ॥
 हुई निरास सोच हुआ भारी ।
 तब गुरु प्यारे दया विचारी ॥
 आन' मिले कर प्यारी हो ॥ ३ ॥
 घट का भेद सार समझाई ।
 घर चलने की जुगत लखाई ॥
 मेहर करी कुछ न्यारी^२ हो ॥ ४ ॥
 प्रेम प्रीति गुरु चरनन लागी ।
 जगत मोह तज सूरत जागी ॥
 धुन सँग लागी तारी^३ हो ॥ ५ ॥
 उमँग उमँग सुत चालत घट में ।
 धुन घंटा सुन रही तिल पट में ।
 लखी जोत उजियारी हो ॥ ६ ॥
 गुरु सतगुरु का दरशन कीना ।
 राधास्वामी चरन सरन हुई लीना ॥
 निरभय हुई सुत प्यारी हो ॥ ७ ॥

२-शब्द १०६

सतगुरु प्यारे ने लगाई ।
 बिरह करारी हो ॥ टेक ॥
 सुन सुन महिमा प्रीतम प्यारे ।
 और शोभा निज धाम अपारे ॥
 चाह' उठी हिये भारी हो ॥ १ ॥
 सतगुरु चरन हुई दीन अधिनी ।
 उमँग उमँग उन सेवा कीनी ॥
 मेहर दृष्टि मोपै^२ डारी हो ॥ २ ॥
 निज घर का मोहि भेद सुनाई ।
 राह चलन की जुगत बताई ॥
 सुन धुन पिंड से न्यारी^३ हो ॥ ३ ॥
 प्रेम सहित सुत धुन में लागी ।
 शब्द शब्द सुन हुई अनुरागी ॥
 तन मन गुरु पै वारी हो ॥ ४ ॥
 तीन लोक के हो गई पारा ।
 दयाल देश संतन दरबारा ॥
 राधास्वामी चरन निहारी हो ॥ ५ ॥

२-शब्द ११०

सतगुरु प्यारे ने जगाया ।
 अचरज भागा हो ॥ टेक ॥
 बहु^१ दिन सोई मोह नींद में ।
 मन सँग भरमी जुगन जुगन में ॥
 धर भोगन में रागा^२ हो ॥ १ ॥
 सतगुरु मिले मोहि बचन सुनाये ।
 सतसंगत में लीन लगाये ॥
 बढ़त चरन अनुरागा^३ हो ॥ २ ॥
 ध्यान धरत तन मन हुआ निश्चल ।
 भजन करत मेरा चित हुआ निरमल ॥
 जगत मोह अब त्यागा हो ॥ ३ ॥
 गुरु चरनन में प्रीति बढ़ावत ।
 संशय तज परतीत दृढ़ावत ॥
 मनुआँ धुन रस पागा^४ हो ॥ ४ ॥
 मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
 तीन लोक के किया मोहि पारे ॥
 सहज प्रेम रँग लागा हो ॥ ५ ॥

२—शब्द १११

सतगुरु प्यारे ने सिखाई ।
 भक्ती रीती हो ॥ टेक ॥
 सब जिव भूल रहे जग माहीं ।
 बिन गुरु को घर भेद सुनाई ॥
 को लावे परतीती हो ॥ १ ॥
 जब गुरु मिलें भाग से पूरे ।
 करम भरम सब होवें दूरे ॥
 चरनन में दें प्रीती हो ॥ २ ॥
 सतसँग कर नित प्रीति बढ़ाना ।
 सेवा कर नई उमँग जगाना ॥
 छूटे जग बिपरीती हो ॥ ३ ॥
 शब्द भेद दे सुरत चढ़ावें ।
 भौसागर के पार पहुँचावें ॥
 काल करम दल जीती हो ॥ ४ ॥
 राधास्वामी चरन मिला बिसरामा ।
 दूर हुए सब अर्थ और कामा^३ ॥
 हुई सुफल उमरिया^४ बीती हो ॥ ५ ॥

२—शब्द ११२

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई
 आवागमन की डोरी हो ॥ टेक ॥
 सतसँग में मोहि सार^१ बुझाया^२ ।
 निज घर का सब भेद सुनाया ॥
 करम भरम किये दूरी हो ॥ १ ॥
 गुरु सरूप का धारा ध्याना ।
 धुन सँग किया ब्रह्मंड पयाना^३ ॥
 श्याम कंज दल फोड़ी हो ॥ २ ॥
 काल करम बहु अटक^४ लगाये ।
 माया भी नये चरित्र दिखाये ॥
 गुरु बल उन मुख मोड़ी हो ॥ ३ ॥
 त्रिकुटी जाय सुनी गुरु बानी ।
 सतपुर सतगुरु रूप पिछानी^५ ॥
 अलख अगम सुत जोड़ी हो ॥ ४ ॥
 राधास्वामी निज किरपा धारी ।
 सुरत हुई उन चरनन प्यारी ॥
 कुल जग से अब तोड़ी^६ हो ॥ ५ ॥

१—असली तत्त्व । २—समझाया । ३—गमन । ४—विघ्न ।

५—पहिचाना । ६—संबंध तोड़ दिया ।

२—शब्द ११३

सतगुरु प्यारे ने बसाई
 उजड़ी बाड़ी^१ हो ॥ टेक ॥
 जग सँग भूल गई सतनामा ।
 मन में बसत क्रोध और कामा ॥
 डूब रही सारी हो ॥ १ ॥
 गुरु दयाल मोहि जब से भेंटे ।
 काल करम माया रही ऐंठे ॥
 भेद मिला सत करतारी हो ॥ २ ॥
 सील छिमा चित माहि बसानी ।
 काल करम से खूँट छुड़ानी ॥
 सुरत शब्द मत धारी हो ॥ ३ ॥
 मन और सुरत मगन हुए सुन धुन ।
 पाप और पुन^२ मोक्ष हुए^३ छिन छिन ॥
 प्रेम धार घट जारी हो ॥ ४ ॥
 राधास्वामी चरन बसे अब हिय में ।
 प्रेम बढ़त दिन दिन अब जिय में ॥
 गुरु भौ पार उतारी हो ॥ ५ ॥

२-शब्द ११४

अरी हे सहेली प्यारी, जुड़ मिल गुरु गुन गावो,
 उनकी मेहर अपारी ॥ टेक ॥
 भरम रही थी बहु बिधि जग में ।
 अटक रही थी जहँ तहँ मग^१ में ॥
 उन सीधी राह दिखा री ॥ १ ॥
 प्यार किया मोहि संग लगाया ।
 घट का भेद अजब समझाया ॥
 जुगती सहज बता री ॥ २ ॥
 धर हिये ध्यान लखा गुरु रूपा ।
 सुन सुन शब्द तजा भौकूपा^२ ॥
 हियरे हरख बढ़ा री ॥ ३ ॥
 दया करी घट प्रीति बढ़ाई ।
 सोता मनुआँ लीन जगाई ॥
 सूरत अधर चढ़ा री ॥ ४ ॥
 को सके अस सतगुरु गुन गाई ।
 को जाने उन अधिक बढ़ाई ॥
 अबला^३ जीव उबारी ॥ ५ ॥
 जनम जनम का मारा पीटा ।
 जोनि जोनि में काल घसीटा^४ ॥
 मेहर से लीन बचा री ॥ ६ ॥

मैं गुरु प्रीतम लेत मनाई ।
 छिन छिन राधास्वामी चरन धियाई ॥
 उन कीन्हा मोर उपकारी ॥ ७ ॥

२—शब्द ११५

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु सँग फाग रचावो,
 मिला औसर^१ भारी ॥ टेक ॥
 ऋतु फागुन अब आन मिली है ।
 गुरु प्यारे से प्रीति ठनी^२ है ॥
 चूके मत अब प्यारी ॥ १ ॥
 प्रेम रंग घट माँट^३ भरावो ।
 गुरु पै छिड़क छिड़क हुलसावो ॥
 निरखो शोभा न्यारी ॥ २ ॥
 सुरत अवीर मलो चरनन में ।
 प्रीति प्रतीति धरो निज मन में ॥
 तन मन धन देव वारी^४ ॥ ३ ॥
 सेवा कर गुरु लेव रिभाई ।
 प्रेमी जन सँग आरत गाई ॥
 देखो अजब बहारी ॥ ४ ॥

अस औसर नहिं बारम्बारा ।
 गुरु चरनन करो प्रेम अधारा ॥
 जग भय लाज बिसारी ॥ ५ ॥
 गुरुभक्ती की महिमा भारी ।
 जाने जो जिन^१ जुगत सँभारी ॥
 प्रेम रँग भीजै सारी ॥ ६ ॥
 परम गुरू मेरे प्रीतम प्यारे ।
 राधास्वामी यह सब खेल खिलारे ॥
 उन पर जाऊँ बलिहारी ॥ ७ ॥

२—शब्द ११६

अरी हे सहेली प्यारी, प्रेम की दौलत भारी,
 छिन छिन भक्ति कमाओ ॥ टेक ॥
 भक्ति बिना सब बिरथा^२ करनी ।
 थोथा^३ ज्ञान ध्यान चित धरनी ॥
 यह नहि मुक्ति उपाओ ॥ १ ॥
 प्रेम बिना कोई जाय न पारा ।
 पहुँचे नहिं सतगुरु दरबारा ॥
 क्यों बिरथा बैस^४ गँवाओ ॥ २ ॥

ऐसा प्रेम गुरु से पावे ।
 जो कोइ उनकी कार कमावे^१ ॥
 उन चरनन पर सीस नवाओ ॥ ३ ॥
 दीन गरीबी धारो मन में ।
 प्रीति बसाओ तुम निज मन में ॥
 घट में शब्द जगाओ ॥ ४ ॥
 दया मेहर से सुरत चढ़ावें ।
 धुर पद में वे ले पहुँचावें ॥
 राधास्वामी चरन समाओ ॥ ५ ॥

१—शब्द ११७

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु की सरन सँभारो,
 काज करें वे पूरा ॥ टेक ॥
 सरन धार चरनन में धाओ ।
 ध्यान लाय सुत अधर चढ़ाओ ॥
 बाजे अनहद तूरा^२ ॥ १ ॥
 प्रीति प्रतीति धरी गुरु चरनन ।
 करम भरम सब कीन्हे मरदन^३ ॥
 गुरु बल मन हुआ सूरा^४ ॥ २ ॥

१—कार कमावे—उनकी बताई हुई करनी करे । २—शब्द ।

३—नाश । ४—बहादुर ।

सूर होय गगनापुर धावत ।
 गुरु को पल पल माहिं रिभावत ॥
 निरखत अद्भुत नूरा^१ ॥ ३ ॥
 काल करम से नाता^२ छूटा ।
 जगत पसार लगा सब भूटा ॥
 खोजत चली पद मूरा^३ ॥ ४ ॥
 राधास्वामी मेहर करी अब मुझ पर ।
 सहज पहुँचाय दिया मोहि धुर घर^४ ॥
 हुई उन चरनन धूरा ॥ ५ ॥

२—शब्द ११८

अरी हे सहेली प्यारी, यह जग रैन का सुपना,
 करो काज सबेरा ॥ टेक ॥
 भोग बिलास जगत के काँचे^१ ।
 खोज करो तुम सतगुरु साँचे ॥
 उन सँग बाँधो बेड़ा ॥ १ ॥
 ले उपदेश करो अभ्यासा ।
 राधास्वामी चरनन बाँधो आसा ॥
 मत कर बहुत अबेरा^२ ॥ २ ॥

१—प्रकाश । २—संबंध । ३—अंतिम स्थान । ४—असली घर ।

५—थोड़े समय रहने वाले । ६—देर ।

गुरु सरूप का धर हिये ध्याना ।
 दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाना ॥
 मिटे चौरासी फेरा^१ ॥ ३ ॥
 तन मन से सुत होकर न्यारी ।
 गुरु की दया ले अधर सिधारी ॥
 गगन मँडल किया डेरा ॥ ४ ॥
 सतगुरु ध्यान धरत फिर चाली ।
 धुन बीना सुन हुई निहाली^२ ॥
 किया राधास्वामी धाम बसेरा ॥ ५ ॥

२—शब्द ११६

सरन गुरु धार री धर दृढ़ परतीत ॥ टेक ॥
 उमँग अंग ले करो साध सँग ।
 बचन सुनो तुम देकर चीत^३ ॥ १ ॥
 जग ब्योहार जान सब मिथ्या^४ ।
 जग जिव सब स्वारथ के मीत ॥ २ ॥
 इनसे हट मन चरनन जोड़ो ।
 हित से धारो भक्ती रीत ॥ ३ ॥
 तन मन इंद्री सब दुखदाई ।
 बुधि और विद्या सबहि अनीत ॥ ४ ॥

बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे ।
 मिल अब उनसे कारज कीत^१ ॥ ५ ॥
 प्रीति प्रतीति धार गुरु चरनन ।
 गुरु बल काल करम को जीत ॥ ६ ॥
 मौज निहार करो सब काजा^२ ।
 मन में धारो गुरु की नीत^३ ॥ ७ ॥
 प्रेम अंग ले ध्यान सँभारो ।
 चरन आनंद लेव धर प्रीत ॥ ८ ॥
 अस अभ्यास करो तुम निसदिन ।
 गुरु रँग भीज रहो तज भीत^४ ॥ ९ ॥
 आस भरोस धार गुरु चरनन ।
 त्याग देव जग की बिपरीत^५ ॥ १० ॥
 गुरु भक्तन की चाल अनोखी ।
 धारो रल मिल गुरु संगीत^६ ॥ ११ ॥
 घट में परखो अपन उधारा ।
 गाओ निसदिन राधास्वामी गीत ॥ १२ ॥

२—शब्द १२०

मनुआँ क्यों सोचे नाहिं
 जग में दुख भारी ॥ टेक ॥

१—करो । २—काम । ३—गुरु का बताया हुआ ढंग । ४—भय, डर ।

५—उलटी रीति । ६—संग, सतसंग ।

जल्दी से उठ चेत जाग ।
 सतसँग में तू जाव भाग ॥
 सतगुरु के चरन लाग ।
 तज करम धरम सारी ॥ १ ॥
 जग में कोइ नाहिं मीत^१ ।
 सतसँग में धरो चीत ॥
 गुरु भक्ती की धार रीत ।
 मत भरमे प्यारी ॥ २ ॥
 सुरत शब्द उपदेश सार ।
 गुरु से ले धर के प्यार ॥
 गुरु स्वरूप ध्यान धार ।
 निरखो घट उजियारी^२ ॥ ३ ॥
 पिरथम लख जोत सार ।
 निरखो फिर सूरज उजार^३ ॥
 चंद्र रूप सुन में निहार ।
 धुन मुरली धारी ॥ ४ ॥
 सत अलख अगम निहार ।
 सूरत अब हुई सार^३ ॥
 राधास्वामी पद निरखा अपार ।
 चरनन बलिहारी ॥ ५ ॥

२-शब्द १२१

प्यारी ज़रा कर बिचार ।
 यहाँ सदा नहीं रहना ॥ टेक ॥
 इक दिन देह होत पात^१ ।
 छूटे कुल कुटुम्ब नात^२ ॥
 आज ही सुन निज घर की बात ।
 क्यों जम के डंड^३ सहना ॥ १ ॥
 सतसँग में तुम बैठो जाय ।
 सतगुरु की सरन आय ॥
 भक्ति भाव साज लाय ।
 सीस चरन देना ॥ २ ॥
 सुरत शब्द जुगत धार ।
 गुरु चरनन में लाय प्यार ॥
 निरखो घट में बहार ।
 नित रस ही लेना ॥ ३ ॥
 सेवा कर सतगुरु रिभाय^४ ।
 मेहर दया उन परख आय ॥
 घट में रहे नित हरख^५ छाये ।
 सुरत शब्द गहना ॥ ४ ॥
 श्याम सेत के जाय पार ।
 सुन धुन मुरली बीन सार ॥

राधास्वामी प्रीतम चरन निहार ।

सुनती निज बैना ॥ ५ ॥

२—शब्द १२२

चल देखिये सतसँग में
 जहाँ निरमल फाग रचो री ॥ टेक ॥
 सतगुरु जहाँ बचन सुनावें ।
 प्रेमी जन सुन हरखावें ॥
 दरशन की शोभा निरखत ।
 मन में गुरु भाव^१ बढ़ो री ॥ १ ॥
 भक्ती रँग बरसत छिन छिन ।
 हिये प्रेम बढ़त अब दिन दिन ॥
 गुरु पै सब वारत^२ तन मन ।
 धन धन^३ गुरु शोर मचो री ॥ २ ॥
 काल अपने खेल खिलावे ।
 जीवन को सद^४ भरमावे ॥
 गुरु निकट न आने पावे ।
 घर इसका आज तजो^५ री ॥ ३ ॥
 ले सुरत शब्द उपदेशा ।
 घट धुन में करो प्रवेशा ॥

१—प्यार । २—निछावर करते हैं । ३—धन्य, धन्य ।

४—सदा, हमेशा । ५—छोड़ो ।

अस छूटे काल कलेशा ।
 गुरु पद जाय दरस तकौ री ॥ ४ ॥
 सुन और महासुन पारा ।
 चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा ॥
 राधास्वामी धाम निहारा ।
 जहाँ अचरज खेल खिलो री ॥ ५ ॥

२—शब्द १२३

चलो आज गुरु दरबारा
 जहाँ होवत सहज उधारा ॥ टेक ॥
 मैं करम धरम भरमानी ।
 भेषन^१ में रही भुलानी ॥
 गुरु महिमा नेक न जानी ।
 जो करें जीव निस्तारा ॥ १ ॥
 धुर^२ दया हुई जब मुझपर ।
 गुरु भेदी^३ मिलिया आकर ॥
 उन महिमा कही जना कर ।
 गुरु चरन करो आधारा^४ ॥ २ ॥
 सतगुरु फिर किरपा धारी ।
 दिया भेद मोहि निज सारी ॥

सुत शब्द जुगत अति भारी ।
 समझाई करके प्यारा ॥ ३ ॥
 मन उमँग सहित घट लागा ।
 सुन शब्द बढ़ा अनुरागा ॥
 जग से हुआ चित बैरागा ।
 गुरु रूप हिये में धारा ॥ ४ ॥
 दरशन कीं उठी अभिलाषा ।
 चल आई सतगुरु पासा ॥
 सतसँग का देख बिलासा ।
 सुन सुन गुरु बचन सँभारा ॥ ५ ॥
 क्या महिमा सतसँग गाऊँ ।
 या सम^१ कोई जतन न पाऊँ ॥
 मन के सब भ्रम हटाऊँ ।
 गुरु अस्तुत करूँ सँवारा ॥ ६ ॥
 गुरु निरख दीनता मेरी ।
 करी मुझपर मेहर घनेरी^२ ॥
 मैं हुई उन चरनन चेरी^३ ।
 तन मन धन गुरु पर वारा ॥ ७ ॥
 मन हुआ प्रेम रस माता ।
 गुरु सेव करत दिन राता ॥

जग जीवन सँग नहिं भाता^१ ।

अब मिल गया सतसँग सारा ॥ ८ ॥

गुरु ध्यान धरत मन मगना^२ ।

धुन सुनत चढ़त सुत गगना ॥

सतसँग में निसदिन जगना ।

मिला राधास्वामी सरन सहारा ॥ ९ ॥

गुरु चरनन बिनती धारी ।

मोहि लीजे बेग^३ सुधारी ॥

अपना कर दया बिचारी ।

भौजल के पार उतारा ॥१०॥

बल काल करम का तोड़ो !

सूरत निज चरनन जोड़ो ॥

माया के परदे फोड़ो ।

हरखूँ लख धाम नियारा ॥११॥

राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।

तुम गत मत अगम अपारे ॥

मैं जिऊँ तुम नाम अधारे ।

दम दम तुम चरन निहारा ॥१२॥

२-शब्द १२४

चलो सतगुरु घाट सखी री
 लेव मन और सुरत धुलाई ॥ टेक ॥
 जहाँ प्रेम की बरखा भारी ।
 सतसँग जल नित ही जारी ॥
 सब कलमल^१ धोवत आ री ।
 घट द्वारा लेत खुलाई ॥ १ ॥
 सतसँग कर करो गुरु सेवा ।
 लो उनसे घट का भेवा^२ ॥
 छोड़ो सब देवी देवा ।
 इक राधास्वामी इष्ट बँधाई ॥ २ ॥
 सुत शब्द की धारो करनी ।
 मन सूरत धुन में धरनी ॥
 या बिध^३ भौसागर तरनी ।
 नित सतगुरु रूप धियाई ॥ ३ ॥
 अस करो नित अभ्यासा ।
 मन सूरत चढ़ें अकासा ॥
 देखें वहाँ बिमल बिलासा ।
 निर्मलता होत सफ़ाई ॥ ४ ॥

सतगुरु निज दया बिचारी ।
 जीवन का करें उपकारी ॥
 राधास्वामी सरन सँभारी ।
 नित राधास्वामी नाम जपाई ॥ ५ ॥

२—शब्द १२५

चल देखिये गुरु द्वारे
 जहाँ प्रेम समाज लगा री ॥ टेक ॥
 प्रेमी जन जुड़ मिल बैठे ।
 राधास्वामी महिमा कहते ॥
 गुरु दरशन रस नित लेते ।
 इक इक का भाग जगा री ॥ १ ॥
 मैं नीच अधम नाकारा ।
 सतसँग का लीन सहारा ॥
 गुरु लेहैं मोहि सुधारा ।
 उन चरनन प्रीति पका री ॥ २ ॥
 गुरु बचन सुनत मन मोहा ।
 तब भूल भरम सब खोया ॥
 फिर करम धरम भी सोया ।
 यों माया काल ठगा री ॥ ३ ॥
 घट अंतर ध्यान लगाई ।
 सुन सुन धुन अति हरषाई ॥

१—निकम्मा ।

मन सूरत अधर चढ़ाई ।
 गुरु अचरज दरस तका' री ॥ ४ ॥
 गगना में बजी बधाई ।
 बिरोधी सब रहे मुरझाई ॥
 राधास्वामी की फिरी दुहाई ।
 उन महिमा छिन छिन गा री ॥ ५ ॥

२-शब्द १२६

गुरु धरा सीस पर हाथ ।
 मन क्यों सोच करे ॥ १ ॥
 गुरु रक्षा हर दम संग ।
 क्यों नहिं धीर धरे ॥ २ ॥
 गुरु राखें राखनहार^१ ।
 उनसे काज सरे^३ ॥ ३ ॥
 तेरी करें पच्छ^४ कर प्यार ।
 बैरी दूर पड़े ॥ ४ ॥
 गुरु दाता दीनदयार ।
 चरन लग जगत तरे ॥ ५ ॥
 उन महिमा अकह अपार ।
 बरनन कौन करे ॥ ६ ॥

सोइ चाखे अमीरस सार ।
 चरनन सुरत धरे ॥ ७ ॥
 घट बाजे अनहद सार ।
 सुन सुन अधर चढ़े ॥ ८ ॥
 गुरु देवें बिघन हटाय ।
 उनसे काल डरे ॥ ९ ॥
 माया दल मारें आय ।
 मोह मद अग्नि जरे ॥ १० ॥
 बिन राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
 को अस दया करे ॥ ११ ॥
 वही हैं बड़भागी जीव ।
 जो उन सरन पड़े ॥ १२ ॥
 धर हिये में गहिरी प्रीति ।
 सँग में आन पड़े ॥ १३ ॥
 मेरा जागा अस बड़ भाग ।
 जग जिव अचरज करे ॥ १४ ॥
 गुरु कीन्ही मेहर अपार ।
 बैरी जल जल मरे ॥ १५ ॥
 मेरे मात पिता गुरुदेव ।
 महिमा कौन करे ॥ १६ ॥
 प्यारे राधास्वामी दीनदयाल ।
 छिन छिन सार करें ॥ १७ ॥

२-शब्द १२७

संत बचन हिरदे में धरना ।

उनसे मुख मोड़न नहिं करना ॥ १ ॥

मीठा कड़ुवा बोल सुहाई ।

मत को तेरे देहैं पकाई ॥ २ ॥

गरम सर्द का सोच न लाना ।

नरक अग्नि से तोहि बचाना ॥ ३ ॥

तेरी समझ है किनके माहीं ।

गुरु पूरा खोजो जग माहीं ॥ ४ ॥

उन सँग किनका पावे ज्ञान ।

मार लेय तू मन शैतान ॥ ५ ॥

गुरु पूरा कस्तूरि समान ।

बाहर खूँ^१ घट^२ मुश्क^३ बसान ॥ ६ ॥

जब वे घट का भेद सुनावें ।

नभ की ओर सुरत मन धावें ॥ ७ ॥

अंधे को शीशा दिखलाना ।

ऐसे हरि पत्थर में जाना ॥ ८ ॥

गुरु बिन घट में राह न चलना ।

डर और बिघन अनेकन मिलना ॥ ९ ॥

गुरु रक्षा जाके सँग नाहीं ।

उसको काल करम भरमाहीं ॥ १० ॥

याते सतगुरु ओट पकड़ना ।
 झूठे गुरु से काज न सरना^१ ॥११॥
 गिरि^२ समान उन छाया जग में ।
 सुरत बिहंगम^३ रहत अधर^४ में ॥१२॥
 जो मन करड़ा^५ पत्थर होवे ।
 गुरु से मिलत जवाहिर होवे ॥१३॥
 बँदगी भजन करे सौ बरसा ।
 गुरु का संग दुघड़िया^६ बढ़का ॥१४॥
 जो मालिक का चहे दीदार^७ ।
 जा तू बैठ गुरु दरबार ॥१५॥
 मालिक का बालक गुरु पूर ।
 मालिक का हर दम मंजूर ॥१६॥
 गुरु पूरे को समरथ जान ।
 करम बान उलटावेँ आन ॥१७॥
 जो मालिक का सुनता बोल ।
 उसका बचन सही कर तोल ॥१८॥
 जो तू घट में चालनहार ।
 चलने वाला सँग ले यार ॥१९॥
 हिन्दू चाहे मुसलमाँ होवे ।
 अरबी होय तुरक चाहे होवे ॥२०॥

१—बनेगा । २—पहाड़ । ३—पक्षी । ४—आकाश । ५—कड़ा ।

६—दो घड़ी का । ७—दर्शन ।

रूप रंग उसका मत देख ।
 सरधा भाव निशाना पेख^१ ॥२१॥
 जिनके है मालिक का प्यार ।
 हिन्दू और तुरक दोउ यार ॥२२॥
 जो हैं माते^२ मन के केल^३ ।
 दो हिन्दू का होय न मेल ॥२३॥
 भानु^४ रूप मालिक सुन भाई ।
 नरदेही में रहा छिपाई ॥२४॥
 फूल खिलें गुलनारी जब ही ।
 बाग सुहावन लागे तब ही ॥२५॥
 अस गुरु संग करे जो कोई ।
 पूरे सँग पूरा होय सोई ॥२६॥
 गुरु पूरे का सेवक बरतर^५ ।
 क्या जो हुक्म करे राजों पर ॥२७॥
 हर दम सुरत चढ़े ऊँचे को ।
 मालिक ताज खास दिया उसको ॥२८॥
 गुरु की गति परखो अंतर में ।
 बे परखे मत मानो मन में ॥२९॥
 जो गुरु परख न पावे घट में ।
 तो मत जाय अकेला बट^६ में ॥३०॥

१—देख । २—पागल, मतवाले । ३—खेल । ४—सूर्य ।

५—उत्तम । ६—बाट, रास्ता ।

रस्ते में है काल का घेरा ।
 शब्द सुना दुख देहै घनेरा ॥३१॥
 अभ्यासी को कहै पुकारी ।
 शब्द सुनो आओ सरन हमारी ॥३२॥
 जो कोइ काल शब्द में रचिया^१ ।
 घर नहिं जाय राह में पचिया^२ ॥३३॥
 धावत जाय काल के घर को ।
 भिड़ा^३ शेर खा जावें उसको ॥३४॥
 काल शब्द की यह पहिचान ।
 मन चाहे धन आदर मान ॥३५॥
 काल शब्द में चित्त न लाओ ।
 तब निज घर का भेद खुलाओ ॥३६॥
 जिस घट परघट सत का नूर ।
 उसको पूजें देव और हूर^४ ॥३७॥
 साध का निरखो आँख और माथा ।
 सत्त का नूर रहे जिस साथ ॥३८॥
 यह चिन्ह देख करें पहिचान ।
 गुरु पद^५ का जिन हिरदे ज्ञान ॥३९॥
 परम पुरुष सम गुरु को जान ।
 बिन जिभ्या^६ कहें बचन सुजान ॥४०॥

१—लीन हो गया । २—परेशान होता है । ३—भेड़िया ।

४—परियाँ । ५—त्रिकुटी । ६—जिह्वा, ज़बान ।

वही हकीम और वही उस्ताद ।
 हिये में सुनत रहो उन नाद^१ ॥४१॥
 छोड़ कुसंगी से तू प्यार ।
 सच्चा संगी खोजो यार ॥४२॥
 जिन कीन्हा सतगुरु का संग ।
 सत्तपुरुष का पाया रंग ॥४३॥
 झूठे गुरु का जो सँग लाय ।
 नरक पड़े और अति दुख पाय ॥४४॥
 गत मत भेद संत का भारी ।
 वही पावे जिन तन मन वारी ॥४५॥
 संत न देखें बोल और चाल ।
 वे परखें अंतर का हाल ॥४६॥
 गुरु का हाथ पुरुष का हाथ ।
 हाजिर गायब सबके साथ ॥४७॥
 उनका हाथ बहु लंबा ऊँचा ।
 सात मुकाम के ऊपर पहुँचा ॥४८॥
 जो तू सिर को राखा चाह^२ ।
 दीन होय गुरु सरनी आय ॥४९॥
 गुरु तुझको सब भँति बचावें ।
 काल बिघन सब दूर करावें ॥५०॥

झूठे गुरु की ओट न गहना ।

सतगुरु चरन सरन सुख लेना ॥५१॥

जिन सतगुरु का संग न कीना ।

दुख पाया हुआ काल अधीना ॥५२॥

जो आया सतगुरु की छाँह ।

सूरज लागा उसके पाँय ॥५३॥

॥ बहर दूसरी ॥

जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल ।

जो खिजर^१ है तौ भी गुरु के संग चल ॥५४॥

बन सके जहाँ तक तू गुरु से मुख न फेर ।

सेवा कर अभ्यास कर मत कर तू देर ॥५५॥

निरभै मत हो खौफ़ रख मन में सदा ।

लाज तज बदनाम हो जग से जुदा ॥५६॥

कोई तरह यह मन नहीं हाथ आयगा ।

पूरे गुरु की छाया से मर जायगा ॥५७॥

इसलिये दामन^२ को तू उनके पकड़ ।

छोड़ मत ऐ यार उसको धर जकड़ ॥५८॥

जो तू मजबूती से पकड़ेगा चरन ।

मिल गई मालिक की तुझको निज सरन ॥५९॥

१—हज़रत ख़िज़्र एक पैग़म्बर हुए हैं । ख़याल किया जाता है

कि वे अमर हैं और पथभ्रष्ट मुसाफ़िरों को रास्ता

बतलाते हैं । २—पल्ला ।

देख हरदम मेहर उनकी अपने साथ ।
 नित निरख सिर पर तू अपने उनका हाथ ॥६०॥
 गुरु के हिरदे में तू कर ले अपना घर ।
 सुर्त रूप अपना निरख चढ़ मानसर ॥६१॥
 गुरु की ताड़ और मार सह धर कर पियार ।
 मूरखों की अस्तुती^१ पर खाक डार ॥६२॥
 गुरु से परमारथ की दौलत पायगा ।
 सुर्त सँग चेतन्न^२ अँग हो जायगा ॥६३॥
 पूरे गुरु को खटमुखी आईना जान ।
 मालिक उसमें बैठ कर देखे है आन ॥६४॥
 बे वसीले गुरु के परमारथ न पाय ।
 चाहे कोई कुछ करे निज घर न जाय ॥६५॥
 जिनको मालिक का हुआ हासिल विसाल^३ ।
 थोड़ा सा मैंने कहा यह उनका हाल ॥६६॥
 पूरे गुरु हैं शेर वे करते शिकार ।
 और सब बाक्री हैं उनके टुकड़ेखार^४ ॥६७॥
 बस रहो चुप और गुरु सरनी गहो ।
 हुक्म मानो उनके चरणों में रहो ॥६८॥
 ओट^५ पूरे की गहो पूरे बनो ।
 नीच की संगत न कर नहिं सिर धुनो ॥६९॥

१—स्तुति, प्रशंसा । २—चैतन्य । ३—मिलाप ।

४—टुकड़े खाने वाले । ५—शरण ।

जो भजन और बंदगी हरि की करे ।
 या करम और धर्म सब बिध से करे ॥७०॥
 गुरु की फटकार और निरादर जिन सहा ।
 वह हुआ इन सबसे बेहतर^१ मैं कहा ॥७१॥
 हक^२ ने पैगम्बर को समझाया कि मैं ।
 मिल नहीं सकता जमीं अस्मान में ॥७२॥
 ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं ।
 अर्श कुरसी पर भी मैं रहता नहीं ॥७३॥
 दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा ।
 जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा ॥७४॥
 गुरु की महिमा का समझना हैगा यह ।
 दीन हो चरनों में तू ज्यों खाक रह ॥७५॥
 एक कर हरि गुरु को क्या है मानना ।
 अपना आपा उनके सम्मुख घालना^३ ॥७६॥
 जिसके दिल से उड़ गये दुनिया के रंग ।
 गैब के नक्श उसमें भलकें बेदिरंग^४ ॥७७॥
 जो नज़र अपने कसूरों पर करे ।
 जल्द पूरा होवे रस्ता तै करे ॥७८॥
 आप को जाने है पूरा जो अजान ।
 थक रहा रस्ते में हक के वह निदान ॥७९॥

२—शब्द १२८

प्रेमी जइयो रे सतसँग में ।
 लीजो सुरत जगाय ॥ टेक ॥
 बिन सतसँग मन चेते नाहीं ।
 सतगुरु प्यारे की सरनाय ॥ १ ॥
 अमृत रूपी बचन गुरु के ।
 सुन सुन रहे चरन लौ लाय ॥ २ ॥
 शब्द भेद लेकर सतगुरु से ।
 मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥
 सुन सुन धुन सूरत मगनानी ।
 मन से लीना खूँट छुड़ाय ॥ ४ ॥
 सतगुरु लार चली फिर प्यारी ।
 सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ५ ॥
 सत्तपुरुष का दर्शन पाया ।
 हंसन सँग लिया मेल मिलाय ॥ ६ ॥
 वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारी ।
 मगन होय निज भाग सराय ॥ ७ ॥

२—शब्द १२९

प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से ।
 देवें काज बनाय ॥ टेक ॥

दयानिधान^१ परम हितकारी ।
 जीवों को दें ओट बुलाय ॥ १ ॥
 दीन होय जो सरनी आवे ।
 ताको मेहर से लें अपनाय ॥ २ ॥
 प्रीति प्रतीति बढ़ा चरनन में ।
 सुरत शब्द अभ्यास कराय ॥ ३ ॥
 घट में तेरे दर्शन देकर ।
 मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥
 शब्द शब्द से मेला करके ।
 इक दिन दें निज घर पहुँचाय ॥ ५ ॥
 जो कुछ करें करें गुरु प्यारे ।
 जीव निबल क्या कार कमाय ॥ ६ ॥
 राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।
 महिमा उनकी को सके गाय ॥ ७ ॥

२—शब्द १३०

प्रेमी भागो रे जगत से ।
 या सँग क्यों तू धोखा खाय ॥ टेक ॥
 यह दुनिया काहू^२ की नाहीं ।
 भोग दिखा लिया जीव फँसाय ॥ १ ॥

याते छूटन कठिन बिचारो ।
 सब ही या सँग गये लुभाय ॥ २ ॥
 बिन सतगुरु कोइ छूटे नाहीं ।
 उनका सतसँग करो बनाय ॥ ३ ॥
 बचन सुनो और चित में धारो ।
 सूरत घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥
 प्रीति प्रतीति चरन में धारो ।
 राधास्वामी इक दिन काज बनाय ॥ ५ ॥

२—शब्दः १३१

प्रेमी मानो रे बचन को ।
 रहियो गुरु चरनन लौ लाय ॥ टेक ॥
 गुरु की महिमा कही न जावे ।
 देवें घट का भेद लखाय ॥ १ ॥
 कुल मालिक राधास्वामी प्यारे के ।
 चरनन में दें सुरत जुड़ाय ॥ २ ॥
 नित अभ्यास करे जो घट में ।
 चरन धार रस ले तृपताय^१ ॥ ३ ॥
 वही धार धुन शब्द पहिचानो ।
 वही धार अमृत बरसाय ॥ ४ ॥
 वही धार गह^२ सुरत चढ़ाओ ।
 उसी धार से रहो लिपटाय ॥ ५ ॥

चढ़ चढ़ पहुँचो धुर दरबारा ।
राधास्वामी दरशन पाय ॥ ६ ॥

२—शब्द १३२

प्रेमी जागो रे तुम अब ही ।
मोह की नींद बिसार ॥ टेक ॥
भूल भ्रम में कब तक रहना ।
शफलत तज अब हो हुशियार ॥ १ ॥
गुरु सतसँग से नाता जोड़ो ।
बिरह अनुराग सँभार ॥ २ ॥
कुल मालिक राधास्वामी चरनन में ।
चित को जोड़ो धर कर प्यार ॥ ३ ॥
धुन भनकार सुनो फिर घट में ।
प्रेम अंग ले सुरत सुधार ॥ ४ ॥
बिमल बिलास लखे^१ अंतर में ।
गुरु चरनन पै तन मन वार ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
पहुँचे इक दिन निज दरबार ॥ ६ ॥

२—शब्द १३३

प्रेमी रहियो रे हुशियार ।
माया घात^२ बचाय ॥ टेक ॥

यह मन माया दोउ संसारी ।

जीव गये इन हाथ ठगाय ॥ १ ॥

निकसन की कोइ जुगत न पावें ।

बार बार जग में भरमाय ॥ २ ॥

कनक^१ कामिनी^२ मान बड़ाई ।

जाल बिछा लिया जीव फँसाय ॥ ३ ॥

बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।

उनकी सरन पड़ो तुम जाय ॥ ४ ॥

सुरत शब्द की जुगत कमाओ ।

गुरु चरनन में प्रीति बढ़ाय ॥ ५ ॥

मेहर से घट में देहिं सहारा ।

पिंड अंड के पार पड़ाय^३ ॥ ६ ॥

राधास्वामी दीनदयाल कृपानिधि ।

माया काल से लेहिं बचाय ॥ ७ ॥

२—शब्द १३४

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

क्यों गफलत में रहो सोते ॥

गुरु लेव सँभारी ॥ टेक ॥

या जग में नित रहना नाहीं ।

इक दिन तन तज जाना ॥

टुक^४ वहाँ की बात बिचारी ॥ १ ॥

सतगुरु वहाँ के भेदी कहियन ।
 मिल उनसे लेव समझौती ॥
 निज घर वे देहिं लखा^१ री ॥ २ ॥
 सतसँग उनका करो चित लाई ।
 बचन अमोल हिये बिच धारो ॥
 तोहि कर दें जग से न्यारी ॥ ३ ॥
 कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
 भेद उनका दें घट में सारा^२ ॥
 सुत शब्द की जुगती धारी ॥ ४ ॥
 मन और सुरत अधर नित धावें ।
 सुन सुन घट धुन झनकारी ॥
 पावें रस आनंद भारी^३ ॥ ५ ॥
 गुरु पद परस^४ गई सतपुर में ।
 मधुर बीन धुन सुनी सारी ॥
 पद अलख अगम निरखा री ॥ ६ ॥
 वहाँ से चल पहुँची निज धामा ।
 प्यारे राधास्वामी दर्श लखा री ॥
 उन चरनन पर बलिहारी ॥ ७ ॥

१—दिखला देंगे । २—असली । ३—बहुत । ४—स्पर्श करके ।

२-शब्द १३५

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
 या जग बिच घोर^१ अँधेरा ॥
 तन में भी तम^२ रहा छआई ॥ टेक ॥
 मन इंद्री का जोर घनेरा^३ ।
 पाँच दूत अति कर^४ बलवाना ॥
 जीवन का बल पेश न जाई ॥ १ ॥
 काल करम से बचना चाहो ।
 तौ सतगुरु सँग चालो ॥
 मग^५ में कोई बिघन न आई ॥ २ ॥
 जनम मरन का दुख अति भारी ।
 देही सँग दुख सुख नित सहना ॥
 याते जिव लेव बचाई ॥ ३ ॥
 सतगुरु हैं सच्चे हितकारी ।
 वे काटें सब काल कलेशा ॥
 सरन गहे^६ ताके^७ होयँ सहाई ॥ ४ ॥
 चलो री सखी अब देर न कीजै ।
 गुरु सतसँग में तन मन दीजै ॥
 धार हिये राधास्वामी सरनाई^८ ॥ ५ ॥

१—बहुत ज्यादा । २—अंधकार । ३—बहुत । ४—अत्यंत । ५—मार्ग,
 रास्ता । ६—ग्रहण करे, ले । ७—उसके । ८—शरण ।

२—शब्द १३६

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
 गुरु चरन सरन गह चालो ॥
 मन माया का जोर घनेरा^१ ॥ टेक ॥
 यह मन मूरख चेतो नहीं ।
 भोगन में रहै सदा अधीना ॥
 दुनिया का न छोड़े बखेड़ा ॥ १ ॥
 बिन गुरु सतगुरु कौन चितावे ।
 वे देहि दया का सहारा ॥
 तब यह छूटे सबेरा^२ ॥ २ ॥
 अपने बल से छूटे नहीं ।
 खोजो सतगुरु दयाल गुसाईं^३ ॥
 मत कर तू बहुत अबेरा^३ ॥ ३ ॥
 भाग जगे जिन सतगुरु पाये ।
 सुरत शब्द की जुगत कमाये ॥
 घट में निज पद को हेरा^४ ॥ ४ ॥
 सुरत चढ़ी पहुँची दस द्वारे ।
 राधास्वामी चरन धुर धाम निहारे ॥
 हुआ सहजहि आज निबेड़ा^५ ॥ ५ ॥

२-शब्द १३७

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

जग मोह बिसारो^१ ॥

सतगुरु से नेह^२ लगा लो ॥ टेक ॥

यह जग तुम्हारा संगी नहीं ।

गुरु का सतसँग धारो ॥

भूल और भ्रम मिटा लो ॥ १ ॥

दया लेव तुम उनकी हर दम ।

सुरत शब्द की जुगत सँभालो ॥

मन और सुरत जगा लो ॥ २ ॥

भोग बासना चित से छोड़ो ।

मन और सुत निज घट में जोड़ो ॥

विघन और बिकार निकालो ॥ ३ ॥

जस जस आनंद घट में पावे ।

प्रीति प्रतीति चरन में बाढ़े ॥

प्रेम रँग सुरत रँग लो ॥ ४ ॥

चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।

धुन सँग सुरत चढ़ाओ अधर घर ॥

मेहर से आजहि काज बना लो ॥ ५ ॥

२-शब्द १३८

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
 गुरु सतसँग का रस लीजै ॥
 अस औसर फिर न मिलेगा ॥ टेक ॥
 बिन सतसंग समझ नहि आवे ।
 जगत भोग सब भूठे ॥
 कोई सँग न चलेगा ॥ १ ॥
 गुरु सँग प्रीति करे सोइ बाचे ।
 सुरत शब्द का मारग ताके ॥
 वही सतसँग में रलेगा^१ ॥ २ ॥
 ध्यान लाय गुरु प्रीति बढ़ावे ।
 सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ावे ॥
 वाही का कर्म जलेगा ॥ ३ ॥
 अनुभव जागे तो सब कुछ सूझै^२ ।
 गुरु का बल ले काल से जूझै^३ ॥
 वहि सज्जन माया को दलेगा^४ ॥ ४ ॥
 राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
 वहि जन पहुँचे निज दरबारी ॥
 अचरज दर्शन पाय खिलेगा^५ ॥ ५ ॥

१—पूरी तरह रल मिल जावेगा । २—दिखलाई दे । ३—लड़े ।

४—नाश करेगा । ५—प्रसन्न होगा ।

२-शब्द १३६

मेरी प्यारी सहेली हो ।
 क्यों जनम गँवाओ हो ॥ टेक ॥
 दर्शन कर मेरे गुरु प्यारे का ।
 निज भाग जगाओ हो ॥ १ ॥
 आज काज करो जीव अपने का ।
 नहिं जमपुर जाय पछताओ हो ॥ २ ॥
 छोड़ो अब ही लाज जगत की ।
 गुरु सतसँग में आओ हो ॥ ३ ॥
 दर्शन कर उमँगे हिये प्यारा ।
 बचन सुनत जग भाव भुलाओ हो ॥ ४ ॥
 निर्मल दृष्टि से देखो लीला ।
 दम दम उमँग बढ़ाओ हो ॥ ५ ॥
 भेद पाय मन सुरत समेटो ।
 घट अधर चढ़ाओ हो ॥ ६ ॥
 बिमल बिलास लखो हिये अंतर ।
 तब निज भाग सराहो हो ॥ ७ ॥
 राधास्वामी दया परख फिर घट में ।
 नया नया प्रेम जगाओ हो ॥ ८ ॥
 बिन गुरु सरन होय जीव अकाजा ।
 कुटँब को भी सँग लाओ हो ॥ ९ ॥

राधास्वामी दयाल की दया अपारा ।

सबको पार लगाओ हो ॥१०॥

ऐसी महिमा राधास्वामी निरखत ।

हरष हरष गुन गाओ हो ॥११॥

२—शब्द १४०

मन रे चल गुरु के पास

घर का भेद लीजै ॥ टेक ॥

यह जग है काल देश ।

सच्चे सुख का नहीं लेश^१ ॥

घर चल धारो हंस भेष ।

प्रेम रंग भीजै ॥ १ ॥

वह घर है अगम अपार ।

सतगुरु की चलो लार^२ ॥

तन मन देव चरनों पै वार ।

नित भक्ति कीजै ॥ २ ॥

अब ही करो सतसंग सार ।

भूल भरम सब देव निकार ॥

जल्दी कर नहिं देर धार ।

नित काया^३ छीजै ॥ ३ ॥

गुरु का आदि उपदेश मान ।

चरनन में अब लाव ध्यान ॥

सूरत घट धुन लगान ।
 अमृत रस पीजै ॥ ४ ॥
 चढ़ चढ़ सुत गई पार ।
 बीन बाँसुरी धुन सँभार ॥
 पहुँची राधास्वामी धाम अपार ।
 हरख हरख रीझै ॥ ५ ॥

२—शब्द १४१

भक्त का पंथ निराला है ॥ टेक ॥
 भक्तन के भगवंत की महिमा ।
 और सकल जंजाला है ॥ १ ॥
 जो भक्ती संतन ने भाषी ।
 वही तो सबसे बाला^२ है ॥ २ ॥
 उनका प्रीतम कुल का करता^३ ।
 राधास्वामी दीनदयाला है ॥ ३ ॥
 और उपाश^४ सकल जग माहीं ।
 अंस कला पुर्ष काला^५ है ॥ ४ ॥
 इनके संग उबार न होई ।
 कटे न माया जाला है ॥ ५ ॥
 मिल सतगुरु जो शब्द कमावे ।
 वही खोले घट ताला है ॥ ६ ॥

१—प्रसन्न होती है । २—उत्तम । ३—कर्त्ता, रचने वाला । ४—उपास्य,
 जिसकी भक्ति की जाय । ५—काल पुरुष ।

प्रेम भक्ति की महिमा भारी ।
 जो धारे सोइ आला^१ है ॥ ७ ॥
 अस प्रेमी प्रीतम से अपने ।
 जाय मिले दरहाला^२ है ॥ ८ ॥
 राधास्वामी दयाल भक्त को अपने ।
 मेहर से आप सँभाला है ॥ ९ ॥

२-शब्द १४२

बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ।
 गुरु ज्ञान बिना संसार अँधेरा भारी ॥ टेक ॥
 क्या जन्मे जग में आय शब्द का खोज न कीन्हा ।
 अटके देवी देव संत का मरम न चीन्हा ॥
 दुख सुख भोगें सदा करम का यह फल लीना ।
 भोगन में रहे लिपटाय विषय रस नित ही पीना ॥
 जन्म मरन नहिं छुटे करम का चक्कर भारी ।
 बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ॥ १ ॥
 वे बड़भागी जीव मिले जिन सतगुरु प्यारे ।
 कर उनका सतसंग चरन उन सिर पर धारे ॥
 सार वचन उर धार हुए करमन से न्यारे ।
 सो मत लीना चीन्ह भरम तज दीने सारे ॥

१—ऊँचा । २—जल्दी ।

बिन गुरु कौन सुनाय जुगत यह सबसे न्यारी ।

बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ॥ २ ॥

प्रीति बढ़त गुरु चरन दिनोंदिन आनंद भारा ।

मेहर से दिया गुरु भेद शब्द का अगम अपारा ॥

ध्यान धरत गुरु रूप हुआ घट में उजियारा ।

निसदिन सुरत लगाय सुनत अनहद भनकारा ॥

बिन गुरु कैसे लगे सुरत की घट में तारी^१ ।

बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ॥ ३ ॥

तिल का द्वारा फोड़ लखा घट जोत उजारा ।

सुन धुन घंटा संख गगन में बजा नगारा ॥

गुरु का दरशन पाय हुआ तन मन से न्यारा ।

करम जाल कट गया जूझ कर काल भी हारा ॥

बिन सतगुरु की सरन नहीं अस होय उबारी ।

बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ॥ ४ ॥

सुन धुन ऊपर चढ़ी करी हंसन संग यारी^२ ।

महासुन्न के पार सुनी मुरली धुन न्यारी^३ ॥

सतपुर पहुँची धाय लगी बीना धुन प्यारी ।

लख अलख अगम का रूप हुई सूरत सुखियारी ॥

राधास्वामी चरनन मिली हुआ आनंद अति भारी ।

बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा नर नारी ॥ ५ ॥

राधास्वामी दयाल के सतगुरुस्वरूप की खोज व बिरह का वर्णन ।

१—शब्द १४३

पिया बिन कैसे जिऊँ मैं प्यारी ।

मेरा तन मन जात फुका री ॥ १ ॥

कोइ संत मिलें अब भारी^१ ।

जो पिया को मिलावें आ री ॥ २ ॥

मैं चढ़ूँ गगन में सारी ।

दिन रात लगे मेरी तारी^२ ॥ ३ ॥

मैं बिरहिन लगी कटारी ।

मैं घायल फिरूँ उजाड़ी^३ ॥ ४ ॥

सतगुरु अब करें सँभारी ।

तब हिरदे घाव पुरा री ॥ ५ ॥

मोहि नाम देहि निज सारी ।

यह मरहम^४ नित लगा री ॥ ६ ॥

राधास्वामी करें दवा री ।

मैं उनपै जाऊँ बलिहारी ॥ ७ ॥

१—बड़े । २—ताड़ी, ध्यान । ३—उजाड़ सँसार में ।

४—घाव में लगाने का लेप ।

१—शब्द १४४

दर्द दुखी जियरा नित तरसे ।
 तन मन में पीर घनेरी^१ ॥ १ ॥
 कोइ सतगुरु संत दया कर हेरें^२ ।
 तो मिटे बिथा^३ घट मेरी ॥ २ ॥
 मैं अति दीन अनाथ अचेती^४ ।
 उन बिन को मोहि गहे^५ री ॥ ३ ॥
 क्या क्या कहूँ काल जस कसिया^६ ।
 फँसिया आन अँधेरी ॥ ४ ॥
 मन की बात मनहिं पुनि जाने ।
 मुख से क्यों कहत बने री ॥ ५ ॥
 अंतरजामी बैद^७ मिलें जब ।
 तब दुख दूर टले री ॥ ६ ॥
 आपहि आप रोग मेरा बूझें ।
 आपहि दें कुछ दवा भली^८ री ॥ ७ ॥
 मैं तो अजान निपट कर^९ मूढ़ा ।
 भूला गैल^{१०} गली री ॥ ८ ॥
 तुम दयाल कस ढील करोगे ।
 जल्दी से अब कर्म दले री ॥ ९ ॥

१—बहुत । २—देखें । ३—तकलीफ । ४—अजान । ५—पकड़े ।

६—बाँधा । ७—वैद्य, हकीम । ८—अच्छी । ९—निपट कर—

अत्यन्त ही । १०—राह ।

सतसँग सार न बूझे चंचल ।
 ठहरत नहिं छिन एक पली^१ री ॥१०॥
 राधास्वामी अचरज धामी ।
 आन मिले, सब पीर हरी री ॥११॥

२—शब्द १४५

बिन सतगुरु दीदार
 तड़प रही मन में ।
 बेकल बिरह सताय
 रही मेरे तन में ॥ १ ॥
 हर दम उठत हिलोर
 याद प्रीतम की ।
 कासे कहूँ जनाय
 बिथा दुख जिय^२ की ॥ २ ॥
 मेरे राधास्वामी दीनदयाल
 चरन उर धारें ।
 निज दर्शन देवें आय
 मोह जग टारें^३ ॥ ३ ॥
 क्या महिमा उनकी कहूँ
 पुरुष अबिनाशी ।

तन मन करूँ कुरबान
 हुई मैं दासी ॥ ४ ॥
 भाव भक्ति हिय राख
 गुरु के सन्मुख आती ।
 मन का कपट हटाय
 जिये^१ की बिपति जनाती ॥ ५ ॥
 राधास्वामी हुए प्रसन्न
 दया कर जुगत उपाई^२ ।
 सतसँग में लिया मेल
 भेद मोहि गुप्त जनाई ॥ ६ ॥
 दिन दिन बढ़त हुलास
 रूप गुरु बिसरत नाहीं ।
 सुमिरूँ राधास्वामी नाम
 बसूँ गुरु चरनन छाहीं ॥ ७ ॥

२—शब्द १४६

अरी हे पड़ोसिन प्यारी,
 कोई जतन बता दो,
 कस मिलै प्रीतम प्यारा ॥ टेक ॥

विरह अगिन नित भड़कत तन में ।
 पिया की पीर नित खटकत मन में ॥
 सहत रहूँ दुख भारा ॥ १ ॥
 कोई बैद मिलें जब भारी^१ ।
 रोग बूझ^२ दें दवा बिचारी ॥
 तब कुछ पाऊँ सहारा ॥ २ ॥
 सतगुरु ऐसे बैद कहावें ।
 प्रीतम से वे तुरत मिलावें ॥
 दे निज चरन अधारा ॥ ३ ॥
 चलो पड़ोसिन गुरु ढिग^३ जावें ।
 बिनती कर निज काज बनावें ॥
 छोड़ें जग अँधियारा ॥ ४ ॥
 सतगुरु हैं वे दीनदयाला ।
 मेहर से छिन में करें निहाला ॥
 अस होय जीव गुजारा ॥ ५ ॥
 प्रेम प्रीति गुरु चरनन लावें ।
 आरत कर उन बहुत रिभावें ॥
 तन मन चरनन वारा ॥ ६ ॥
 भेद सुनावें अतिसे भारी ।
 प्रीतम आपहि गुरु तन धारी ॥
 करते जीव उबारा ॥ ७ ॥

कर पहिचान लिपट रहें चरनन ।
 प्रीति प्रतीति बढ़ावें छिन छिन ॥
 तज सब भरम पसारा ॥ ८ ॥
 राधास्वामी धाम से सतगुरु आवें ।
 जीव दया वे हिये बसावें ॥
 उन गति अगम अपारा ॥ ९ ॥
 भाग उदय हुए आज हमारे ।
 मिल गये राधास्वामी प्रीतम प्यारे ॥
 लखा निज रूप नियारा ॥ १० ॥
 आओ पड़ोसिन गाओ बधाई ।
 राधास्वामी महिमा अगम अथाई^१ ॥
 दम दम शुकर बिचारा ॥ ११ ॥

२—शब्द १४७

आज मेघा^२ रिमझिम बरसे ।
 हिये पिया की पीर सतावे ॥ टेक ॥
 पिया छाय रहे परदेसा ।
 मैं पड़ी काल के देसा ॥
 मोहि निस दिन यही रे अँदेसा ।
 कोइ पिया से आन मिलावे ॥ १ ॥

पपिहा जब पिउ पिउ गावे ।
 मोहि पिया प्यारे की याद आवे ॥
 बिरह अगिन भड़क भड़कावे ।
 पिया बिन को तपन बुझावे ॥ २ ॥
 सतगुरु हितकारी मिलिया ।
 उन पिया का सँदेसा कहिया ॥
 मारग का भेद सुनइया ।
 सुत धुन सँग अधर चढ़ावे ॥ ३ ॥
 मोहि दीन अधीन निहारा ।
 गुरु कीन्ही मेहर अपारा ॥
 मोहि भौजल पार उतारा ।
 सुत चढ़ चढ़ अधिक हरषावे ॥ ४ ॥
 धुन सुन सुत अधर सिधारी^१ ।
 सत अलख अगम्म लखा री ॥
 पिया राधास्वामी रूप निहारी ।
 उन महिमा छिन छिन गावे ॥ ५ ॥

२—शब्द १४८

आज गरज गरज घन गरजे ।
 मेरा जियरा^२ सुन सुन लरजे^३ ॥ टेक ॥

श्याम घटा रही छाई ।
 अमी धार की बरषा लाई ॥
 दामिन^१ की दमक^२ सुहाई ।
 मेरा पिया बिन मनुआँ तरसे ॥ १ ॥
 सतगुरु पिया भेद बतावें ।
 गैल^३ चलन की जुगत लखावें ॥
 उनसे नित प्रीति बढ़ावें ।
 तब पिया प्यारे का पद दरसे ॥ २ ॥
 मैं पिय की पीर दिवानी^४ ।
 मारग की पाय निशानी ॥
 तन मन धन कर कुरबानी ।
 गुरु चरन गगन जाय परसे^५ ॥ ३ ॥
 वहाँ से भी चली अगाड़ी ।
 सतपुर सतरूप निहारी ॥
 गई अलख अगम के पारी ।
 राधास्वामी दरस पाय हरषे ॥ ४ ॥

परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी दयाल व उनके
सतगुरुस्वरूप की महिमा और उनके दर्शन
व सतसंग की प्राप्ति के आनंद व
बिलास का वर्णन ।

१—शब्द १४६

राधास्वामी आय प्रगट हुए जब से ।
राधास्वामी नाम सुनावें तब से ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम जपूँ मैं मन से ।
राधास्वामी दरस मिला अब तन से^१ ॥ २ ॥
राधास्वामी दरस करूँ नैनन से ।
राधास्वामी बचन सुनूँ सरवन से^२ ॥ ३ ॥
राधास्वामी कहत रहूँ हियरे से ।
राधास्वामी सुनत रहूँ जियरे से ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम धरूँ प्रानन से^३ ।
राधास्वामी नाम गहूँ इन्द्रिन से ॥ ५ ॥
राधास्वामी राह चलूँ पाँवन से^४ ।
राधास्वामी सेव करूँ दोउ कर से^५ ॥ ६ ॥
राधास्वामी संग करूँ सब धर से^६ ।
राधास्वामी पास बसूँ अति डर से ॥ ७ ॥

१—नर शरीर में । २—कानों से । ३—धरूँ...से—प्राणों से बढ़कर
मानता हूँ । ४—पैरों से । ५—दोनों हाथों से । ६—शरीर से ।

राधास्वामी गाय रही मैं उमँग से ।
 राधास्वामी ध्याय रही कोइ^१ दिन से ॥ ८ ॥
 राधास्वामी रटन लगी दम दम से ।
 राधास्वामी याद बढ़ी छिन छिन से ॥ ९ ॥
 बिसरत नहिं राधास्वामी जिगर से^२ ।
 बिछड़त नहिं राधास्वामी पलक से ॥ १० ॥
 राधास्वामी रूप देख दोउ तिल^३ से ।
 राधास्वामी प्रीति लगी मेरे दिल से ॥ ११ ॥
 राधास्वामी बोले इक दिन मुझसे ।
 राधास्वामी पर बल गई^४ उस दिन से ॥ १२ ॥
 राधास्वामी महिमा क्या कहूँ किससे ।
 राधास्वामी सरन छुड़ावत जम^५ से ॥ १३ ॥
 राधास्वामी अलग किया भरमन से ।
 राधास्वामी लिया छुटा करमन से ॥ १४ ॥
 राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
 राधास्वामी आये देश अगम से ॥ १५ ॥
 राधास्वामी हंस किया मोहि नर से ।
 राधास्वामी दान दिया निज घर से ॥ १६ ॥
 राधास्वामी भेद सुनाया धुर से^६ ।
 राधास्वामी मोहि छुड़ाया हम^७ से ॥ १७ ॥

१—कुछ । २—हृदय से । ३—आँखों । ४—न्यौछावर हो गई । ५—यमराज ।

६—धुर स्थान से लेकर । ७—अहंकार ।

राधास्वामी अपना किया जगत से ।

राधास्वामी निपट^१ बचाया छल से ॥१८॥

राधास्वामी पार किया भौजल^२ से ।

प्रेम लगा राधास्वामी गुरु से ॥१९॥

मैं चकोर राधास्वामी चंद से ।

मैं कँवला राधास्वामी भान^३ से ॥२०॥

मैं कोकिल^४ राधास्वामी अम्ब^५ से ।

मैं भौरा राधास्वामी कँवल से ॥२१॥

मैं दिनकर^६ राधास्वामी गगन से ।

मैं फनधर^७ राधास्वामी मणि से ॥२२॥

मैं बाली राधास्वामी मात से ।

मैं कुमार^८ राधास्वामी तात^९ से ॥२३॥

मैं दरदी राधास्वामी शान्ति से ।

मैं चकवी राधास्वामी क्रान्ति से^{१०} ॥२४॥

मैं घायल राधास्वामी बिरह से ।

मैं मायल^{११} राधास्वामी तरह^{१२} से ॥२५॥

राधास्वामी शब्द लखाया जुक्ति से ।

राधास्वामी नाम कमाया भक्ति से ॥२६॥

मैं प्यारी राधास्वामी प्यार से ।

मैं मीना^{१३} राधास्वामी धार^{१४} से ॥२७॥

१—बिल्कुल । २—संसार । ३—सूर्य । ४—कोयल । ५—आम ।

६—सूर्य । ७—साँप । ८—बालक । ९—पिता । १०—कान्ति यानी
सूर्य के प्रकाश की तरह । ११—मोहित । १२—चाल ढाल,

अन्दाज । १३—मछली । १४—जल धारा ।

मैं अंडा राधास्वामी कुरम^१ से ।
 मैं तरंग^२ राधास्वामी सिध^३ से ॥२८॥
 मैं गगरी^४ राधास्वामी नीर^५ से ।
 मैं कमान^६ राधास्वामी तीर से ॥२९॥
 मैं भई बन राधास्वामी सिंघ^७ से ।
 मैं हुई तन राधास्वामी जान से ॥३०॥
 मैं बृक्षा राधास्वामी सुफल से ।
 मैं साखा राधास्वामी फूल से ॥३१॥
 मैं दीपक राधास्वामी जोत से ।
 मैं समुंदर^८ राधास्वामी सोत^९ से ॥३२॥
 मैं धरनी^{१०} राधास्वामी मेघ से ।
 मैं सूरा^{११} राधास्वामी तेग^{१२} से ॥३३॥
 मैं देही^{१३} राधास्वामी नैन से ।
 मैं रसना^{१४} राधास्वामी बैन^{१५} से ॥३४॥
 मैं लोहा राधास्वामी नाव^{१६} से ।
 मैं निरधन राधास्वामी साव^{१७} से ॥३५॥
 मैं सीपी राधास्वामी स्वाँति^{१८} से ।
 मैं मोहित राधास्वामी भँति से^{१९} ॥३६॥

१—कूर्म यानी कछुवा । २—लहर । ३—समुद्र । ४—घड़ा ।

५—जल । ६—धनुष । ७—सिंह, शेर । ८—समुद्र । ९—स्रोत ।

१०—पृथ्वी । ११—बहादुर । १२—तलवार । १३—शरीर ।

१४—जबान । १५—बचन । १६—नौका । १७—साहूकार,

धनवान । १८—स्वाँतिजल । १९—भँति से—अन्दाज से ।

मैं जीती राधास्वामी दाँव^१ से ।
 मैं तिरपत^२ राधास्वामी भाव से ॥३७॥
 मैं ब्यंजन राधास्वामी नोन^३ से ।
 मैं अंकुर^४ राधास्वामी पौन^५ से ॥३८॥
 मैं तारा राधास्वामी व्योम^६ से ।
 मैं कुमुदन^७ राधास्वामी सोम^८ से ॥३९॥
 राधास्वामी मेहर^९ चली मैं घट से ।
 राधास्वामी चरन पकड़ मेरी हठ से ॥४०॥
 राधास्वामी मोहि हटाया कपट से ।
 राधास्वामी पार किया तिल पट^{१०} से ॥४१॥
 राधास्वामी बंक^{११} चढ़ाया भट से ।
 राधास्वामी घाट^{१२} मिला औघट^{१३} से ॥४२॥
 राधास्वामी द्वार खुलाया त्रिकुट से ।
 राधास्वामी हंस किया सर तट^{१४} से ॥४३॥
 चढ़ी महासुन राधास्वामी बल से ।
 राधास्वामी शुद्ध किया कलमल^{१५} से ॥४४॥
 राधास्वामी आज मिलाया सोहँग से ।
 सत्तलोक आई राधास्वामी सँग से ॥४५॥

१—बाजी । २—चुप्त । ३—नमक । ४—कुल्ला । ५—हवा । ६—आकाश ।

७—कुमुदिनी, रात को फूलने वाला कमल । ८—चन्द्र । ९—दया से ।

१०—परदे । ११—बंकनाल । १२—ठौर, ठिकाना । १३—बिकट

या अगम्य घाट यानी संसार । १४—मानसरोवर-तीर ।

१५—काल के मैल ।

राधास्वामी अलख लखाया मौज से ।

राधास्वामी अगम दिखाया चौज^१ से ॥४६॥

राधास्वामी रूप लखा सूरत से ।

लगा प्रेम राधास्वामी मूरत से ॥४७॥

मिली जाय राधास्वामी चरन से ।

हुआ उद्धार राधास्वामी सरन से ॥४८॥

राधास्वामी धाम गई मैं धज^२ से ।

राधास्वामी मोहि सिंगारी सज^३ से ॥४९॥

राधास्वामी अंग लगाया उमँग से ।

राधास्वामी भेद मिला सतसँग से ॥५०॥

पार हुई राधास्वामी लगन से ।

राधास्वामी आज हटाया मलन^४ से ॥५१॥

उपमा राधास्वामी कहूँ कौन से ।

राधास्वामी काढ़ा^५ संभी जोन^६ से ॥५२॥

राधास्वामी पाये बहुत कठिन से ।

मिल गये राधास्वामी बड़े जतन से ॥५३॥

पिऊँ अमी राधास्वामी धुन से ।

जाय रलूँ राधास्वामी सुन^७ से ॥५४॥

१—बिलास । २—सज-धज । ३—ठाट-बाट । ४—मलीनता ।

५—निकाला । ६—योनियों से । ७—राधास्वामी धाम

का सुन्न यानी अनामी स्थान ।

१—शब्द १५०

राधास्वामी लिया अपनाय सखी री ।
 शोभा अद्भुत आज लखी री ॥ १ ॥
 राधास्वामी बचन अगाध सुने री ।
 राधास्वामी नाम अराध^१ गुने^२ री ॥ २ ॥
 राधास्वामी अगम अनाम लखे री ।
 राधास्वामी गति कस बुद्धि भखे^३ री ॥ ३ ॥
 राधास्वामी चरन स्पर्श करे री ।
 राधास्वामी हिरदे माहिं धरे री ॥ ४ ॥
 राधास्वामी सँग भौजाल भने^४ री ।
 राधास्वामी संगत काल हने^५ री ॥ ५ ॥
 राधास्वामी काढ़ लिया जग से री ।
 राधास्वामी हंस किया खग^६ से री ॥ ६ ॥
 राधास्वामी अजब सँदेस दिया री ।
 राधास्वामी कहत अँदेश^७ गया री ॥ ७ ॥
 राधास्वामी गोद बिठाया मुझे री ।
 राधास्वामी लेहैं उबार तुझे री ॥ ८ ॥
 राधास्वामी शाम सुबह रट ले री ।
 राधास्वामी आठ जाम^८ भज ले री ॥ ९ ॥
 राधास्वामी पल पल हिये बसे री ।
 राधास्वामी मेहर जताऊँ किसे री ॥ १० ॥

१—भक्ति से । २—सुमिरन किया । ३—कहे । ४—काटा । ५—नाश किया । ६—पक्षी यानी कौआ । ७—अँदेशा, डर । ८—पहर ।

राधास्वामी संग न कोई करे री ।
 राधास्वामी रंग न कोई धरे री ॥११॥
 राधास्वामी जिस पर मेहर करें री ।
 राधास्वामी उसको पकड़ धरें^१ री ॥१२॥
 राधास्वामी मेहर बिना क्या गत री ।
 कस समझे राधास्वामी मत री ॥१३॥
 राधास्वामी चौथा लोक कहें री ।
 राधास्वामी अलख^२ अलोक^३ भनैं^४ री ॥१४॥
 राधास्वामी अगम सुगम कर दें री ।
 राधास्वामी धाम जाय फिर ले री ॥१५॥
 राधास्वामी मिले भाग से अब री ।
 राधास्वामी पकड़ अभी, फिर कब री ॥१६॥
 राधास्वामी लाग^५ बड़ा छिन छिन री ।
 राधास्वामी तेज देख दिन दिन री ॥१७॥
 राधास्वामी देह धरी आ जग री ।
 राधास्वामी काल हटावें ठग री ॥१८॥
 तू राधास्वामी सरन मत तज री ।
 तू राधास्वामी चरन नित भज री ॥१९॥
 राधास्वामी नाम कटें सब अघ^६ री ।
 राधास्वामी काया मथ ली सगरी^७ ॥२०॥

१—मजबूती से पकड़ते हैं । २—अलख लोक को । ३—जिसको लोक भी नहीं कह सकते । ४—कहते हैं । ५—प्रेम । ६—पाप । ७—सारी ।

राधास्वामी शब्द रूप तू सुन री ।
 राधास्वामी सुरत साथ ले धुन री ॥२१॥
 राधास्वामी संग मार ले मन री ।
 राधास्वामी काटें नागिन^१ फन री ॥२२॥
 राधास्वामी से गुरु फिर न मिलें री ।
 राधास्वामी छोड़े^२ न जिसे गहें री ॥२३॥
 राधास्वामी महिमा कौन कहे री ।
 बेद थके और शेष रहे^३ री ॥२४॥
 राधास्वामी गुप्त प्रगट हुए अब री ।
 राधास्वामी भेद दिया मोहि सब री ॥२५॥
 राधास्वामी चमन^४ दिखाया घट री ।
 राधास्वामी खोल दिये सब पट री ॥२६॥
 राधास्वामी कला^५ खिलाई नट री ।
 राधास्वामी गगन चढ़ाया भट^६ री ॥२७॥
 राधास्वामी संग गई सुन तट री ।
 राधास्वामी रंग लिया जग हट री ॥२८॥
 राधास्वामी भरी आज सुत गगरी ।
 राधास्वामी अजब दिखाई नगरी ॥२९॥
 राधास्वामी संग रही मैं पग^७ री ।
 राधास्वामी दमक^८ लखी मैं सगरी^९ ॥३०॥

१—सौपिन सी माया का । २—हार कर रह गये । ३—बारा । ४—खेल ।

५—तुरन्त । ६—रही पग—रल-मिल रही । ७—तेज,

चमक । ८—सारी ।

राधास्वामी मिले भाग उठा जग री ।

अमर हुई राधास्वामी सँग लग री ॥३१॥

राधास्वामी सरन प्रीति हुई जिगरी ।

राधास्वामी अजब सुनाई धुन किंगरी ॥३२॥

राधास्वामी किया मोहि अपना री ।

राधास्वामी दिया मिटा खपना^१ री ॥३३॥

राधास्वामी जगत किया सुपना री ।

राधास्वामी दूर किया तपना री ॥३४॥

राधास्वामी नाम सदा जपना री ।

राधास्वामी दरस आज तकना^२ री ॥३५॥

राधास्वामी भेद न काहू^३ कहना री ।

राधास्वामी बिन जग बिच बहना री ॥३६॥

राधास्वामी दिया शब्द गहना^४ री ।

राधास्वामी चंद नहीं गहना^५ री ॥३७॥

राधास्वामी संग न दुख सहना री ।

राधास्वामी संग सुखी रहना री ॥३८॥

राधास्वामी परम बिलास दिया री ।

राधास्वामी भौजल पार किया री ॥३९॥

राधास्वामी कर्म भर्म काटे री ।

राधास्वामी चरन जमी चाटे री ॥४०॥

१—कर्म-धर्म में वृथा पचना । २—देखना । ३—किसी से । ४—भूषण,

जेवर । ५—ग्रहण, चंद्रग्रहण ।

राधास्वामी आरत नित्त करूँ री ।

राधास्वामी कहें सो चित्त धरूँ री ॥४१॥

राधास्वामी प्रेम जगाय रहूँ री ।

राधास्वामी राधास्वामी नित्त भजूँ री ॥४२॥

राधास्वामी कहना मान चली री ।

राधास्वामी ध्यान^१ अब जाय मिली री ॥४३॥

राधास्वामी सीत^२ मिला मोहि जब री ।

राधास्वामी शुद्ध किया मोहि तब री ॥४४॥

राधास्वामी गुन कस गाऊँ अली^३ री ।

राधास्वामी गगन दिखाई गली^४ री ॥४५॥

राधास्वामी कमर बँधाई भली री ।

राधास्वामी धुन में जाय पिली री ॥४६॥

राधास्वामी सब बिधि काज किया री ।

राधास्वामी अचरज साज^५ दिया री ॥४७॥

राधास्वामी आसन अधर धरा री ।

राधास्वामी दर्शन वहीं करा री ॥४८॥

राधास्वामी शोभा अजब बनी री ।

राधास्वामी छवि पर दृष्टि तनी^६ री ॥४९॥

राधास्वामी जीव उद्धार करें री ।

राधास्वामी संत औतार धरें री ॥५०॥

१—ध्यान कर के । २—सीतप्रसाद । ३—सखी । ४—राह ।

५—सामान । ६—खिंची, लगी ।

राधास्वामी मत कुछ अजब^१ चला री ।

राधास्वामी भेद अब दिया भला री ॥५१॥

राधास्वामी गिनें न ब्रह्मज्ञान री ।

राधास्वामी थापें^२ न जोग ध्यान री ॥५२॥

राधास्वामी मानें न राम कृष्ण री ।

राधास्वामी मानें न ब्रह्मा विष्णु री ॥५३॥

राधास्वामी पूजें न शिव गनेश री ।

राधास्वामी पूजें न गौरि शेष री ॥५४॥

राधास्वामी मानें न कर्म धर्म री ।

राधास्वामी जप तप जानें भर्म री ॥५५॥

राधास्वामी मानें न तीरथ व्रत री ।

राधास्वामी मानें न शास्त्र स्मृत^३ री ॥५६॥

राधास्वामी मानें न सूर चंद री ।

राधास्वामी मानें न गंग जमन^४ री ॥५७॥

राधास्वामी काटें पिछली टेक री ।

राधास्वामी भर्म न राखें एक री ॥५८॥

राधास्वामी बुतपूजा^५ न धार री ।

राधास्वामी पित्रपूजा^६ न कार री ॥५९॥

राधास्वामी कहें गुरुभक्ति साध री ।

राधास्वामी भजन बतावें नाद^७ री ॥६०॥

१—अनोखा । २—स्थापित करें । ३—स्मृतियाँ । ४—यमुना ।

५—मूर्ति-पूजा । ६—श्राद्ध-तर्पण आदि । ७—शब्द ।

राधास्वामी सतसँग करो कहें री ।
 राधास्वामी वक्त्र गुरु थरपें^१ री ॥६१॥
 राधास्वामी ज्ञात न पाँत रखें री ।
 राधास्वामी हिन्दू न तुर्क गहें री ॥६२॥
 राधास्वामी बर्न आस्रम^२ न गायेँ री ।
 राधास्वामी मिथ्या भर्म सुनायेँ री ॥६३॥
 राधास्वामी भक्ती बर्न बतायेँ री ।
 राधास्वामी गुरु की भक्ति दृढ़ायेँ री ॥६४॥
 राधास्वामी बेद कतेब उढ़ायेँ री ।
 राधास्वामी मुरशिदकौल^३ ठहरायेँ री ॥६५॥
 राधास्वामी मुरशिद खुदा दिखायेँ री ।
 राधास्वामी पीरपरस्ती^४ सिखायेँ री ॥६६॥
 राधास्वामी रोज़ा नमाज़ उठायेँ री ।
 राधास्वामी मसजिद बाँग छुड़ायेँ री ॥६७॥
 राधास्वामी काबा न हज्ज करायेँ री ।
 राधास्वामी कुराँ न वज़ीफ़ा^५ पढ़ायेँ री ॥६८॥
 राधास्वामी दिल पर क़ाबू दिलायेँ री ।
 राधास्वामी नफ़्स अमारा^६ गिरायेँ री ॥६९॥
 राधास्वामी रूह असमान चढ़ायेँ री ।
 राधास्वामी घट में अर्श^७ दिखायेँ री ॥७०॥

१—जीवित गुरु स्थापित करते हैं । २—चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय,
 वैश्य, शूद्र । चार आश्रम—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और
 संन्यास । ३—गुरु-वचन । ४—गुरु-पूजा । ५—जप ।
 ६—मलीन मन । ७—चैतन्याकश ।

राधास्वामी रूह मेराज^१ दिलाये^२ री ।
 राधास्वामी तन में खुदा मिलाये^३ री ॥७१॥
 राधास्वामी फ़कर^४ को बड़ा बताये^५ री ।
 राधास्वामी कहत रसूल^६ न पाये^७ री ॥७२॥
 राधास्वामी सात मुक़ाम लखाये^८ री ।
 राधास्वामी फ़कर मरातिब^९ गायें री ॥७३॥
 राधास्वामी शग़ल अवाज़^{१०} कराये^{११} री ।
 राधास्वामी रूह को सौत^{१२} सुनाये^{१३} री ॥७४॥
 राधास्वामी सुरत और शब्द मथें री ।
 राधास्वामी रूह और सौत कथें री ॥७५॥
 राधास्वामी अनहद नाद कहें री ।
 राधास्वामी सौत सरमदी^{१४} गहें री ॥७६॥
 राधास्वामी आदि धाम से आये री ।
 राधास्वामी सब से ऊँच धाये री ॥७७॥
 राधास्वामी की है प्रथम मंज़िल री ।
 सो सब मत सिद्धान्त समझ री ॥७८॥
 राधास्वामी पहली मँज़िल कही री ।
 सब मत का सिद्धान्त वही री ॥७९॥
 राधास्वामी मत अब बहुत बड़ा री ।
 राधास्वामी मत यह जान पड़ा री ॥८०॥

राधास्वामी सात मंजिल^१ बरनें री ।
 राधास्वामी भिन भिन कहें निरने^२ री ॥८१॥
 राधास्वामी गति सब भँति बड़ी री ।
 राधास्वामी चरनन सुरत अड़ी^३ री ॥८२॥
 राधास्वामी हैरत^४ धाम रहें री ।
 राधास्वामी अचरज नाम कहें री ॥८३॥
 राधास्वामी चुंबक मैं लोहा री ।
 राधास्वामी रूप निरख मोहा री ॥८४॥
 राधास्वामी भृङ्गी^५ मैं कीड़ा री ।
 राधास्वामी सकल हरी पीड़ा री ॥८५॥
 राधास्वामी पहुँचे दूर देस री ।
 राधास्वामी अपना दिया सँदेस री ॥८६॥
 राधास्वामी कँवला मैं भँवरा री ।
 राधास्वामी दरश देख सँवरा^६ री ॥८७॥
 राधास्वामी कहें सोई करना री ।
 राधास्वामी चरन सीस धरना री ॥८८॥
 राधास्वामी उपमा कौन करे री ।
 राधास्वामी सरन जीव उधरे री ॥८९॥
 राधास्वामी मूरत देख जिऊँ री ।
 राधास्वामी अमृत नाम पिऊँ री ॥९०॥

१—मुकाम, स्थान । २—अलग अलग निर्णय करते हैं । ३—स्थिर हुई ।

४—अद्भुत । ५—वह भँवरी जिसके संबंध में खयाल किया जाता है कि वह कीड़े को अपने ही जैसा बना लेती है । ६—दुरुस्त हो गया ।

राधास्वामी सँग घट खोज करूँ री ।
 राधास्वामी सँग पट मौज लहूँ^१ री ॥६१॥
 राधास्वामी सँग अब सुरत भरूँ री ।
 राधास्वामी सँग धुन शब्द सुनूँ री ॥६२॥
 राधास्वामी सँग तिल तोड़ चलूँ री ।
 राधास्वामी सँग नभ फोड़ मिलूँ री ॥६३॥
 राधास्वामी सँग फिर जोत लखूँ री ।
 राधास्वामी सँग सुन भेद तकूँ री ॥६४॥
 राधास्वामी सँग नल बंक धसूँ री ।
 राधास्वामी सँग चढ़ गगन हँसूँ री ॥६५॥
 राधास्वामी सँग दस द्वार गहूँ री ।
 राधास्वामी सँग महासुन्न चढ़ूँ री ॥६६॥
 राधास्वामी सँग मैं गुफा रहूँ री ।
 राधास्वामी सँग सतनाम लगूँ री ॥६७॥
 राधास्वामी सँग मैं अलख लखूँ री ।
 राधास्वामी सँग अब अगम भखूँ^२ री ॥६८॥
 राधास्वामी राधास्वामी रंग रँगूँ री ।
 राधास्वामी राधास्वामी धाम बसूँ री ॥६९॥
 राधास्वामी कहें सो कार^३ करूँ री ।
 राधास्वामी राधास्वामी पकड़ धरूँ री ॥१००॥

राधास्वामी लीला ताक तकूँ री ।
 राधास्वामी महल अब जाय पकूँ री ॥१०१॥
 राधास्वामी शोभा अब कहुँ री ।
 राधास्वामी आगे खड़ी रहूँ री ॥१०२॥
 राधास्वामी तख्त^१ बिराज रहे री ।
 राधास्वामी सख्त बिकार दहे री ॥१०३॥
 राधास्वामी जीव निवाज रहे^२ री ।
 राधास्वामी पीव^३ हमार भये री ॥१०४॥
 राधास्वामी अतिकर दयाल हुए री ।
 राधास्वामी दया जम काल मुएँ री ॥१०५॥
 राधास्वामी अब मोहि अमर किया री ।
 राधास्वामी पद मोहि अजर^४ दिया री ॥१०६॥
 राधास्वामी गुन गाऊँ नित नित री ।
 राधास्वामी मात हुए और पित री ॥१०७॥
 राधास्वामी सबसे अलग किया री ।
 राधास्वामी सब बल तोड़ दिया री ॥१०८॥

१—शब्द १५१

देव री सखी मोहि उमँग बधाई ।
 अब मेरे आनँद उर न समाई ॥ १ ॥

१—सिंहासन पर । २—जीवों पर दया कर रहे हैं । ३—पति ।

४—मरे । ५—एकसा रहने वाला ।

छिन छिन हरखूँ पल पल निरखूँ ।
 अबि राधास्वामी मोसे कही न जाई ॥ २ ॥
 आरत थाली लीन सजाई ।
 प्रेम सहित रस^१ भर भर गाई ॥ ३ ॥
 चरन सरन गुरु लाग बढ़ाई ।
 अधिक बिलास रहा मन छाई ॥ ४ ॥
 कहा कहूँ यह घड़ी सुहाई ।
 सुरत हंसनी गई है लुभाई ॥ ५ ॥
 शब्द गुरु धुन गगन सुनाई ।
 अमी धार धुर से चल आई ॥ ६ ॥
 रोम रोम और अँग अँग न्हाई ।
 बरन विनोद कहूँ कस^२ भाई ॥ ७ ॥
 लिख लिख कर कुछ सैन जनाई ।
 जानेंगे मेरे जो गुरु भाई ॥ ८ ॥
 राधास्वामी कहत बनाई ।
 चार लोक में फिरी है दुहाई ॥ ९ ॥
 सत्तनाम धुन बीन बजाई ।
 काल बली अति मुरछा^३ खाई ॥ १० ॥
 अलख अगम दोउ मेहर कराई ।
 राधास्वामी राधास्वामी दरश दिखाई ॥ ११ ॥

१—उमंग । रस भर भर—उमंग से भर कर ।

२—आनन्द का वर्णन कैसे करूँ । ३—मूर्छा ।

१—शब्द १५२

आज बधावा^१ राधास्वामी गाऊँ ।

चरन कँवल गुरु प्रेम बढ़ाऊँ ॥ १ ॥

हरख अधिक अब हिये समाऊँ ।

राधास्वामी रूप चित्त में लाऊँ ॥ २ ॥

आज दिवस मेरा भाग अनोखा^२ ।

दरशन राधास्वामी मन को पोखा^३ ॥ ३ ॥

सतगुरु पूरे अंग लगाया ।

राधास्वामी अचरज खेल दिखाया ॥ ४ ॥

बाजत घट में अनहद तूरा ।

राधास्वामी राधास्वामी खुला जहूरा ॥ ५ ॥

जगा भाग मेरा अति गंभीरा^४ ।

राधास्वामी नाम कहत मन धीरा ॥ ६ ॥

खुल गये बज्र किवाड़ अर्श^५ के ।

दर्शन पाये राधास्वामी पुर्ष के ॥ ७ ॥

शोभा अधिक कहाँ लग भाखूँ ।

राधास्वामी मूरत नैनन ताकूँ ॥ ८ ॥

दरस अधार जिऊँ छिन छिन में ।

राधास्वामी गुन गाऊँ पल पल में ॥ ९ ॥

१—आनन्द का गीत । २—अद्भुत । ३—पुष्ट किया ।

४—बहुत बड़ा । ५—चैतन्याकाश ।

गुन गावत मन होत हुलासा ।

राधास्वामी चरन बँधी मम^१ आसा ॥१०॥

मीन मगन जस जल के माहीं ।

राधास्वामी सरन छुटत अब नाहीं ॥११॥

केल^२ करूँ नित उनके संगी ।

राधास्वामी किये भरम सब भंगा^३ ॥१२॥

निरमल होय चरन लिपटानी ।

राधास्वामी गति अति अगम बखानी ॥१३॥

आनंद मंगल अब रहा छाई ।

राधास्वामी आगे गाऊँ बधाई ॥१४॥

अजब बधावा राधास्वामी गाया ।

उलट पलट राधास्वामी रिझाया^४ ॥१५॥

१—शब्द १५३

आज मेरे धूम भई है भारी ।

कहूँ क्या राधास्वामी रूप निहारी ॥ १ ॥

घाट अब हो गया सुखमन^५ जारी ।

आरती राधास्वामी करूँ सँवारी ॥ २ ॥

प्रेम रँग भीज गई सुत सारी ।

निरत^६ संग राधास्वामी कीन पुकारी ॥ ३ ॥

१—मेरी । २—कलोल । ३—नाश । ४—प्रसन्न किया ।

५—सुषुम्ना । ६—सुरत का निर्णय करने वाला अंग ।

हुई जाय सुन में शब्द अधारी ।
 चरन में राधास्वामी माथ^१ धरा री ॥ ४ ॥
 कहूँ क्या आरत गावत न्यारी ।
 लगी मोहिराधास्वामी धुन अब प्यारी ॥ ५ ॥
 अगम गति कैसे कोई विचारी ।
 रीति कुछ राधास्वामी अचरज धारी ॥ ६ ॥
 छोड़ अब तन मन चढ़त अटारी ।
 जहाँ राधास्वामी तख्त बिछा री ॥ ७ ॥
 टहल^२ में रहती निस दिन ठाड़ी^३ ।
 अमीरस राधास्वामी दीन अहारी ॥ ८ ॥
 बड़ा अब भाग अपार जगा री ।
 तेज राधास्वामी बहुत बढ़ा री ॥ ९ ॥
 कौन यह पावे घट उजियारी ।
 दई राधास्वामी लाभ अपारी ॥ १० ॥
 धुनन की होत सदा भनकारी ।
 कीन राधास्वामी मोहि अपना री ॥ ११ ॥
 इड़ा तज पिंगला खोज करा री ।
 सिखर चढ़ राधास्वामी घोर^४ सुनारी ॥ १२ ॥
 सोहँग में बंसी आन पुकारी ।
 अजब गति राधास्वामी देखी न्यारी ॥ १३ ॥

काल पुनि हारा कर्म कटा री ।
 लगी ऐसी राधास्वामी नाम कटारी ॥१४॥
 सत्त सर गई सुरत पनिहारी^१ ।
 भरी राधास्वामी गगरी भारी ॥१५॥
 हंसनी हो गई हंसन प्यारी ।
 पिया अब राधास्वामी नाम सुधा^२ री ॥१६॥
 कहत मैं महिमा राधास्वामी हारी ।
 करी मैं आरत राधास्वामी सारी ॥१७॥

१—शब्द १५४

गुरु के दरस पर मैं बलिहारी ।
 गुरु के चरन मेरे प्रान अधारी ॥ १ ॥
 गुरु के बचन मेरे हिये सिंगारी ।
 गुरु सरूप दिन रैन सँभारी ॥ २ ॥
 गुरु का सँग कर छिन छिन प्यारी ।
 गुरु का रँग ले नैन निहारी ॥ ३ ॥
 गुरु के धाम^३ पर सुरत लगा री ।
 नीलसिखर चढ़ श्याम तका री ॥ ४ ॥
 सेत सूर जहाँ नूर^४ लखा री ।
 शब्द अनाहद तूर बजा री ॥ ५ ॥

मुरली धमक और बीन सुना री ।
 अद्भुत रस अचरज सुख भारी ॥ ६ ॥
 बिरले संत यह भेद पुकारी ।
 तू भी सरन पड़ उनकी जा री ॥ ७ ॥
 ज्यों मीना जलधार समा री ।
 ज्यों चकोर चंदा निरखा री ॥ ८ ॥
 अस पिरीति^१ सतगुरु सँग ला री ।
 कर प्रतीति घट होत उजारी ॥ ९ ॥
 भाग बिना क्या करे बिचारी ।
 यह भी भाग गुरू से पा री ॥ १० ॥
 राधास्वामी कही जुक्ति यह सारी^२ ।
 उनके चरन से प्रेम लगा री ॥ ११ ॥

१—शब्द १५५

जीव चिताय रहे राधास्वामी ।
 सतपुर निज पुर अगम अधामी^३ ॥ १ ॥
 भाग उदय उन जीवन भारी ।
 राधास्वामी जिन घर चरन पधारी ॥ २ ॥
 कौन कहे महिमा इस औसर ।
 हारे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ॥ ३ ॥

१—प्रीति । २—उत्तम । ३—लामकाँ ।

इक इक जीव काज किया अपना ।

गुरु आरत कर हुए अति मगना ॥ ४ ॥

गुरु सँग हंस फौज चल आई ।

कर सन्मान^१ हार पहिनाई ॥ ५ ॥

भोजन बस्त्र देख सब हरखे ।

अति कर प्रीति भाव इन परखे ॥ ६ ॥

हुए प्रसन्न सतगुरु अबिनासी ।

दिया दान किया सतपुर बासी ॥ ७ ॥

अन^२ धन और संतान भोग रस ।

जक्त भोग और मिला जोग रस ॥ ८ ॥

पर किरपा सतगुरु अस रहई ।

मोह न ब्यापे जग नहिं फँसई ॥ ९ ॥

रहे सुरत निरमल गुरु साथी ।

शब्द मिले रहे चरनन माथा ॥ १० ॥

अपनी दया से गुरु दियो दाना ।

सेवक तो कुछ माँग न जाना ॥ ११ ॥

दया करें जब सतगुरु अपनी ।

बिना माँग करवावें करनी ॥ १२ ॥

नाम अनाम पदारथ न्यारा^३ ।

सो सतगुरु दीन्हा कर प्यारा ॥ १३ ॥

अब देवे को कुछ न रहाई ।
 सतगुरु ही तेरे हुए भाई ॥१४॥
 राधास्वामी कहा बनाई ।
 सदा रहे सतनाम सहाई ॥१५॥

१—शब्द १५६

जाग री उठ खेल सुहागिन ।
 पिया मिले बड़े भाग^१ ॥ १ ॥
 लाग री उन चरनन ।
 फिर न मिले अस दाव^२ ॥ २ ॥
 सखी सहेली सब जुड़ आई^३ ।
 गावत मंगल राग ॥ ३ ॥
 शोभा भारी रूप निहारी ।
 बढ़ा प्रेम अनुराग ॥ ४ ॥
 बजी बधाई हर्ष समाई ।
 भाग चला बैराग ॥ ५ ॥
 भक्ति भावनी^३ निरमल करनी ।
 खेलत निजकर फाग ॥ ६ ॥
 सत्त सरोवर मंजन^४ कीन्हा ।
 धोये कलमल^५ दाग ॥ ७ ॥

१—सुशकिस्मती । २—अवसर । ३—सुन्दर । ४—स्नान ।

५—काल के मल के ।

सतगुरु सरन हंस होय बैठी ।

छूटी संगत काग^१ ॥ ८ ॥

राधास्वामी मगन हुए जब ।

दुर्मति^२ दीन्ही त्याग ॥ ९ ॥

१—शब्द १५७

आज घड़ी अति पावन^३ भावन^४ ।

राधास्वामी आये जक्क चितावन ॥ १ ॥

जाके गिरह^५ प्रेम पग^६ धारन ।

तिन जीवन का करें उबारन ॥ २ ॥

आनँद मंगल हर्ष सुहावन ।

जुड़ मिल हंस लगे गुन गावन ॥ ३ ॥

शोभा अधिक न जाय बखानन ।

कहँ लग कहँ वार नहिं पारन^७ ॥ ४ ॥

राधास्वामी शब्द मनावन ।

सुरत चढ़ी देखा घट चाँदन^८ ॥ ५ ॥

१—कौआ । २—कुबुद्धि । ३—पवित्र । ४—प्यारी । ५—गृह, घर ।

६—चरण । ७—वारनहिंपारन—ओर ओर नहीं है । ८—प्रकाश ।

१—शब्द १५८

कौन करे आरत सतगुरु की ॥ टेक ॥
ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं ।

मिली नहीं यह पदवी^१ ॥ १ ॥
कोटि तेतीसों^२ राग बैरागी ।

इंद्र मुनिन्दर^३ भटकी ॥ २ ॥
सतगुरु बिना खोज नहिं पाया ।

करम भरम बिच अटकी ॥ ३ ॥
बड़े भाग जानो अब उनके ।

जिनको सरन परापत^४ गुरु की ॥ ४ ॥
गुरु समान समरथ नहिं कोई ।

जिन धुर^५ घर की आन खबर दी ॥ ५ ॥
मेरे भाग बड़े अब जागे ।

मिल सतगुरु सँग आरत करती ॥ ६ ॥
भाव भक्ति क्या क्या दिखलाऊँ ।

मैं सतगुरु बिन और^६ न रखती ॥ ७ ॥
गुरु की दया सहसदल पाया ।

त्रिकुटी चढ़ कर सुन्न परखती ॥ ८ ॥
महासुन्न और भँवरगुफा लख ।

सत्तलोक चढ़ अधिक हरषती ॥ ९ ॥

१—दरजा, प्रतिष्ठा । २—तेतीस कोटि देवता । ३—मुनीन्द्र यानी
बड़े बड़े मुनि । ४—प्राप्त । ५—असली । ६—दूसरा ।

अलख अगम दरसे पद दोनों ।

आगे राधास्वामी चरन परसती^१ ॥ १० ॥

१—शब्द १५६*

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में ।

गुरु होय जीव चिताये ॥ १ ॥

जिन जिन माना बचन समझ के ।

तिनको संग लगाये ॥ २ ॥

कर सतसंग सार रस पाया ।

पी पी तृप्त अघाये^२ ॥ ३ ॥

गुरु सँग प्रीति करी उन ऐसी ।

जस चकोर चंदाये ॥ ४ ॥

गुरु बिन कल नहि पड़त घड़ी इक ।

दम दम मन अकुलाये^३ ॥ ५ ॥

जब गुरु दर्शन मिले भाग से ।

मगन होत जस बछड़ा गाये^४ ॥ ६ ॥

ऐसी प्रीति लगी जिन गुरुमुख ।

सो सो गुरु अपनाये ॥ ७ ॥

१—स्पर्श करती । २—सन्तुष्ट हो गये । ३—व्याकुल होता है । ४—बछड़ा

गाय से मिलने पर ।

*इस शब्द के ढंग पर परम गुरु हुजूर महाराज ने भी

एक शब्द रचा है ।

तन की लगन भोग इंद्री के ।

छिन में सब बिसराये^१ ॥ ८ ॥

गुरु की मूरत बसी हिये में ।

आठ पहर गुरु संग रहाये ॥ ९ ॥

अस गुरुभक्ति करी जिन पूरी ।

ते ते नाम समाये ॥ १० ॥

स्वाँति बूँद जस रटत^२ पपीहा ।

अस धुन नाम लगाये ॥ ११ ॥

नाम प्रताप सुरत अब जागी ।

तब घट शब्द सुनाये ॥ १२ ॥

शब्द पाय गुरुशब्द^३ समानी ।

सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये ॥ १३ ॥

अलख शब्द और अगम शब्द ले ।

निज पद राधास्वामी आये ॥ १४ ॥

पूरा घर पूरी गति पाई ।

अब कुछ आगे कहा न जाये ॥ १५ ॥

१—भुला दिये । २—रटता या पुकारता है ।

३—त्रिकुटी के शब्द में ।

१—शब्द १६०*

संत किया सतसंग जगत में ।
 निज घर भेद सुनाये ॥ १ ॥
 जिन जिन धारा बचन प्रेम से ।
 तिन पर दया कराये ॥ २ ॥
 ले उपदेश उन जुगत कमाई ।
 अंतर ध्यान धराये ॥ ३ ॥
 गुरु का रूप बसा अब घट में ।
 दरशन कर मगनाये^१ ॥ ४ ॥
 बिन गुरु चरन विकल मन रहता ।
 दम दम तार लगाये^२ ॥ ५ ॥
 जब गुरु परचा देयँ मेहर से ।
 फूलत तन न समाये ॥ ६ ॥
 ऐसी लगन लगी जिन हिये में ।
 सो गुरु चरन समाये ॥ ७ ॥
 उमँग उमँग गुरु दरशन लागी ।
 जग और देह बिसराये ॥ ८ ॥
 नित्त बिलास करै अब घट में ।
 धुन भनकार सुनाये ॥ ९ ॥

१—प्रसन्न हुए । २—अंतर में सुरत को जोड़ते हैं ।

*परम गुरु हुजूर महाराज का यह शब्द परम गुरु हुजूर स्वामीजी
 महाराज के उस शब्द के ढंग पर है जो सन् २६२ पर प्रारंभ
 होता है ।

अस गुरु रूप ध्यान धरा जिन जिन ।

तिन घट पाट खुलाये ॥१०॥

मीन मगन रहे जस जल माहीं ।

अस सुन^१ शब्द समाये ॥११॥

मन से छूट सुरत हुई निरमल ।

तब सत शब्द लगाये ॥१२॥

सत्तपुरुष का दरशन पा कर ।

अलख अगम दरसाये ॥१३॥

भर भर प्रेम आरती गावत ।

राधास्वामी सन्मुख आये ॥१४॥

पूरन मेहर करी राधास्वामी ।

पूरा काज बनाये ॥१५॥

मगन होय सुत चरनन लागी ।

अब कुछ कहा न जाये ॥१६॥

१—शब्द १६१*

मोहि मिला सुहाग गुरु का ।

मैं पाया नाम गुरु का ॥ १ ॥

मैं सरना लिया गुरु का ।

मैं किंकर^२ हुआ गुरु का ॥ २ ॥

१—सुन्न पद के । २—तुच्छ दास ।

*इस शब्द के ढंग पर परम गुरु हुजूर महाराज ने भी
एक शब्द रचा है ।

मेरे मस्तक हाथ गुरु का ।
 मैं हुआ गुलाम गुरु का ॥ ३ ॥
 मैं पाया अधार गुरु का ।
 मैं पकड़ा चरन गुरु का ॥ ४ ॥
 मैं सरबस^१ हुआ गुरु का ।
 मैं हो गया अपने गुरु का ॥ ५ ॥
 कोई और न मुझ सा गुरु का ।
 गुरु का मैं गुरु का गुरु का ॥ ६ ॥
 राधास्वामी नाम यह धुर^२ का ।
 मैं पाया धाम उधर का ॥ ७ ॥

२—शब्द १६२*

मैं पाया दरस गुरु का ।
 मैं परसा चरन गुरु का ॥ १ ॥
 मैं ध्याऊँ रूप गुरु का ।
 मैं गाऊँ नाम गुरु का ॥ २ ॥
 मैं सेऊँ चरन गुरु का ।
 मैं दासन दास गुरु का ॥ ३ ॥
 मेरे हिये बसा शब्द गुरु का ।
 मैं धारा रंग गुरु का ॥ ४ ॥

१—पूर्ण रूप से । २—आसिरी स्थान ।

❀परम गुरु हुजूर महाराज का यह शब्द परम गुरु हुजूर स्वामीजी महाराज के उस शब्द के ढंग पर है जो सन् २६५ पर प्रारंभ होता है ।

मैं जग तज हुआ गुरु का ।
 मैं सचमुच हुआ गुरु का ॥ ५ ॥
 मोपै हो गया करम^१ गुरु का ।
 मोहि बख्शा प्रेम गुरु का ॥ ६ ॥
 मैं पकड़ा संग गुरु का ।
 मैं धारा ढंग गुरु का ॥ ७ ॥
 प्यारे राधास्वामी नाम गुरु का ।
 सबके परे धाम गुरु का ॥ ८ ॥

२-शब्द १६३

सखी री मेरे भाग बढ़े ।
 मुझे राधास्वामी मिले हैं दयाल ॥ १ ॥
 सखी री मेरे भाग जगे ।
 मोपै सतगुरु हुए हैं दयाल ॥ २ ॥
 आलस नींद न मोहि सतावें ।
 दरशन रस लेऊँ हाल^२ ॥ ३ ॥
 कृपादृष्टि से सुरत चढ़ावें ।
 सहजहि करत निहाल ॥ ४ ॥
 मगन रहूँ हर दम हिय अपने ।
 गुरु के चरन सँभाल ॥ ५ ॥

सेवा करूँ दरश पुनि पाऊँ ।
 हरखूँ निरख जमाल^१ ॥ ६ ॥
 सतसँग बचन रसीले लागे ।
 मोहे मन और काल ॥ ७ ॥
 दस इंद्री मैं उलटी तानूँ ।
 पाऊँ अमी रस हाल ॥ ८ ॥
 संसारी से मेल न चाहूँ ।
 भोग सभी जंजाल ॥ ९ ॥
 राधास्वामी चरन बसैं मेरे हिय में ।
 यहि मेरी माँग और चाल ॥ १० ॥
 राधास्वामी महिमा कोइ न जाने ।
 सब फँसे काल के जाल ॥ ११ ॥
 कृपादृष्टि से मुझको हेरा ।
 मेटे सब दुख साल^२ ॥ १२ ॥

२—शब्द १६४

सखी री मेरे प्यारे का कर दीदार ।
 सखी री उन चरनों का कर आधार ॥ १ ॥
 सखी री मेरे प्यारे की देख बहार ।
 सखी री उन नैनों को निरख निहार ॥ २ ॥

सखी री उस मुखड़े पै जाउँ बलिहार ।

सखी री मैं तो तन मन देउँगी वार ॥ ३ ॥

सखी री उन महिमा अपर अपार ।

सखी री तोहि क्यों नहि आवे प्यार ॥ ४ ॥

सखी री अब छोड़ो जगत लवार ।

सखी री सुन बचन सँभार सँभार ॥ ५ ॥

सखी री तोहि वही उतारें पार ।

गावो गुन उनका बारम्बार ॥ ६ ॥

वही हैं सबके सत करतार ।

रहो तुम दम दम शुकलगुजार ॥ ७ ॥

सखी री तन मन से हो जा न्यार ।

निरख तब हिये में अजब बहार ॥ ८ ॥

खिला तेरे घट में एक गुलजार ।

बजें जहाँ बाजे अनेक प्रकार ॥ ९ ॥

मृदंग और घंटा सारंग सार ।

वीन और मुरली करत पुकार ॥ १० ॥

पकड़ राधास्वामी चरन सँभार ।

मेहर से पहुँचे धुर दरबार ॥ ११ ॥

२—शब्द १६५

सखी री मेरे दिन प्रति आनंद होय ॥ टेक ॥

पाये दरस राधास्वामी चरन के ।

दिन प्रति आनंद होय ॥ १ ॥

राधास्वामी मेरे परम पियारे ।

उन बिन और न दीखे कोय ॥ २ ॥

सहसकँवल और गगन मानसर ।

राधास्वामी अंस बिराजत दोय ॥ ३ ॥

भँवरगुफा पर सत्तभवन में ।

सत्तपुरुष की बैठक होय ॥ ४ ॥

राधास्वामी महल अनूप अपारा ।

अलख अगम परे सोय ॥ ५ ॥

राधास्वामी परम उदार दयाला ।

जीव दयाकर^१ समरथ सोय ॥ ६ ॥

सतगुरु रूप धार जग आए ।

काल करम दोउ बैठे रोय ॥ ७ ॥

निज मारग परघट कर गाया ।

प्रेम सहित सुत शब्द समोय ॥ ८ ॥

अगनित जीव उबार लिए हैं ।

पाप पुन्य सब डारे धोय ॥ ९ ॥

दास निकाम^२ भरमता जग में ।

अपनी दया से दिया दरशन मोहि ॥ १० ॥

करम भरम के बंधन काटे ।
 जन्म जन्म के पातक^१ खोय ॥११॥
 जैसी लीला राधास्वामी धारी ।
 ऐसी जग में हुई है न होय ॥१२॥
 बारम्बार करूँ मैं बिनती ।
 मागूँ दान सो दीजे मोहि ॥१३॥
 दरशन बचन अमी परशादी ।
 चरनामृत मुखअमृत दोय ॥१४॥
 प्रेम भक्ति और बिलास नवीना ।
 दिन प्रति मोहि परापत होय ॥१५॥
 कभी न बिछड़ूँ चरन सरन से ।
 यही दास को बख्शिष होय ॥१६॥
 राधास्वामी प्यारे दुखहर^२ मेरे ।
 अब नहिं बिछड़न होय ॥१७॥

२—शब्द १६६

सखी री मेरे राधास्वामी परम पियारे ॥ टेक ॥
 अपने गुरु पै मैं बल बल जाऊँ ।
 आप आय मोहि तारे ॥ १ ॥
 मैं अनजान भरम बस रहता ।
 भेद दिया मोहि सारे ॥ २ ॥

काल करम को छिन में टारा ।
 जग से किया मोहि न्यारे ॥ ३ ॥
 सहज जोग की जुगत बताई ।
 सूरत शब्द लगा रे ॥ ४ ॥
 चढ़ी सुरत गगना पर धाई ।
 भाँक रही दस द्वारे ॥ ५ ॥
 वहाँ से चली अधर पद प्यारी ।
 पहुँची सत दरबारे ॥ ६ ॥
 राधास्वामी चरन सरन पर ।
 मैं छिन छिन बलिहारे ॥ ७ ॥

२-शब्द १६७

सखी री क्या भाग सराहे री ॥ टेक ॥
 चरन कँवल गुरु दीनदयाला ।
 घर मेरे आए री ॥ १ ॥
 दयादृष्टि से मुझको हेरा ।
 मोहि चरन लगाए री ॥ २ ॥
 सतगुरु मेरे परम उदारा ।
 क्या महिमा गाए री ॥ ३ ॥
 सेवा कर दरशन कर उनके ।
 मेरे भाग जगाए री ॥ ४ ॥

सुरत शब्द मारग अति पूरा ।
 मोहि भेद बताए री ॥ ५ ॥
 प्रीति प्रतीति हिये में बाढ़ी ।
 मैं चरन धियाए री ॥ ६ ॥
 सतगुरु आरत करूँ सजाई ।
 अब उमँग उठाए री ॥ ७ ॥
 सुरत का थाल निरत की जोती ।
 मैंने लीन जगाए री ॥ ८ ॥
 भौंति भौंति के सामाँ लाई ।
 गुरु आगे आन धराए री ॥ ९ ॥
 उमँग उमँग कर सन्मुख आई ।
 उन आरत गाए री ॥ १० ॥
 मेहर हुई धुन अनहद जागी ।
 घंट बजाए री ॥ ११ ॥
 गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर पहुँची ।
 गुरु दरशन पाए री ॥ १२ ॥
 सुन्नशिखर चढ़ भँवरगुफा लख ।
 सतपुर बीन बजाए री ॥ १३ ॥
 अलख अगम को निरखत निरखत ।
 राधास्वामी दरशन पाए री ॥ १४ ॥
 राधास्वामी मेहर करी अब भारी ।
 मोहि लिया अपनाए री ॥ १५ ॥

२-शब्द १६८

सखी री क्या महिमा गाऊँ री ॥ टेक ॥

सतगुरु मेरे परम सनेही ।

आए धर औतार ॥ १ ॥

चरन सरन दे भाग बढ़ाये ।

किया जीव उपकार ॥ २ ॥

दया करी मोहि निरमल कीन्हा ।

निज सेवा दर्ई कर प्यार ॥ ३ ॥

बिघन अनेकन दूर कराये ।

करम भरम सब टार ॥ ४ ॥

किरपा कर निज बचन सुनाये ।

प्रीति प्रतीति बढ़ाई सार ॥ ५ ॥

मैं अजान गत मत नहिं जानी ।

भेद दिया निज सार ॥ ६ ॥

ऐसे समरथ राधास्वामी पाए ।

तन मन देती वार ॥ ७ ॥

सुख आनंद कहाँ लग बरनूँ ।

भूल गई संसार ॥ ८ ॥

मेहर करी सुत गगन चढ़ाई ।

पहुँची गुरु दरबार ॥ ९ ॥

मानसरोवर मंजन^१ करके ।
 सत्तलोक गई सुरत सुधार ॥१०॥
 अलख अगम के पार सिधारी^२ ।
 राधास्वामी चरन सँभार ॥११॥
 आरत कर निज भाग जगाऊँ ।
 राधास्वामी प्यारे हुए दयार ॥१२॥

२—शब्द १६६

परम पुरुष राधास्वामी गुरु भारी ।
 चरन पर चार लोक वारी ॥ १ ॥
 सुनत गुरु महिमा उमँगा प्यार ।
 करूँ कस दरशन गुरु दरबार ॥ २ ॥
 चरन में बिनती नित करता ।
 भक्ति और भाव हिये बढ़ता ॥ ३ ॥
 परम गुरु राधास्वामी मेहर करी ।
 चरन में सूरत मोड़ धरी ॥ ४ ॥
 मिला तब अति सुन्दर औसर ।
 चरन में खँचा किरपा कर ॥ ५ ॥
 दरश राधास्वामी जब कीना ।
 सुरत मन हुए चरनन लीना ॥ ६ ॥

करूँ नित आरत चित्त सँभार ।
 चरन में धर धर हित से प्यार ॥ ७ ॥
 भाव की थाली कर धारी ।
 भक्ति की जोत जगी न्यारी ॥ ८ ॥
 उमँग कर आरत राधास्वामी गाय ।
 लिया मैं अपना भाग जगाय ॥ ९ ॥
 काल से नाता तोड़ा भाड़ ।
 हुआ गुरु चरनन मोर अधार ॥ १० ॥
 सरन राधास्वामी धर कर चीत ।
 जाऊँ घर काल करम को जीत ॥ ११ ॥
 रहूँ मैं राधास्वामी के गुन गाय ।
 नाम राधास्वामी नित जपाय ॥ १२ ॥

२-शब्द १७०

आज सतगुरु की सरन भाग से मैंने पाई ।
 शब्द धुन बाज रही चाँदनी घट में छाई ॥ १ ॥
 कर्म और धर्म भरम जान के सब छोड़ दिये ।
 टेक पिछलों की तजी प्रेम गुरु में लाई ॥ २ ॥
 सुन के सतगुरु के बचन पिया अमी रस सारा ।
 बैठ सतसंग में परतीत हिये में आई ॥ ३ ॥
 गुरु से ले शब्द का उपदेश किया अभ्यासा ।
 घंटा और संख सुने जोत लखी नभ जाई ॥ ४ ॥

आगे चढ़ करके सुनी तिरकुटी में धुन मिरदंग ।
 सुन में हंसन से मिली रागनी नइ नइ गाई ॥ ५ ॥
 संग सतगुरु के चली जाय मिली सोहँग से ।
 सतपुरुष मेहर करी बीन की धुन सुनवाई ॥ ६ ॥
 लख अलख आगे अगम लोक का निरखा नूरा ।
 राधास्वामी का दरश पाय चरन में धाई ॥ ७ ॥

२-शब्द १७१

राधास्वामी परम पुरुष दातारे ।
 राधास्वामी पूरन धनी हमारे ॥ १ ॥
 राधास्वामी सतगुरु परम पियारे ।
 राधास्वामी प्रीतम प्रान अधारे ॥ २ ॥
 राधास्वामी चरन हिये में धारे ।
 राधास्वामी सरन पकाय सँभारे ॥ ३ ॥
 राधास्वामी भक्ती साज दिया री ।
 राधास्वामी जीव उबार लिया री ॥ ४ ॥
 राधास्वामी मत क्या करूँ बड़ाई ।
 निज घर सबसे ऊँच दिखाई ॥ ५ ॥
 राधास्वामी सहज जोग बतलाया ।
 सुरत शब्द संजोग कराया ॥ ६ ॥
 राधास्वामी दया हुआ मन निश्चल ।
 राधास्वामी मेहर हुआ चित निर्मल ॥ ७ ॥

राधास्वामी दर्ई घट में परतीत ।

राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीत ॥ ८ ॥

राधास्वामी घट का पाट^१ खुलाय ।

राधास्वामी अंतर बाट^२ लखाय ॥ ९ ॥

राधास्वामी दिये मन सुरत चढ़ाय ।

गगन सिंहासन बैठे जाय ॥ १० ॥

राधास्वामी बल गई सूरत दौड़ ।

पहुँची जाय सतपुर की ओर ॥ ११ ॥

राधास्वामी लीना चरन मिलाय ।

धाम अनामी निरखा जाय ॥ १२ ॥

राधास्वामी दर्ई मेरी सुरत सँवार ।

मेट दर्ई सब जम की कार^३ ॥ १३ ॥

राधास्वामी के रहूँ नित गुन गाय ।

राधास्वामी दिया मेरा काज बनाय ॥ १४ ॥

२—शब्द १७२

सुरतिया बाँह गही ।

सतगुरु की सब बल त्याग ॥ १ ॥

मान बड़ाई जगत बासना ।

तज गुरु चरनन लाग ॥ २ ॥

भेद पाय निज नाम सँभाला ।
 सुमिर सुमिर रही जाग ॥ ३ ॥
 भजन करत निसदिन रस पावत ।
 सुनत रागनी और धुन राग ॥ ४ ॥
 करम धरम से नाता दूटा ।
 छोड़ दई अब माया आग ॥ ५ ॥
 त्रिकुटी होय सुन्न में पहुँची ।
 छूट गई संगत मन काग ॥ ६ ॥
 राधास्वामी चरन सँभारे ।
 जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ ७ ॥

२-शब्द १७३

आज गावो गुरू गुन उमँग जगाय ॥ टेक ॥
 दया धार धुर घर के बासी ।
 नरदेही में प्रगटे आय ॥ १ ॥
 निज घर का मोहि पता बताया ।
 मारग का दिया भेद लखाय ॥ २ ॥
 भिन्न भिन्न निरनय मंजिल का ।
 मेहर से दीना खोल सुनाय ॥ ३ ॥
 अपनी दया का दीन सहारा ।
 मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ४ ॥

करम भरम की फाँसी काटी ।
 काल करम से लिया बचाय ॥ ५ ॥
 प्रीति प्रतीति बढ़ा कर हिये में ।
 दीना घर की ओर चलाय ॥ ६ ॥
 जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से ।
 सो रहे माया सँग लिपटाय ॥ ७ ॥
 जनम जनम वे दुख सुख भोगें ।
 भरमें चार खान में जाय ॥ ८ ॥
 दया मेहर का कस गुन गाऊँ ।
 जस सतगुरु ने करी बनाय ॥ ९ ॥
 किरपा कर मोहि आपहि खींचा ।
 और चरनन में लिया लगाय ॥ १० ॥
 जो अस मेहर न करते मुझ पर ।
 काल जाल में रहत फँसाय ॥ ११ ॥
 मैं बलहीन करूँ क्या महिमा ।
 राधास्वामी मेहर से लिया अपनाय ॥ १२ ॥

२-शब्द १७४

आज गुरु आये जग तारन । अहा हा हा ओहो हो हो ॥
 रूप उन धारा मनभावन । अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
 लगे जो जीव चरनन से । छुटे वह कर्म भरमन से ॥
 गही सब शब्द की धारन । अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥

किया सतसंग उन चित से । गही सतगुरु सरन हित से ॥
 मेहर से हो गये पावन^१ । अहा हा हा ओहो हो हो ॥३॥
 किया राधास्वामी उन अपना । दूर किया जगत में खपना ॥
 दर्ई निज चरन में ठाऊँ । अहा हा हा ओहो हो हो ॥४॥
 गाऊँ क्या महिमा राधास्वामी । कोई उन गत नहीं जानी ॥
 दया का वार नहिं पारन । अहा हा हा ओहो हो हो ॥५॥

२—शब्द १७५

दरस गुरु भाग से मिलिया । ओहो हो हो अहा हा हा ॥
 दया से संग में रलिया^२ । ओहो हो हो अहा हा हा ॥१॥
 दीन होय मेहर गुरु पाई । ओहो हो हो अहा हा हा ॥
 शब्द का भेद दरसाई । ओहो हो हो अहा हा हा ॥२॥
 नाम का रंग घट लागा । ओहो हो हो अहा हा हा ॥
 प्रेम हिये में नया जागा । ओहो हो हो अहा हा हा ॥३॥
 रूप गुरु लागा अति प्यारा । ओहो हो हो अहा हा हा ॥
 सुना घट शब्द भनकारा । ओहो हो हो अहा हा हा ॥४॥
 दया राधास्वामी क्या गाऊँ । ओहो हो हो अहा हा हा ॥
 चरन पर नित्त बल जाऊँ । ओहो हो हो अहा हा हा ॥५॥

२-शब्द १७६

दया गुरु क्या करूँ बरनन् ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
 लगाया मोहि निज चरनन् ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
 दिखाया घट में एक गुलशन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
 सुनी जहाँ शब्द धुन घन घन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
 वहाँ से आगे पग धारन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
 करत रही सुर्त गुरु दर्शन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
 चरन पर वार रही तन मन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
 खेलती सुन में सँग हंसन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥
 भँवर होय सत्तपुर धावन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ९ ॥
 परस राधास्वामी हुई पावन ।
 अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १० ॥

२-शब्द १७७

गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ गाय ॥ टेक ॥

नित नई लीला बिमल बिलासा ।

देख देख मन अति हरखाय ॥ १ ॥

जग कारज की सुध बिसरानी ।

रैन दिवस आनंद बरखाय ॥ २ ॥

दरशन शोभा कस कहूँ गाई ।

मन और सूरत रहे लुभाय ॥ ३ ॥

जान और प्रान वार देऊँ गुरु पर ।

जस मोपै मेहर उन करी बनाय ॥ ४ ॥

कुमत हटाय सुमत अब दीन्ही ।

मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ५ ॥

माया के सब बिघन निकारे ।

काल करम भी दूर पराय ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन अधार जिऊँ मैं ।

राधास्वामी रूप रहूँ नित ध्याय ॥ ७ ॥

२-शब्द १७८

गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार ॥ टेक ॥

जीवन को अति दुखी देख कर ।

उमँगी दया जाका वार न पार ॥ १ ॥

नर सरूप धर जग में आये ।
 भेद सुनाया घर का सार ॥ २ ॥
 दीन होय जो चरनन लागे ।
 उन जीवन को लिया सँभार ॥ ३ ॥
 बाक्री जीव जंतु^१ पर जग में ।
 मेहर दृष्टि करी गुरू दयार ॥ ४ ॥
 जस तस उनका काज बनाया ।
 अपनी दया से किरपा धार ॥ ५ ॥
 कोई जीव खाली नहीं छोड़ा ।
 सब पर मेहर की दृष्टी डार ॥ ६ ॥
 कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
 जीव जंतु सब लीन्हे तार ॥ ७ ॥
 कौन सके उन महिमा गाई ।
 शेष महेश रहे सब हार ॥ ८ ॥
 दोउ कर जोर करूँ मैं बिनती ।
 शुकर करूँ मैं बारम्बार ॥ ९ ॥
 राधास्वामी सम समरथ नहीं कोई ।
 राधास्वामी करें अस दया अपार ॥ १० ॥
 मैं बालक उन सरन अधीना ।
 चरन लगाया मोहि कर प्यार ॥ ११ ॥

२—शब्द १७६

सतगुरु प्यारे ने मेहर से ।
 दिया भक्ती दाना हो ॥ टेक ॥
 सुरत अजान जगत में बहती ।
 करम भरम सँग दुख सुख सहती ॥
 मिला न ठौर ठिकाना हो ॥ १ ॥
 तीरथ बर्त नेम^१ आचारा^२ ।
 बाचक ज्ञान बिबेक सँभारा ॥
 निज घर भेद न जाना हो ॥ २ ॥
 संत दयाल मिले मोहि जब ही ।
 घर का भेद दिया उन तब ही ॥
 भजन भक्ति और ध्याना हो ॥ ३ ॥
 बचन सुना परतीत बढ़ाई ।
 घट परचे^३ दे प्रीति जगाई ॥
 हिये में उमँग समाना हो ॥ ४ ॥
 मन और सुरत लगे घट धुन में ।
 गुरु मारग रहे चलत अपन^४ में ॥
 राधास्वामी धाम निशाना हो ॥ ५ ॥

१—नियम इत्यादि । २—धार्मिक क्रियाएँ ।

३—परिचय, तजरुबे । ४—अंतर ।

२-शब्द १८०

सतगुरु प्यारे ने सुनाई ।
 जुगत निराली हो ॥ टेक ॥
 सुन गुरु बचन हुई परतीती ।
 गुरु ने सिखाई भक्ती रीती ॥
 लीना मोहि सँभाली हो ॥ १ ॥
 सतसँग करत भाव बढ़ा दिन दिन ।
 प्रीति लगी अब राधास्वामी चरनन ॥
 खुल गया भेद दयाली हो ॥ २ ॥
 उमँग उठी सेवा की भारी ।
 तन मन धन गुरु चरनन वारी^१ ॥
 हो गई आज निहाली हो ॥ ३ ॥
 शब्द भेद गुरु दीन जनाई ।
 धुन सँग सूरत उमँग लगाई ॥
 निरखा रूप जमाली^२ हो ॥ ४ ॥
 मन इच्छा गुरु दीन सुलाई ।
 काल करम बल सबहि नसाई^३ ॥
 बिघन बिकार निकाली हो ॥ ५ ॥
 मेहर से दिया गुरु खेत जिताई ।
 सरन धार गुरु चरन समाई ॥
 मिट गई खामखयाली^४ हो ॥ ६ ॥

सतगुरु सुरत सिंगार कराया ।
 राधास्वामी प्यार से गोद बिठाया ॥
 नित घट होत दिवाली हो ॥ ७ ॥
 दरशन कर मेरी गत हुई कैसी ।
 मीन मगन होय जल में जैसी ॥
 दूर हुए दुख साली हो ॥ ८ ॥
 प्यारे राधास्वामी गुन कस गह गावा ।
 संत रूप धर काज बनावा ॥
 अटल जोत घट बाली^१ हो ॥ ९ ॥
 आओ रे आओ जिव सरनी आओ ।
 राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ ॥
 छूटे सबहि बेहाली हो ॥ १० ॥
 मेहर करें राधास्वामी गुरु प्यारे ।
 छिन छिन तुमको लेहि उबारे ॥
 गति पावो आज मराली^२ हो ॥ ११ ॥

२—शब्द १८१

मेरे हिये में बजत बधाई ।
 संत सँग पाया रे ॥ १ ॥
 ढूँढ़ फिरी जग में बहुतेरा ।
 भेद कहीं नहिं पाया रे ॥ २ ॥

संत मता अति ऊँचा गहिरा ।

बेद कतेब न जाना रे ॥ ३ ॥

बड़भागी कोइ बिरले प्रेमी ।

तिनको मरम जनायारे ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से जीव उबारें ।

उन महिमा अगम अपारा रे । ५ ।

२-शब्द १८२

मेरे घूम भई अति भारी ।

दरस राधास्वामी कीन्हा रे ॥ १ ॥

भाग जगे मेरे धुर के सजनी ।

आज रूप रस लीन्हा रे ॥ २ ॥

कौन कहे महिमा अब उनकी ।

जिन प्रेम दान गुरु दीन्हा रे ॥ ३ ॥

सुखी भया अब तन मन सारा ।

हुई गुरु चरन अधीना रे ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन रही लिपटानी ।

अमृत हर दम पीना रे ॥ ५ ॥

२-शब्द १८३

राधास्वामी दीनदयाला, मेरे सद किरपाला,
मोहि कीन निहाला रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ १ ॥

राधास्वामी परम उदारा, मेरे अति दातारा,
मोहि लीन उबारा रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ २ ॥

राधास्वामी प्रान पियारे, मेरी आँखों के तारे,
मेरे जग उजियारे रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ३ ॥

राधास्वामी लीन सुधारा, मेरे मन को सँवारा,
मेरा किया उपकारा रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ४ ॥

राधास्वामी शब्द जनाई, मेरी सुरत चढ़ाई,
मोहि चरन लगाई रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ५ ॥

२-शब्द १८४

राधास्वामी संग लगाई, मोहि बचन सुनाई,
हिये प्रीति बढ़ाई रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ १ ॥

राधास्वामी सेवा धारी, उन नैन निहारी,
हिये भई उजियारी रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ २ ॥

राधास्वामी भेद बताया, घट शब्द सुनाया,
सोता मनुआँ जगाया रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ३ ॥

मन उमँगत चाला, घट देख उजाला,
लखा रूप दयाला रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ४ ॥

त्रिकुटी^१ धन गाजा^२, सुन सारँग बाजा,
मुरली धुन साजा रे ।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
प्यारे राधास्वामी रे ॥ ५ ॥

सतपुर माहिं धावत, धुन बीन सुनावत,
 करी सतगुरु आरत रे ।
 राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
 प्यारे राधास्वामी रे ॥ ६ ॥
 लख अलख सरूपा, मिल अगम कुल भूपा,
 गई धुर धाम अनूपा रे ।
 राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
 प्यारे राधास्वामी रे ॥ ७ ॥
 राधास्वामी रूप निहारा, हुआ आनंद भारा,
 सब काज सँवारा रे ।
 राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी,
 प्यारे राधास्वामी रे ॥ ८ ॥

२—शब्द १८५

दरस पाय मन बिगस रहा ।
 गुरु लागे प्यारे री ॥ १ ॥
 बार बार छवि पर बलि जाऊँ ।
 चरन सीस पर धारे री ॥ २ ॥
 कौन बस्तु गुरु आगे राखूँ ।
 तन मन धन सब वारे री ॥ ३ ॥
 क्या मुख ले मैं महिमा गाऊँ ।
 उन गत मत अगम अपारे री ॥ ४ ॥

जीव पड़े चौरासी भोगें ।

गुरु बिन कौन उबारे री ॥ ५ ॥

मेरा भाग जगा किरपा से ।

मोहि जग से कीन्ह नियारे री ॥ ६ ॥

राधास्वामी मेहर से जुगत बताई ।

धुन सुन गई दसवें द्वारे री ॥ ७ ॥

२—शब्द १८६

आज हुआ मन मगन मोर । सुन सुन गुरु बतियाँ ॥ टेक ॥
 राधास्वामी महिमा अपार । सुरत शब्द जुगत सार ॥
 करम धरम दिये निकार । गुरु चरन न रतियाँ^१ ॥ १ ॥
 गुरु स्वरूप लाय ध्यान । धुन में सुत धरी तान ॥
 मन के दिये तोड़ मान^२ । काल जाल कटियाँ ॥ २ ॥
 मन और सुरत अधर धाय । नभ द्वारा दिया तोड़ जाय ॥
 जोत रूप रहा जगमगाय । बंकनाल धसियाँ ॥ ३ ॥
 त्रिकुटी मिरदँग बजाय । सारँग सँग रही गाय ॥
 मुरली धुन गुफा सुनाय । सत्त रूप लखियाँ ॥ ४ ॥
 राधास्वामी सतगुरु दयाल । कीन्हा मोहि अब निहाल ॥
 अलख अगम के पार चाल । चरन अंबु^३ छकियाँ^४ ॥ ५ ॥

२—शब्द १८७

बिरहन सुत तजत भोग । गुरु चरनन रतियाँ ॥ टेक ॥
 सतसँग कर सुत उठी जाग । जगत किरत^१ फीकी लाग ॥
 परमारथ का मिला भाग । धारा सत मतियाँ^२ ॥ १ ॥
 मन चित से हुई दीन । गुरु सँग प्रेम भाव कीन ॥
 सुरत शब्द जोग लीन । सुनती गुरु बतियाँ ॥ २ ॥
 सुन सुन धुन मगन होत । घट में प्रगटी अलख जोत ॥
 अमृत का खुला सोत । पी पी तिरपतियाँ^३ ॥ ३ ॥
 धुमड़ धुमड़ गरजत गगन । मन माया होवत दमन ॥
 सूर चाँद तारा खिलन । निरखत हरखतियाँ ॥ ४ ॥
 सुन में सुत हुई सार । महासुन मैदाँ निहार ॥
 मुरली धुन गुफा सँभार । लखसत्तपुरुष गतियाँ ॥ ५ ॥
 अलख अगम के पार देख । राधास्वामी पद अलेख^४ ॥
 जहँ नहिं रूप रंग रेख । धुर पद परसतियाँ ॥ ६ ॥

२—शब्द १८८

प्रेमी जन बिकल मन । गुरु दरशन चाहत ॥ टेक ॥
 सुन सुन सतसँग विलास । चित में रहे नित उदास ॥
 माँगत गुरु सँग निवास । बार बार धावत ॥ १ ॥
 दरशन पाय मगन होत । आनँद का मानो खुला सोत ॥
 कल मल के सब दाग धोत । प्रेम प्रीति लावत ॥ २ ॥
 तन मन धन गुरु पै वार । भोग बासना तजत भाड़ ॥
 शब्द भेद ले अपार । गुरु गुन नित गावत ॥ ३ ॥

घट में दरशन सार पाय । शब्द शोर सुनत जाय ॥
 गुरु सतगुरु पद परस^१ धाय । मन में हरखावत ॥ ४ ॥
 चढ़ चढ़ सुत हुई सार । आगे को कदम धार ॥
 राधास्वामी पद शोभा अपार । निरख निरख मुसक्यावत ॥ ५ ॥

२—शब्द १८६

खोजी जन सरस^२ मन । सुन सुन गुरु बचना ॥ टेक ॥
 कुल मालिक की खबर पाय । मारग का सब भेद गाय ॥
 सहज जुगत दई जनाय । घट धुन में रचना^३ ॥ १ ॥
 घट घट में सुरत सार । शब्द ही सच्चा करतार ॥
 दोऊ मिल उलट चढ़ें पार । धुर पद जाय लखना^४ ॥ २ ॥
 सतसँग के बचन धार । गुरु चरनन में लाय प्यार ॥
 राधास्वामी सरन सँभार । जग से छिन छिन हटना ॥ ३ ॥
 गुरु स्वरूप ध्यान लाय । मन और सुरत अधर धाय ॥
 शब्द शोर घट में सुनाय । सहज सहज चलना ॥ ४ ॥
 सतगुरु मोहि कीना निहाल । काल करम का काटा जाल ॥
 राधास्वामी पद पूरन दयाल । चढ़ चढ़ जाय मिलना ॥ ५ ॥

२—शब्द १६०

दया के सिंध सतगुरु ।

जीवन के हितकारी हो ॥ टेक ॥

चरनन में लगाय मोको ।
 दीन्ही भक्ति करारी हो ॥ १ ॥
 ओट गही मैं उनकी अबके ।
 सहज मिला पद चारी हो ॥ २ ॥
 मन इन्द्री बहु बिघन लगाते ।
 देते दुख मोहि भारी हो ॥ ३ ॥
 सतगुरु दया प्रबल जब कीन्ही ।
 मन माया दोउ हारी हो ॥ ४ ॥
 गहरी प्रीति बसी जब हिये में ।
 भोग लगे सब खारी हो ॥ ५ ॥
 सतगुरु रूप निरखती चाली ।
 शब्द में लागी ताड़ी हो ॥ ६ ॥
 धुन घंटा और संख सुनाई ।
 निरखी जोत उजारी हो ॥ ७ ॥
 गुरु पद जाय लखा त्रिकुटी में ।
 फिर अक्षर धुन धारी हो ॥ ८ ॥
 भँवरगुफा मुरली धुन पाई ।
 सतपुर बीन सँभारी हो ॥ ९ ॥
 अलख अगम के पार चढ़ा के ।
 हुई अब सबसे न्यारी हो ॥ १० ॥
 राधास्वामी दरशन पाये ।
 हुई उन चरनन प्यारी हो ॥ ११ ॥

२-शब्द १६१

गगन में बाजत आज बधाई ॥ टेक ॥

कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।

संत रूप धर आये ॥

जगत में भक्ती रीत चलाई ॥ १ ॥

निज घर का स्वामी भेद सुनाया ।

सुरत शब्द मारग समझाया ॥

जिन माना नित चरन लगाई ॥ २ ॥

प्रेम बढ़ा करनी करवाई ।

करनी कर बहु मेहर बढ़ाई ॥

काल कारम से खूँट छुड़ाई ॥ ३ ॥

चरन सरन दे लिया अपनाई ।

प्रीति प्रतीति जिव हृदे बसाई ॥

शब्द संग सुत अधर चढ़ाई ॥ ४ ॥

गगन माहिं गुरु पद दरसाया ।

सतपुर सतगुरु रूप लखाया ॥

राधास्वामी धाम दिया पहुँचाई ॥ ५ ॥

पुस्तकों का सूचीपत्र

ये पुस्तकें मैनेजर पब्लीकेशन्स, दयलाबाग (आगरा) से मिल सकती हैं

नाम		मूल्य
परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
१ सारबचन (पद्य)	हिन्दी	७.००
२ सारबचन (गद्य)	"	३.००
परम गुरु हुजूर महाराज रचित		
३ राधास्वामी मत प्रकाश	अंगरेजी	१.५०
४ पिलग्रिम्स पाथ (हुजूर महाराज के पत्र)	"	१.५०
५ राधास्वामी मत संदेश	हिन्दी	१.००
६ राधास्वामी मत उपदेश	"	१.००
७ निज उपदेश	"	१.००
८ प्रेम उपदेश	"	१.००
९ सार उपदेश	"	१.२५
१० प्रश्नोत्तर	"	१.००
११ जुगत प्रकाश	"	२.००
१२ प्रेमबानी भाग १	"	५.००
१३ " भाग २	"	४.२५
१४ " भाग ३	हिन्दी	४.२५
१५ " भाग ४	"	२.५०
१६ प्रेमपत्र भाग १	"	४.००
१७ " भाग २	"	४.००
परम गुरु सरकार साहब रचित		
१८ प्रेम-समाचार	"	१.२५
राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में अनुवादित पुस्तकें		
१९ राधास्वामी मत प्रकाश	बंगला	१.२५
२० अमृतबचन	"	३.००
(परम गुरु महाराज साहब रचित पुस्तक 'डिस्कोर्सेज आन राधास्वामी फ़ेथ' का अनुवाद)		
परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
२१ सारबचन	अंगरेजी	३.२५

नाम	मूल्य
परम गुरु हुजूर महाराज रचित	
२२ प्रेम पत्र भाग १	अंगरेजी ६.००
२३ " भाग २	" ६.००
२४ " भाग ३	" ६.००
२५ " भाग ४	" ६.००
२६ " भाग ५	" ६.००
२७ " भाग ६	" ३.००
२८ राधास्वामी मत उपदेश	" १.००
२९ राधास्वामी मत संदेश	" १.००
हुजूर साहबजी महाराज रचित	
३० यथार्थ प्रकाश भाग १ (विशेष संस्करण)	" ६.००
३१ " (साधारण संस्करण)	" ३.५०
३२ " भाग २	" ५.५०
३३ " भाग ३ (प्रथम पुस्तक)	" ५.५०
३४ " (द्वितीय पुस्तक)	" ४.००
३५ जिज्ञासा	" १.००
३६ राधास्वामी मत दर्शन	" १.००
३७ प्रेम संदेश	" १.००
३८ डिस्कोर्सेज भाग १ (सतसंग के उपदेश)	" ४.००
३९ " भाग २	" ४.००
४० " भाग ३	" ३.५०
४१ जतन प्रकाश	" १.००
४२ सिलैक्शन्स फ्रॉम प्रेम सन्देश	" १.००

राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में सम्पादित या लिखित पुस्तकें

४३ फोर लैटर्स (हुजूर सरकार साहब)	" १.००
४४ सिलवरी स्पीचेज	" ०.२५
४५ शब्द संग्रह भाग १	हिन्दी ३.५०
४६ " " भाग २	" ३.५०
४७ संत बानी संग्रह भाग १	" १.००
४८ संत बानी संग्रह भाग २	हिन्दी १.२५
४९ रत्नावली	" १.००
५० दयालबारा पैम्फलेट (छोटा)	अंगरेजी ०.५०

